ISSN 2455-9644

आसरा मुक्तांगन

अप्रैल–मई–2024

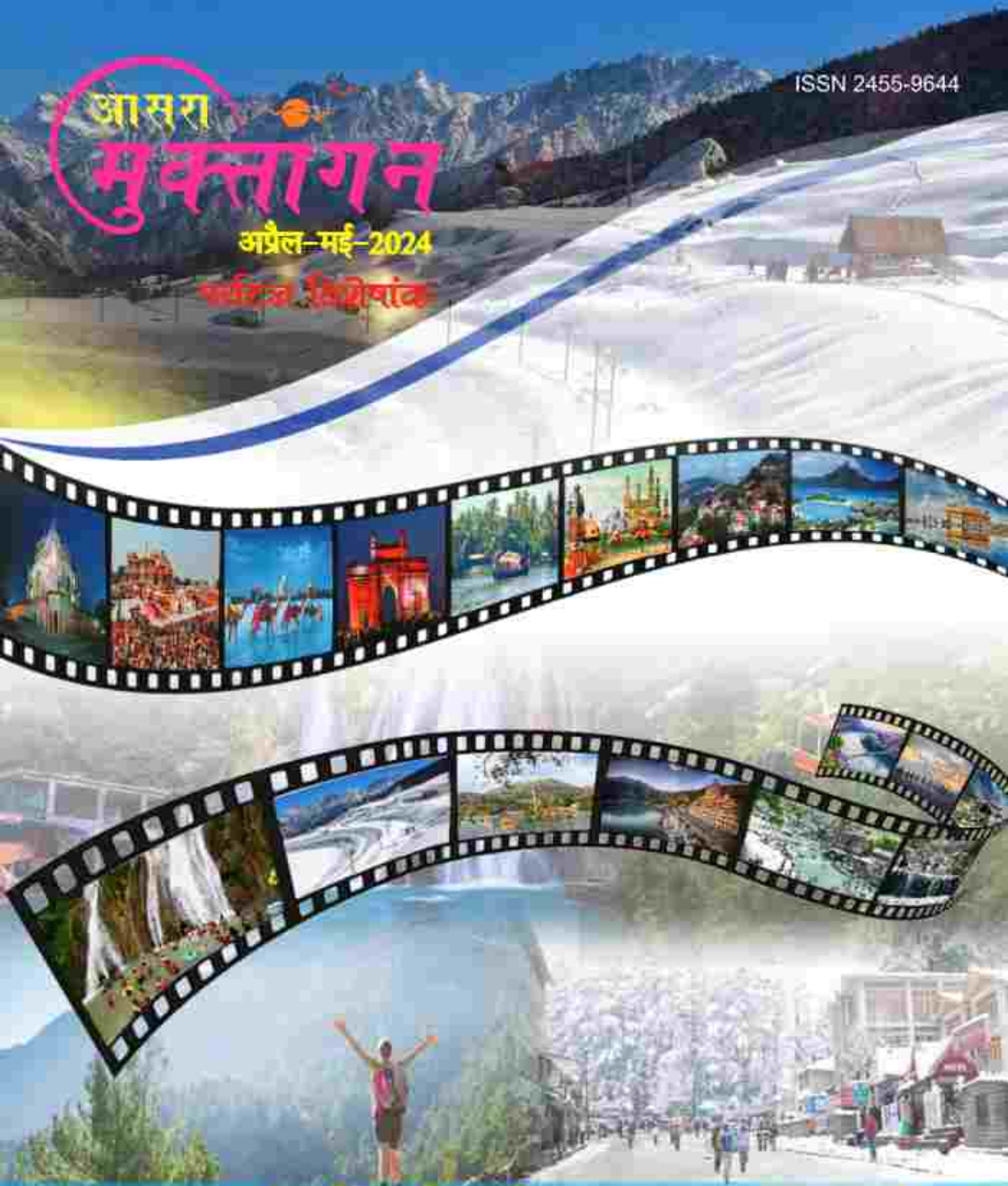

₹ 30

समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, अनुसंधान

हैदराबाद में संपन्न हुई वैश्विक आध्यात्मिकता परिषद

भारत के केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय

एवं

श्री रामचन्द्र मिशन के हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट तथा अन्य 300 आध्यात्मिक संगठनों के सहयोग से

वैश्विक आध्यात्मिक महोत्सव का कान्हा शांति वनम् में आयोजन

विस्तृत रपट- पृष्ठ-45

"You can also follow us on Facebook, Twitter and YouTube "Aasara Muktangan"

आसरा
मुक्तांगन
www.aasaramuktangan.com

अप्रैल-मई-2024 वर्ष : 12, अंक : 4-5

इस अंक में

डॉ. सुलभा कोरे- संपादकीय	5
रतन जगन्नाथ गिरि- पर्यटन : व्यक्तित्व विकास की पाठशाला	7
प्रीति शास्त्री- मॉलों वाली दिल्ली	9
डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय- उत्तराखंड में पर्यटन की संभावनाएँ...	10
डॉ. रमेश मिलन- मेरी रेलयात्रा	15
प्रथम आलोक भट्टाचार्य साहित्य सम्मान	19
डॉ. रमेश यादव- लोकग्राम से आनंदवन	20
डॉ. रेखा जैन- भागदौड़ भरी जिंदगी में पर्यटन से सुकून	24
हृषिकेश शरण- किसका जीवन श्रेष्ठ है?	26
पुष्पेश कुमार पुष्प- झंझावतों से जूझती वह लड़की	26
गोवर्धन दास बिन्नाणी- सबका रखते ध्यान प्रभु श्रीरामजी	29
संजय भारद्वाज- या घट अंतर बाग-बगीचे	33
आभा दवे- नन्हे दीपक	35
गौरीशंकर वैश्य विनम्र- नवसंवत्सर	35
केशव शरण- नाटक	35
सोनल मंजू श्री ओमर- कमाल करते हैं	35
टीकेश्वर सिन्हा- मुझे अच्छा नहीं लगा	37
राम विलास शास्त्री- कुर्बानी	37
एकता के सूत्र में पिरोता- मानव एकता दिवस	37
राहुल तिवारी जी के साथ साक्षात्कार	38
वैश्विक अध्यात्मिकता महोत्सव	45

'आसरा मुक्तांगन'
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के अपने विचार हैं। संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संपादक

प्रकाशक-मुद्रक
महानंद शिरकर

प्रधान संपादक
डॉ. रमेश मिलन

संपादक
डॉ. विमलेश शिरकर

आर्ट संपादक
मोहन शिरकर

कार्यकारी संपादक
पवित्रा सावंत

उप-संपादक
डॉ. रमेश यादव, मुसाफिर

अतिथि-संपादक
डॉ. सुलभा कोरे

संपादकीय मंडल
- डॉ. सुलभा कोरे
- डॉ. सतीश यादव
- प्रो. कुसुम त्रिपाठी
- श्री स. वि. सावंत
- श्री संजय भारद्वाज
- श्री बालकृष्ण लोखंडे

सलाहकार मंडल
- ज्ञानेश्वर जिरेवे
- डॉ. चंद्रशेखर भारतीय
- सतीश आहूजा (कन्नड)
- भाग्यश्री अंभोरे
- जानकी प्रसाद, दिल्ली

समन्वयक एवं प्रवक्ता
- डॉ. प्रभाकर मं. भोरे

जनसंपर्क एवं विशेष आयोजन
- बालकृष्ण जाधव
- विजय नेरकर
- गजानन कोंडेकर
- विवेक सिंह

विधि सलाहकार
- ऍड. रमेश शाह

विशेष प्रतिनिधि
- डॉ. जयप्रकाश कुमार, चेन्नई
- आशीष कुमार, मुंबई

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : 8920115592, 901077754

अकादमिक मंडल

न्यायमूर्ति अनंत डी. माने
उच्च न्यायालय, मुंबई (सेवानिवृत्त)

श्री ऋषिकेश शरण
प्रशासक

डॉ. नरेशचंद्र
प्रतिकुलपति, मुंबई वि.वि. (सेवानिवृत्त)

डॉ. माधुरी छेड़ा
शिक्षाविद

साहित्य मंडल

डॉ. सूर्यबाला
साहित्यकार

डॉ. दामोदर खड़से
साहित्यकार

डॉ. रामजी तिवारी
शिक्षाविद, आलोचक

डॉ. दामोदर मोरे
मराठी कवि

सहयोग

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

धनंजय शिंदे

सुनील पाटील

शबाना शेख

'आसरा मुक्तांगन' का अभियान 'वृक्ष लगाएं, बढ़ाएं'

वर्तमान में तापमान हर जगह बढ़ रहा है। पसीना, गर्मी और उससे उत्पन्न तकलीफें...मानव झुलस रहा है, जमीन तप रही है, उसमें दरारें पड़ रही हैं, पशु-पक्षी आदि सभी जीव गर्मी में झुलस कर मर रहे हैं और पेड़-पौधे भी पानी के अभाव में सूख रहे हैं।

यह है 'ग्लोबल वार्मिंग' का परिवेश, जो हम सबको एक ऐसे मंज़िल की ओर ले जा रहा है, जहां हमारे विरुद्ध हमारी भविष्यगत पीढ़ी को बहुत कुछ भुगतना पड़ेगा। हमने घर, रास्ते बनाए, हमने अपने लिए संरचनात्मक सुविधाएं जुटाई और इन सब बातों को अंजाम देने के लिए हम वृक्षों को काटते गए।

वृक्ष इस पृथ्वी का श्रृंगार, हमारा धनागार या भूमि के अंदर जाकर अपनी जड़ों से पानी को संवर्धित करता है और ज़मीन से ऊपर बढ़कर बादलों को आसमान से नीचे उतरवाकर बरसात करवाता है। वृक्ष हमें छांव देकर कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कम करते हुए ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाता है।

वृक्ष का महत्व, पर्यावरण में उसकी उपयुक्तता असाधारण है, जिसे हमें जानना, पहचानना और समझना होगा। अन्यथा हम स्वयं भी झुलसते रहेंगे और हमारी भविष्यगत पीढ़ी को इससे भी ज्यादा झुलसाते रहेंगे।

पर्यावरण के संवर्धन को 'आसरा मुक्तांगन' ने अपना जीवन उद्देश्य बनाया है। हर परिवार दो-तीन वृक्ष लगाएं, उनका संवर्धन करें इसलिए 'आसरा मुक्तांगन' से संबंधित सभी संस्थाओं, सदस्यों, समर्थनकर्ताओं, संरक्षकों तथा भारत के सभी परिवारों से अनुरोध है, अपील है कि वे 'वृक्ष संवर्धन अभियान' के बारे में अपने क्रियाकलापों, गतिविधियों से संबंधित फोटो- जानकारी के साथ नीचे दिए गए पते पर 'आसरा मुक्तांगन' हेतु प्रेषित करें। आपके प्रयासों को उचित स्थान और प्रोत्साहन देना, हमारा काम होगा...

'आसरा मुक्तांगन' के संदर्भ में

'आसरा मुक्तांगन' राष्ट्रभाषा हिंदी तथा राष्ट्र को समर्पित एक साहित्यिक मासिक पत्रिका है। समाज, संस्कृति, साहित्य, शिक्षा, कला, अध्यात्म, स्वास्थ्य और अनुसंधान को दृष्टिगत रखते हुए एक सशक्त राष्ट्र की नींव को परिपुष्ट करना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। नवयुवकों, नारी तथा बुजुर्गों में जागृति का संचार करना तथा देश में घर-घर तक साहित्य और संस्कृति के उच्चतम संस्कारों को पुष्पित एवं पल्लवित करने के लक्ष्य पूर्ति हेतु, पत्रिका सतत प्रयत्नशील है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओतप्रोत पत्रिका का प्रकाशन एवं संपादक मंडल का एक शाश्वत अभियान है।

–प्रकाशक

संपादकीय- डॉ. सुलभा कोरे

पर्यटन

'पर्यटन' यह शब्द सुनते ही सभी के चेहरों पर एक प्यारी-सी मुस्कान तैर जाती है। 'परित: अटति' इति पर्यटन अर्थात पर्यटन, देशाटन तथा तीर्थाटन है। मसलन जो यात्रा आनंद और मनोरंजन के उद्देश्यों के तहत की जाती है, उसे पर्यटन कहते हैं। वैसे देखा जाए तो पर्यटन और यात्रा में भी काफी अंतर है लेकिन यहां हमें न तो शब्दों की गहराई नापनी है और ना ही शब्दों के अर्थों में उलझना है। हमें सिर्फ आनंद लेना है, जो हमें विभिन्न स्थानों के पर्यटन से प्राप्त होता है।

'पर्यटन' के आधुनिक अवधारणा की उत्पत्ति 17वीं शताब्दी में हुई। उस वक्त नई जमीन की खोज हो (कोलंबस द्वारा किया जाने वाला पर्यटन) या फिर हम जैसे साधारण इंसान द्वारा आनंद पाने हेतु, की गयी यात्रा हो, दोनों बातें 'पर्यटन' के तहत ही गिनी जाती थी, योरोपीय देशों में पर्यटन की परंपरा 12वीं शताब्दी से चली आ रही थी। भारत में यह संकल्पना वैसे देरी से ही आयीं लेकिन उस संकल्पना का श्रेय भारतीय पर्यटन के जनक श्री राय बहादुर मोहन सिंह ओबेरॉय को जाता है, पर्यटन के क्षेत्र को उनके द्वारा दिया गया योगदान अद्वितीय कहा जाए तो गलत नहीं होगा। 19वीं सदी में 'थॉमस कुक एंड संस द्वारा पर्यटन को फिर एक नयी दिशा दी गयी, एक सुनियो- जित स्वरूप दिया गया और फिर भारत में भी पर्यटन के नये-नये आयाम खुलने लगे।

यदि मुझे पूछा जाए कि आपके लिए पर्यटन क्या है? तब मेरा जवाब यही होगा कि नये-नये लोगों, स्थानों, परिवेशों को जानना, पहचानना और अपनाना।' घुमक्कड़ी मेरा पसंदीदा शौक है और इस शौक के तहत तकरीबन पूरा भारत मैंने घूम लिया है लेकिन अब भी लगता है, कुछ छूट गया है, अब भी कुछ देखना, महसूस करना शेष रह गया है। इसलिए जब भी मौका मिलता है जब भी दिल करता है या कभी-कभी मौका भी ढूंढ ही लेती हूं और घूमने के लिए निकल जाती हूं।

मेरे लिए शिक्षा के साथ-साथ शिक्षित होने का आदर्श तरीका है- पर्यटन। पर्यटन के साथ जहां-जहां आप जाते हो, वहां के इतिहास, कला और सांस्कृतिक विरासत को आत्मसात करना ही सही मायने में शिक्षित होना है। भारत जैसे बहुभाषी बहुसांस्कृतिक, बहुपारिवेशिक देश है यहां हर शहर गांव के साथ भाषा, लोग, संस्कृति, पोशाकें, खानपान आचरण बदलता रहता है। ऐसा कहा जाता और यह सच भी है इसलिए भारत में पर्यटन के मायने भी बदलते हैं। कहते हैं विश्व में 63 प्लस प्रकार के पर्यटन भारत में है और ये सभी प्रकार के पर्यटन भारत में है और ये सभी प्रकार के पर्यटन भारत में आपको अनुभव करने हेतु मिल जाएंगे, इस बात का मुझे विश्वास है। हालांकि यह मेरा दावा नहीं है लेकिन निश्चित रूप से यह मेरा ठोस विश्वास है।

पर्यटन का आनंद प्राप्त करने हम देशभर में घूमते ही है लेकिन विदेशों में भी वहां की विशिष्टता अलग-थलगता या प्रेक्षणीय स्थलों का अनुभव करने हेतु भी जाते हैं। कुछ लोग तो ऐसे ही होते हैं कि उनके लिए विदेशी पर्यटन आम हो जाता है या फिर स्टेटस सिंबल भी बन जाता है (भले ही उन्होंने अपने गांव या शहर को पूरी तरह से देखा, महसूस

किया नहीं हो) लेकिन क्या सचमुच पर्यटन यहां तक और इतना ही सीमित है? जो भी देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मक योगदान देने वाला पर्यटन सहज 'पर्यटन' कैसे रह पाएगा? भारत जैसे विकासशील और विश्व में अपनी अलग पहचान सांचित करने हेतु प्रयासरत देश के लिए 'पर्यटन' बहुत कुछ लेकर सामने आता है। विभिन्न भाषाओं, भूप्रदेशों, लोगों तथा विविधताओं को साथ लेकर चलने वाला यह देश अपनी सांस्कृतिक विरासत के साथ आगे बढ़ते हुए विविधता और विभिन्नता के एक रेशे को, साथ लेकर चलना है। यहां कश्मीर की खूबसूरत वादियां है, हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियां और कंदराएं है, यहां समुंदर की उफनती लहरें है, सहारा की तपती रेत है तो सिंह, भालू, बाघों से अटे जंगल है यहां गढ़, किले है तो पौराणिक, ऐतिहासिक आश्चर्य भी है, जहां साहस है, धर्म है, कला है, सादगी है, तकनीक है, संपन्न और समृद्ध अतीत है जबकि ठोस वर्तमान, तकनीकी से भरपूर भविष्य है। यहां प्रकृति निर्मित झरनें, पर्वत श्रृंखलाएं, समुद्र, समुद्र तट, मनभावन मौसम, बर्फ, बर्फ से ढंकी पहाड़ियां, वादियां, पेड़, पौधे, जंगली जानवर, पंक्षी है और मानवनिर्मित ऐतिहासिक, भौगोलिक, पौराणिक वैज्ञानिक संरचनाएं निर्माण भी है। इसलिए भारत सबका पसंदीदा पर्यटन स्थल था और आज भी है, यह पर्यटन हमें क्या देता है? या पर्यटन की आवश्यकता क्यों है? यह सवाल उठना भी जायज है, भारत में पर्यटन की शुरुआत सही मायने में वर्ष 1948 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हुई। 25 जनवरी को हम 'राष्ट्रीय पर्यटन दिवस' मनाते हैं।

हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बढ़ावा देता है। स्थानीय हस्तकला एवं संस्कृति को भी बढ़ावा मिलता है। पर्यटन द्वारा विदेशी लोग भी यहां आकर हमारी संस्कृति एवं विरासत को समझते हैं, उसको महानता से चाकिफ होते हैं। पर्यटन देश की महत्वपूर्ण नब्ज है, जो टटोलने से हमारे सही स्थिति, हमारी धड़कन से हम वाकिफ हो जाते हैं। हमारी आनेवाली पीढ़ियां भी इसी पर्यटन के जरिए अपने देश को जानते, समझते और संजोते हैं। हमारी अर्थव्यवस्था को बढ़ाने में बहुत बड़ा योगदान देने वाला 'पर्यटन' करोड़ो लोगों को जीवन यापन करने के लिए रोजगार के विकल्प भी उपलब्ध कराता है।

होटल एवं आवास सेवाएं, खाद्य एवं पेय उद्योग, परिवहन (जिसमें कार, बस, ट्रेने, जलमार्ग तथा हवाई मार्ग भी शामिल है) सांस्कृतिक उद्योग, टूर ऑपरेटर, यात्राभिकरण, रियल इस्टेट, वित्त, पट्टे और बीमा से संबंधित उद्योग आदि अनेक सेवाओं, उद्योगों को बांधित रखने और विकसित करने का काम पर्यटन करता है। वर्तमान में, आय बढ़ने, यातायात के साधनों की उपलब्धता, जीवन, कैरियर की प्रतिस्पर्धा तथा तनाव ने पर्यटन को एक मनोरंजन, विश्राम, आनंद की खोज का जरिया बनाया है। आज लोग, अपने घर से दूर कहीं पसंदीदा या नये स्थान पर जाकर समय बिताना चाहते हैं। वे आराम करना चाहते हैं, मनोविनोद करना चाहते हैं। अपने देश के साथ अन्य राष्ट्रों में भ्रमण करना चाहते हैं। धार्मिक स्थलों का भी दौरा करना चाहते हैं, जो उन्हें शांति और सुकून दे सकें अर्थात पर्यटन आज के युग को शांति और सुकून का सबब बन गया है।

अतः पाठकों से आग्रह है कि वे उसका पूरा फायदा उठाएं और अपने व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देते हुए जब भी समय मिले घूमते रहें, भटकते रहे, पर्यटन, देशाटन करते रहें।

यह अप्रैल माह है और छुट्टियों का माह है, अप्रैल, मई माह में स्कूलों, कॉलेजों को छुट्टियां होनी है और तदनुसार पर्यटन की योजनाएं पहले से ही बनायी जाती हैं। आपके पर्यटन को और यादगार, जानकारीपूर्ण बनाने हेतु 'आसरा मुक्तांगन' इस 'पर्यटन विशेषांक' को लेकर आपके सामने प्रस्तुत हो रहा है। पर्यटन के अलग-अलग सभी पहलुओं को कवर करना इतने कम पृष्ठों में संभव नहीं है लेकिन कोशिश की गयी है। आपको हमारी यह कोशिश कैसे लगी, हम जानना चाहेंगे। इस अंक हेतु अपना लेखकीय-सृजनात्मक सहयोग देनेवाले सभी साथियों का तहे-दिल से आभार। आपका यह सहयोग भविष्य के लिए भी मिलता रहे, यही कामना।

-डॉ. सुलभा कोरे

रतन जगन्नाथ गिरि

पर्यटन : व्यक्तित्व विकास की पाठशाला

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, सदैव किसी ना किसी से मिलना चाहता है, वार्तालाप करना चाहता है, समाज से सरोकार स्थापित करना चाहता है। अपनी जिज्ञासा एवं निरंतर नये कार्य करने की अभिलाषा को पूरा करना चाहता है। मनुष्य ने अपने जन्म के साथ ही अपनी घुमन्तु अथवा यायावरी वृत्ति को स्वीकार किया है। यायावरी मनुष्य के व्यक्तित्व का हिस्सा बन चुकी है। यायावरी और पर्यटन का बहुत कारोबारी रिश्ता है। पर्यटन से ही हम ज्ञान की प्राप्ति करते हैं। पर्यटन द्वारा हम प्रकृति वहां के स्थानीय लोगों, उनके रहन-सहन के, उनकी संस्कृति से जानकारी प्राप्त करते हैं और अपना ज्ञानवर्धन भी करते हैं। विभिन्न स्थानों के लोगों से, पर्यटन से हमारा मनोरंजन हो जाता है। पर्यटन से ही हमारा आत्मिक विकास एवं व्यक्तित्व विकास हो जाता है। हम आदि काल से प्रकृति से निरंतर प्रेरणाएं ले रहे हैं, शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, अतः प्रकृति से हम योग, आयुर्वेद, पर्यावरण, वनस्पति विज्ञान, भू-विज्ञान और कृषि विज्ञान आदि का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। अतः पर्यटन मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञान प्राप्ति के लिए आवश्यक है। प्रकृति से ही हमारा अस्तित्व है और इसी प्रकृति से प्रेरणा और ऊर्जा पाने हेतु हम पर्यटन करते हैं।

पर्यटन क्या है

पर्यटन का अर्थ है, भ्रमण अर्थात् विस्तृत भू-भाग में किया जानेवाला भ्रमण। पर्यटन शब्द से अभिप्राय मूलतः पर्यटन, देशाटन तथा तीर्थाटन के अर्थ में लिया जाता है। जिनका क्रमशः अर्थ है, आराम, मनोविनोद, भ्रमण तथा विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक स्थलों का दौरा। पर्यटन एक ऐसी यात्रा है, जो फुरसत के समय में आनंदप्राप्ति के उद्देश्य से की जाती है। पर्यटन इस शब्द का संबंध केवल यायावरी, भ्रमण तक सीमित नहीं है, बल्कि पर्यटन हमें विभिन्न संस्कृतियों के साथ जोड़ता है और उनसे सरोकार स्थापित करता है। पर्यटन ज्ञानवर्धन, संस्कृति आदान, जिज्ञासा की पूर्ति और मन की शांति के लिए की गई यात्रा है।

पर्यटन के प्रकार

प्राचीन समय में पैदल यात्रा अथवा गाड़ी घोड़ा यही साधन थे पर्यटन के आधुनिक युग में यातायात के साधनों में विकास हुआ है और अब भूमार्ग, हवाई मार्ग अथवा वायुमार्ग और जलमार्ग के आधार पर पर्यटन के साधन उपलब्ध होने लगे हैं। अब तो वायुमार्ग के माध्यम से केवल घंटों के अंदर ही पर्यटक विश्व के कोने-कोने में पहुंच सकते हैं। भौगोलिक आधार पर हम पर्यटन को दो प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं।

1. **स्वदेशी पर्यटन :** अपने देश में चाहे धार्मिक स्थल की यात्रा हो या मनोरंजन अथवा ज्ञानवर्धन की जिज्ञासा से की गई यात्रा, स्वदेशी पर्यटन के अंतर्गत शामिल है। इस पर्यटन को राष्ट्रीय अथवा घरेलू पर्यटन भी कहते हैं।
2. **विदेशी पर्यटन:** शिक्षा, रोजगार अथवा किसी अन्य प्रयोजन से विदेश में की गई यात्रा, विदेशी पर्यटन अथवा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन भी कहते हैं।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार एवं निजी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे प्रयास और कारोबार वृद्धि-

भारत की घरेलू एवं विदेशी नीति के अंतर्गत पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने उत्तरोत्तर प्रगति, विकास, संवर्धन एवं विस्तार करने के लिए सन 1966 में भारत पर्यटन विकास निगम (आईटीडीसी) की स्थापना की तथा विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा टूरिज्म डिवेलपमेंट कॉरपोरेशन के जरिए पर्यटन क्षेत्र को विकसित किया जा रहा है। आईटीडीसी द्वारा पर्यटकों के लिए होटलों की व्यवस्था,

प्रबंधन एवं विपणन, परिवहन और मनोरंजन संबंधी सेवाएं प्रदान की जा रही है। पर्यटकों का समय बचाने हेतु प्रेक्षणीय स्थलों की प्रचार सामग्री का वितरण भी किया जा रहा है।

आईटीडीसी द्वारा भारत व विदेश में परामर्शी व प्रबंधन सेवाएं प्रदान की जा रही है। विदेशी पर्यटकों के लिए मनी चेंजर्स के रूप में कारोबार को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे भारतीय मुद्रा को मजबूत बनाने में सहायता मिल रही है। भारतीय मुद्रा को मजबूत बनाने के लिए पर्यटन कारोबार एक सशक्त माध्यम बन चुका है। पर्यटन कारोबार क्षेत्र देश की जीडीपी में वृद्धि दिखाई दे रही है।

टूरिज्म बिजनेस के क्षेत्र में निजी संस्थाओं में बीएलएस इंटरनैशनल सर्विसेज, इजीमाईट्रीप, मेकमाईट्रीप, क्लियरट्रीप, एक्सपीडिया, थॉमस कुक, रिया ट्रैवल्स आईआरसीटीसी, इंडियन होटेल्स कंपनी लिमिटेड आदि कुछ प्रमुख संस्थाओं द्वारा पर्यटकों की यात्रा को सुलभ एवं सहज करने हेतु कार्य किया जा रहा है।

पर्यटन और संचार माध्यम-

पर्यटन से संचार माध्यमों के विकास में तेजी आ गई है। देश विदेश के मनोरंजनात्मक कार्यक्रम हम टेलीविजन पर देखते हैं, रेडियो पर सुनते हैं और प्रत्यक्ष रूप से वहां जाकर देखने को राय बनाते हैं। पत्र पत्रिकाओं में अथवा समाचार पत्रों में किसी स्थान विशेष की जानकारी प्राप्त करते है और उस स्थान को आँखों से देखना चाहते हैं। एक तरफ पर्यटन ने संचार माध्यमों को भी विकसित किया है। संचार माध्यमों ने पर्यटकों को केवल भ्रमण करने के लिए उत्साहित नहीं किया है बल्कि संचार माध्यमों के साधन पर्यटकों को नई नई जानकारी एवं विचारों से अवगत कराते हैं। यात्रियों को संचार माध्यमों से ही किसी स्थान विशेष के पर्यावरण की जानकारी प्राप्त हो जाती है और यात्री तदनुसार यात्रा की योजना बना सकते हैं। पर्यावरण की जानकारी यात्रियों को संचार माध्यमों से ही प्राप्त हो जाती है। पर्यटन के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए यात्रियों को कैसे अपने स्थान पर पहुंचना है और वहां के स्थान का आनंद लेना है, इसकी जानकारी भी संचार माध्यमों द्वारा प्राप्त हो जाती है। पर्यटन के क्षेत्र में इंटरनेट तकनीक मील का पत्थर साबित हो चुकी है। किसी स्थान पर जाने के लिए हम 'गुगल मैप' सुविधा का उपयोग कर रहे हैं।

पर्यटन और कारोबार विकास

एक तरफ पर्यटन करना मनुष्य की वृत्ति है, तो एक तरफ पर्यटन उद्योग भी है। पर्यटन सेवा उद्योग भी और राष्ट्रीय व्यवस्था का अंग भी है, जो पर्यटकों की जिज्ञासाओं की पूर्ति करता है। पर्यटन अनेक उद्योगों का संगठन है। अनेक यात्री पर्यटन उद्योग में शामिल हो जाते हैं। मनोरंजन या जिज्ञासाओं की पूर्ति के लिए विदेशी पर्यटकों द्वारा हमारे देश में की गई यात्राओं के साधन जैसे रेलवे, बस, टैक्सी जिसे हम ट्रांसपोर्ट बिजनेस को भी बढ़ावा मिला है। पर्यटन में मनोरंजन उद्योग भी शामिल है। हमारे देश का होटेल उद्योग पर्यटन से ही विकसित हुआ है। यात्रियों को निवास एवं भोजन की सुविधा यानी होटेल आदि इसे स्थानीय लोगों और फुटकर दुकानदारों को भी रोजगार मिलता है एवं छोटे-छोटे व्यापारियों की आय में वृद्धि हो जाती है। पर्यटन उद्योग रोजगार की नई संभावनाओं की तलाश करता है, नए-नए रोजगार प्रदान करता है। पर्यटन किसी राष्ट्र के लिए आय का साधन मान लिया जाता है। विदेशी यात्री जब हमारे देश में घूमने आता है, वह विदेशी मुद्रा हमारे देश में निवेश करता है। इस प्रकार हमारी मुद्रा को सशक्त बनाने के लिए पर्यटन एक सशक्त माध्यम होता है। पर्यटन से विदेशों द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त होने की भी संभावना बनती है। अंतरराष्ट्रीय संबंध मजबूत बनाने के लिए पर्यटन अत्यंत महत्वपूर्ण माध्यम है।

पर्यटन एवं हमारी प्राचीन धरोहर

हमारा देश सांस्कृतिक विविधताओं से पूर्ण एवं प्राचीन संस्कृति का संवाहक है। हमारा संगीत, लोक जीवन, लोक संस्कृति और लोक संगीत विश्व में बहुचर्चित होने के कारण हमारा देश विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र रहा है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और कर्नाटकी संगीत का अध्ययन करने के लिए विदेशी लोग हमारे देश में आ रहे हैं। भारतीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेशी हमारे देश में प्राचीन काल से आ रहे हैं। यदि हम अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध विभाग के आंकड़े देखते हैं तो हमारे देश के संगीतकार विदेशों की यात्रा कर रहे हैं, अपनी भारतीय संगीत कला को विदेशों तक पहुंचा रहे हैं। भारत की वास्तुकला, शिल्पकला, नृत्यकला और स्थापत्य आदि ने भारतीय पर्यटकों के साथ-साथ विदेशी

पर्यटकों को भी आकर्षित किया है। कहना यह है कि पर्यटन व्यक्तित्व विकास के लिए महत्वपूर्ण अंग बन चुका है।

अध्यात्म से जुड़ा पर्यटन और क्षेत्रीय विकास

पर्यटन का संबंध हमारी धार्मिकता के साथ है। प्राचीन काल से यात्री पदयात्रा के माध्यम से चारों धाम, बारह ज्योतिर्लिंग, नर्मदा परिक्रमा, गिरनार परिक्रमा और अन्य धार्मिक स्थानों की यात्रा करते आये हैं। अब आधुनिक सुविधाओं का लाभ लेते हुए यात्री अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर रहे हैं। बाबा काशी विश्वनाथ से लेकर रामेश्वर तक और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक के मंदिरों की वास्तुकला एवं शिल्पकला ने पर्यटन उद्यम को मजबूत बनाया है। पर्यटकों के द्वारा हमें जो आय प्राप्त हो जाती है, हम उसी के द्वारा हमारे प्राचीन भवन, मंदिरों अथवा स्थानों की मरम्मत और विकास के लिए निधि का प्रावधान कर सकते हैं। आजकल यह देखा जा रहा है कि हम पर्यटन कारोबार पर हमारे सामाजिक दायित्वों को पूरा कर रहे हैं। महाराष्ट्र के शिर्डी में रोज लाखों की संख्या में पर्यटकों का आवागमन हो रहा है। इससे वहां का होटल कारोबार, यातायात की सुविधा एवं छोटे दुकानदारों को रोजगार के साथ साथ गरीब एवं जरूरतमंद लोगों के लिए अस्पताल आदि की सुविधा पर्यटकों द्वारा दी गयी निधि पर सुचारू रूप से चल रही है। यही उदाहरण भगवान तिरुपति और देश के अन्य धार्मिक स्थलों पर लागू हो जाता है। पर्यटकों के आवागमन से क्षेत्रीय विकास संभव हो गया है। पर्यटन से सामाजिक भावनाओं को प्रभावित किया जा रहा है। पर्यटन, मनोरंजन का एक हिस्सा होने के कारण यह सुविधाएं आम मनुष्य को भी प्राप्त हो रही है।

सारांश:

अपने आप की खोज करने एवं अपनी धरोहर से जुड़ने के लिए किया गया भ्रमण ही पर्यटन है। पर्यटन से हम निरंतर नई जानकारी, भाषा, लोक संस्कृति, लोगों के नए रीति रिवाज, तीज-त्योहार, भौगोलिक वातावरण और देशकाल व परिवेश की जानकारी प्राप्त करते हैं। इसलिए पर्यटन व्यक्ति के व्यक्तित्व को विकसित करता है। व्यक्तित्व को बहु आयामी बनाता है और इस तरह से वास्तव में पर्यटन व्यक्तित्व विकास की पाठशाला है।

ratanjagannath@gmail.com

प्रीति शास्त्री

मॉलों वाली दिल्ली

पर्यटन से हमारे ज्ञान की संकीर्णता दूर होती है। हम विभिन्न जातियों, वर्गों, संस्कृतियों और सभ्यताओं के प्रत्यक्ष संपर्क में आते हैं। इससे हमें आत्मविश्लेषण के अवसर प्राप्त होते हैं। पर्यटन में कुछ कष्ट तो अवश्य होता है, पर इससे प्राप्त होने वाले आनंद और ज्ञान की तुलना में यह नगण्य है। दिल्ली भारत की राजधानी व इतिहास और आधुनिकता का केंद्र है। यहाँ मुगलों द्वारा बनाई गई इमारतों का ढेर लगा पड़ा है जहाँ सिर्फ भारतीय यात्री ही नहीं विदेशी यात्री भी भारी मात्रा में आते हैं। जब आप चाँदनी चौक की तंग गलियों में देशी घी में बने पराठे, कचौड़ी बनते देखेंगे तो खुद को रोक नहीं पाएँगे। अच्छी घूमने फिरने की जगहों से लेकर हर राज्य का पारंपरिक खाना आपको यहाँ आसानी से मिल जाएगा।

मंदिरों से लेकर चर्च, गुरुद्वारे और मस्जिद तक हर चीज आपको यहाँ मिल जाएगी। एक ऐसी जगह जहाँ हर तरह की संस्कृति का मिश्रण है और कोई भेदभाव नहीं है। दिल्ली पर्यटन स्थल आपको अच्छी स्मृति देंगे। इस समय दिल्ली में कई प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक और स्थल मौजूद हैं जैसे तुगलकाबाद किला, कुतुब मीनार, पुराना किला, लोधी गार्डन, जामा मस्जिद, हुमायूं का मकबरा, लाल किला और सफदरजंग का मकबरा। आधुनिक स्मारकों में शामिल हैं जंतर मंतर, इंडिया गेट, राष्ट्रपति भवन, लक्ष्मीनारायण मंदिर, लोटस मंदिर और अक्षरधाम मंदिर। दिल्ली कई राजनीतिक स्थलों, राष्ट्रीय संग्रहालय, इस्लामी धार्मिक स्थल, हिन्दू मंदिर, ग्रीन पार्क और फैशनेबल मॉलों का घर है।

द्वारका, नई दिल्ली-78

डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय

उत्तराखंड में पर्यटन की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

क) उत्तराखंड राज्य : सामान्य परिचय

देवभूमि उत्तराखंड अपने प्राकृतिक सौंदर्य, तीर्थाटन तथा अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए जाना जाता रहा है। उत्तर भारत के हिमालयीन क्षेत्र में स्थित यह राज्य देश को सबसे अधिक सैनिक देने वाला एक शांतिप्रिय राज्य भी है। आमतौर पर उत्तराखंड के लोग बड़े सरल, स्वाभिमानी, वफादार और परिश्रमी माने जाते हैं। राष्ट्रप्रेम तथा नेतृत्व क्षमता में भी उत्तराखंड के लोग अपनी एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। एक बहुत पुरानी कहावत है "पहाड़ का पानी और पहाड़ की जवानी" सदैव अपनी मूल जमीन को छोड़कर देश के अन्य राज्यों के लिए बड़ी ईमानदारी से अपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्व का निर्वहन करते रहे हैं। उत्तराखंड के मूल निवासी आज देश के अन्य राज्यों– दिल्ली, महाराष्ट्र, पंजाब, बंगाल, गुजरात को अपनी कर्मस्थली मानकर बड़ी शिद्दत से अपनी रोटी कमा-खा रहे हैं। पहाड़ के टेढ़े–मेढ़े, ऊबड़–खाबड़ तथा खतरनाक रास्तों पर चलने वाले लोग अपने जीवन में सरल तथा सीधे रास्तों पर चलना पसंद करते हैं। यही कारण है कि उत्तराखंडी लोग बड़े मेहनतकश होते हैं और सादा जीवन जीने पर यकीन करते हैं। अपने घर परिवार से दूर कभी देश की सीमाओं पर, कभी नगरों–महानगरों में रोजगार के लिए वर्षों संघर्ष करते यहां के युवा इतने स्वाभिमानी होते हैं कि वे कहीं सुरक्षा गार्ड की नौकरी करते, कहीं होटल में रसोइये तथा वेटर का कार्य करते तो दिखाई देते हैं, किंतु आप उत्तराखंड के बेरोजगार युवाओं को, भीख मांगते या चोरी–डकैती करते नहीं देखेंगे। उत्तराखंड के लोगों में वफादारी तथा देशभक्ति कूट–कूट कर भरी रहती है। इसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है, 23 अप्रैल, 1930 को अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध सैन्य क्रांति करने वाले गढ़वाल राइफल्स के वीर चन्द्र सिंह भंडारी 'गढ़वाली' पौड़ी गढ़वाल में पैदा हुए थे। ब्रिटिश काल में सैन्य सेवाओं के लिए 'विक्टोरिया क्रॉस' पाने वाले तथा विश्व युद्ध के दौरान संयुक्त गणराज्य रूस से बहादुरी के लिए 'ऑर्डर ऑफ द रेड स्टार' पाने वाले युवा भी उत्तराखंड से ही थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अदम्य साहस, बहादुरी, शौर्य तथा पराक्रम के लिए पहला परमवीर चक्र पाने वाले मेजर सोमनाथ शर्मा भी कुमाऊं रेजिमेंट से ताल्लुक रखते थे। युद्ध में देश के लिए अदम्य साहस का परिचय देते हुए सर्वोच्च बलिदान देने वाले अधिकांश सैनिक उत्तराखंड से संबंधित होते हैं। शस्त्र संचालन के अतिरिक्त शास्त्रों के क्षेत्र में भी यहां के लोग सदैव आगे रहे हैं। हिंदी साहित्य में पहले ज्ञानपीठ पाने वाले कवि सुमित्रानंदन पंत, हिंदी में सबसे पहले पोस्ट डॉक्टरेट (डी.लिट.) की उपाधि पाने वाले डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल भी इसी राज्य से थे। इनके अतिरिक्त प्रसिद्ध इतिहासकार (हरिकृष्ण रतूड़ी तथा पं. बद्रीदत्त पाण्डेय), लोकरत्न पंत 'गुमानी', तारादत्त गैरोला, गोविंदवल्लभ पंत, इलाचंद्र जोशी, यमुनादत्त वैष्णव 'अशोक', ताप पांडे, चंद्रकुंवर बर्त्वाल, महावीरप्रसाद गैरोला, चारुचंद्र पांडे, गौरा पंत 'शिवानी', अबोधबंधु बहुगुणा, मोहनलाल नेगी, वल्लभ डोभाल, प्रेमलाल भट्ट, शैलेश मटियानी, शेखर जोशी, देवेश ठाकुर, मनोहरश्याम जोशी, शेरदा 'अनपढ़', गोविंद चातक, शेरसिंह बिष्ट, देवसिंह पोखरिया, आशा रावत, श्यामसिंह कुटौला, हयातसिंह रावत, उमा भिलिडियाल, मुनिराम सकलानी 'मुनींद्र', महेश दर्पण, कौस्तुभ आनंद चंदोला, दमयंती शर्मा 'दीपा', हरिसुमन बिष्ट, भारती पांडे, धारावल्लभ पांडेय 'आलोक', ओमशरण आर्य 'चंचल', राजेंद्रसिंह 'बटोही', रमेश पोखरियाल 'निशंक', अरुण कुकसाल, राजेश्वर उनियाल, सुधा जुगरान, बिहारीलाल जलंधरी, भगवती पनेरू, प्रभा पंत,

जगतसिंह बिष्ट, नंदकिशोर हटवाल, रिंगा शर्मा, दीपा गोबाड़ी, नरेंद्र कौर, महावीर रवांल्टा, योगेंद्रप्रसाद जोशी 'नवल', महेंद्र महरा 'मधु', महेशानंद डिमरी 'बादल', नवीन डिमरी, दीपा गुप्ता, महेशचंद्र पुनेठा, हेमचंद्र दुबे 'उत्तर', मुकेश नौटियाल, संदीप रावत, दिनेश कर्नाटक, उमेश चमोला, शिरीषकुमार मौर्य, प्रीतम अपछ्याण, शशि जोशी 'शशी', हिमांशु जोशी, माया गोला, ललित मोहन रयाल, प्रीति आर्या, जयंत शाह, कविता भट्ट 'शैलपुत्री', स्वाति मेलकानी, पवनेश ठकुराठी, प्रेमसिंह नेगी, हिमांशु जोशी, शीतांशु भारद्वाज, रमेशचंद्र शाह, देवकी महरा, सुभाष पंत, चन्दू खोलिया, लीलाधर जगूड़ी, बलवंत मनराल, गोपालदत्त भट्ट, प्रदीप पंत, मथुरादत्त मठपाल, आशा शैली, प्रयाग जोशी, देवेंद्र मेवाड़ी, बिहारीलाल दनोसी, परमानंद चौबे, गिरीश तिवाड़ी 'गिर्दा', पंकज बिष्ट, मृणाल पांडे, लक्ष्मणसिंह बिष्ट 'बटरोही', जुगलकिशोर पेटशाली, सुनीति रावत, तिलकराज जोशी, वीरेन डंगवाल, पूरनचंद्र कांडपाल, मंगलेश डबराल, क्षितिज शर्मा, दिवा भट्ट, इंद्रबहादुर सेन, नागेंद्रप्रसाद ध्यानी 'अरुण', हरीशचंद्र पांडे, डॉ. आशा नैथानी दरगन ने भी अपनी लेखनी के माध्यम से भाषा तथा साहित्य को समृद्ध करके राज्य को गौरवान्वित किया है।

जहाँ तक नेतृत्व क्षमता का प्रश्न है, यहाँ के लोग बिना किसी विज्ञापन के (बिना ढोल बजाए) चुपचाप अपना कार्य करने में यकीन रखते हैं। स्वतंत्र भारत के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री तथा केंद्र में गृह मंत्री रहे 'भारतरत्न' पंडित गोविंद बल्लभ पंत भी उत्तराखंड के निवासी थे। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री रहे हेमवती नंदन बहुगुणा, नारायण दत्त तिवारी और उत्तरप्रदेश के आज के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ (अजय सिंह बिष्ट) भी उत्तराखंड के मूल निवासी हैं। भारतीय राजनीति को के. सी. पंत, बहादुरराम टम्टा (कमिश्नर), गवर्नर बी. डी. पाण्डे, हरगोविन्द पंत तथा प्रोफेसर डॉ. मुरली मनोहर जोशी एवं रीता बहुगुणा जोशी जैसे राजनीतिज्ञ भी इसी राज्य ने दिए।

क्रिकेट में भारत को तीनों फॉर्मेट में सबसे अधिक बार विश्व विजेता बनाने वाले कप्तान महेंद्र सिंह धोनी (लौली सालम, अल्मोड़ा) उत्तराखंड के मूल निवासी हैं। यहाँ के कई खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तिरंगे झंडे की शान बढ़ाई है। भारत की पहली महिला पायलट सरला ठकराल,

एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला पर्वतारोही बछेंद्री पाल तथा नाव से छह सदस्यों के दल के साथ पूरे विश्व की परिक्रमा करने वाली महिला लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी भी उत्तराखंड की बेटियां हैं। भारत के पहले सी. डी. एस. जनरल बिपिन रावत, जनरल बिपिन चंद्र जोशी, एडमिरल देवेंद्र कुमार जोशी, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार आई.पी.एस. अधिकारी अजीत डोभाल, पूर्व डायरेक्टर जनरल मिलिट्री ऑपरेशन लेफ्टिनेंट जनरल अनिल कुमार भट्ट, भारतीय तटरक्षक दल के अपर महानिदेशक कृपा नौटियाल, पूर्व महानिदेशक भारतीय तटरक्षक दल राजेंद्र सिंह, भारतीय नौसेना के पूर्व सामग्री प्रमुख चीफ ऑफ मटीरियल वाइस एडमिरल संदीप नैथानी रियर एडमिरल (सर्जन) बल्दिया सहित उत्तराखंड के कई वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों ने देश की सेवा की है।

उत्तराखंड से कई विश्वविद्यालयों, इसरो, आई.आई. एस-सी., डी. आर. डी. ओ. तथा बी.ए.आर.सी. में उत्तराखंड कई वैज्ञानिकों ने अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान की हैं। डॉ. डी.डी.पंत, डॉ. खड्ग सिंह वल्दिया, डॉ. नीलांबर पंत, डॉ. अजीत कुँवर, डॉ. चिंतामणि सूंठा, डॉ. भुवन चंद्र भट्ट, सुश्री स्नेहा नेगी, सुश्री शीतल बिष्ट, प्रोफेसर आर के मैखुरी, प्रोफेसर आरसी रमोला, डॉ. अजय सेमेल्टी, सुश्री नेहा बड़ोला, सुश्री अर्चना बिष्ट, डॉ. श्री कृष्ण जोशी, अनिल प्रकाश जोशी, पूरनचंद जोशी, दीवान सिंह भाकुनी, डॉ. डी. पी. डोभाल, आदित्य नारायण पुरोहित तथा ग्राफिक एरा डीम्ड युनिवर्सिटी देहरादून के दस प्रोफेसरों को विश्व के टॉप दो प्रतिशत प्रभावशाली वैज्ञानिकों की सूची में शामिल किया गया है।

ख) उत्तराखंड में पर्यटन की सम्भावनाएँ :

उत्तराखंड देवताओं की जन्मभूमि, ऋषि-मुनियों की

तपस्वियों तथा साहित्यकारों-वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों और राजनीतिज्ञों की जन्मभूमि होने के कारण राष्ट्र निर्माण एवं देश की सुरक्षा संस्था में इस राज्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन तथा स्वास्थ्यवर्धन की दृष्टि से भी यह राज्य बड़ा महत्वपूर्ण है। प्रशासनिक दृष्टि से उत्तराखंड को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। गढ़वाल, कुमाऊं तथा जौनसार बावर। राज्य का पूर्वी हिस्सा कुमाऊं है। जिसमें नैनीताल, अल्मोड़ा, उधमसिंह नगर, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चंपावत जिले आते हैं। राज्य का पश्चिमी भाग गढ़वाल है। जिसमें देहरादून, रुद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, चमोली, टिहरी, पौड़ी, हरिद्वार जिले आते हैं। दक्षिण का तराई क्षेत्र जौनसार बावर के नाम से जाना जाता है। यह भूभाग मैदानी है। गढ़वाल में गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार, ऋषिकेश आदि सनातन धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थल हैं। हेमकुंड साहब में सिखों का तीर्थ स्थान है। हेमकुंड लोकपाल मंदिर की वास्तुकला का निर्माण एम.ई.एस. के चीफ इंजीनियर, श्री सनत कुमार नैथानी ने किया था। कुमाऊं में नंदा देवी, कसार देवी सूर्य मंदिर, बिनसर महादेव, जागेश्वर, बागेश्वर, बैजनाथ, चितई गोलू देवता मंदिर, गर्जिया देवी, पूर्णागिरि मंदिर, चौड़ा गोलू मंदिर, चम्पावत गोलू धाम तथा कैलाश मानसरोवर, पिथौरागढ़-तिब्बत सीमा पर स्थित हैं।

जहां तक ऐतिहासिक स्थलों का प्रश्न है, उत्तराखंड में गोरखाओं का आधिपत्य कुछ समय के लिए रहा। उत्तराखंड के मुख्य शहरों तक अंग्रेज भी पहुंच गए। यहां के ऐतिहासिक स्थलों का निर्माण और विकास स्थानीय राजाओं जैसे कत्यूरी राजाओं, गढ़वाल के कनकपाल राजा, पंवार राजवंश, सुदर्शन शाह, चन्द, बम, सामन्त आदि राजपरिवारों के लोगों द्वारा किया गया। गोरखाओं तथा अंग्रेजों के आधिपत्य के कारण यहां की भाषाओं में उक्त दोनों भाषाओं का अधिक प्रभाव परिलक्षित होता है। ऐतिहासिक स्थलों के नाम पर इस राज्य में अधिकांश मंदिर ही हैं। पूर्वी तराई क्षेत्र में 'रीठा साहब' और 'नानकमत्ता' (उधमसिंह नगर), सिखों के धार्मिक पर्यटन केन्द्र के लिए जाने जाते हैं। इस तरह उत्तराखंड में जहां सनातन हिंदुओं के अलावा सनातन सिखों के तीन प्रमुख धर्म स्थल भी हैं, जो धार्मिक महत्व के साथ-साथ ऐतिहासिक महत्व भी रखते हैं। गढ़वाल क्षेत्र के प्रमुख धार्मिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए 'हरिद्वार' तथा कुमाऊं क्षेत्र के धार्मिक स्थलों का भ्रमण करने के लिए हल्द्वानी, रामनगर तथा टनकपुर प्रमुख द्वार हैं।

पर्यावरण की दृष्टि से यहां चीड़, ओक (बांज) और देवदारु के पेड़ों से ढकी हुई पर्वत मालाएँ दिखाई देती हैं। कई ऊंची पर्वत श्रेणियां बारह महीने बर्फ से ढकी रहती हैं। यहाँ देवदारू के जंगल शीतल तथा शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। बाँज (ओक) के जंगलों से निकलने वाला पानी शीतल तथा अपने आप में 'मिनरल वाटर' से अधिक शुद्ध होता है। राज्य वृक्ष बुरांश के लाल फूल देखने में तो सुंदर होते ही हैं, इनसे निकलने वाला रस गर्मी में बड़ी राहत देता है। उत्तराखंड का राज्य पुष्प, ब्रह्मकमल है तथा कई प्रकार की आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के लिए यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। चमोली में स्थित 'नन्दादेवी राष्ट्रीय उद्यान' और विश्व प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' हजारों किस्म की पुष्प प्रजातियों के लिए तथा रामनगर में स्थित 'जिम कॉर्बेट पार्क' बंगाल टाइगर सहित 400 से अधिक वन्य प्रजातियों के सुरक्षा स्थल के रूप में जाना जाता है।

उत्तराखंड के सीढ़ीनुमा खेत गेहूं, धान, दालों, सरसों, तिलहन, हल्दी, मिर्च, मसाले के अलावा मोटे अनाज-झिंगोरा, मंडुवा (मराठी में नाचनी) ज्वार, बाजरा, मारसा, भाँग आदि के उत्पाद के लिए भी जाने जाते हैं। आजकल मंडुवा अन्न से बिस्किट, चिप्स भी बनाए जा रहे हैं। जिन्हें कैंसर की दवा के रूप में ग्रहण किया जा रहा है। यहाँ के परंपरागत भोजन में झिंगुरे की खीर, मंडुवे की रोटी, अरसा, चौसोणी, भाँग की चटनी, बाड़ी, कंडाली का साग, पिनालू, गडेरी की सब्जी, फाणु का साग, तिल की चटनी, ककड़ी का रायता, काले-सफेद भट (सोयाबीन) गहत, राजमा की दाल, ज्वार-बाजरे की रोटी, पालक-मेथी का साग और कोणी का भात प्रमुख हैं।

फलों के लिहाज से यहां आम, अखरोट, खुमानी, आलू बुखारा, पुलम, नाशपाती, केला, काफू तथा सेब का उत्पादन भी होता है। यहां के विशेष फलों में हिसालु, काफल, किलमोड़ी, मेहल आदि जंगली फलों के नाम लिए जा सकते हैं। यहां का राज्य-पशु, हिरण की प्रजाति का अल्पाइन कस्तूरी मृग है। यहां का राज्य पक्षी हिमालयन मोनाल एक प्रकार का तीतर है। उत्तराखंड का राज्य वृक्ष बुरांश है। गढ़वाली,

कुमाऊँनी, जौनसारी, भोजपुरी के साथ-साथ उत्तराखंड में पंजाबी, उर्दू तथा नेपाली भाषाएँ भी बोली जाती हैं। उत्तराखंड में भोटिया, थारू, जौनसारी, बुक्सा/बोक्सा और राजी नामक आदिवासी जातियाँ निवास करती हैं। इनमें से भोटिया, थारू, जौनसारी को अनुसूचित जनजाति घोषित किया गया था और बुक्सा/बोक्सा और राजी इन दोनों को सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से अन्य जनजातियों की तुलना में अत्यधिक निर्धन और उपेक्षित होने के कारण आदिम जनजाति समूह की श्रेणी में रखा गया है। यहां की दलित जातियां (हरिजन) तांबे के बर्तन-गागर, बाल्टी, लोटा, परात, पीने के पानी का फिल्टर, गिलास आदि बनाने के साथ-साथ इस समुदाय के लोग निगालू (पतले बाँस की टोकरियाँ) घास, गोबर आदि ढोने वाले डोके, कण्डाले तथा चटाई आदि बनाकर अपना जीवन यापन करते हैं। कुछ परिवार भेकुआ की खाल निकालकर रस्सी बनाने और कुछ परिवार मरे हुए जानवरों की खाल से ढोल-दमाऊँ आदि वाद्ययंत्र बनाकर अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं। ओड़ मिस्त्री का कार्य करने, खेतों में हल चलाने के अलावा शादी विवाह में ढोल बजाने एवं छोलिया नृत्य करने का काम भी इसी समुदाय के लोग करते रहे हैं।

ग) उत्तराखंड में चिकित्सा पर्यटन तथा साहसिक पर्यटन की स्थिति एवं संभावनाएं

उत्तराखंड पर्यटन नीति 2018 के अंतर्गत राज्य को एक आरोग्य हब (केन्द्र) के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया गया। सरकार चिकित्सा पर्यटन पर आधारित पैकेज को बढ़ावा देने तथा राज्य में चिकित्सा पर्यटन के लिए आवश्यक मूलभूत ढांचों को सशक्त एवं सुदृढ़ बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। इस कार्य में स्थानीय लोगों की सक्रियता और सहभागिता भी अपेक्षित है। एशिया में प्रसिद्ध क्षय रोग (टी.बी.) सैनेटोरियम/सेहतगाह की स्थापना वर्ष 1922 में नैनीताल से 10 किलोमीटर दूर तथा भीमताल से 11 किलोमीटर की दूरी पर भवाली नामक स्थान पर की गई थी। स्वतंत्रता के महानायक सुभाष चंद्र बोस यहां आए थे, यहीं देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पत्नी श्रीमती कमला नेहरू का उपचार करवाया था। यहां देवदार-चीड़ जंगलों की प्रदूषण रहित वायु तथा जड़ी-बूटी मिश्रित जल और पर्वतों से उगते सूर्य की गुनगुनी धूप तीनों स्वास्थ्य के लिए संजीवनी का कार्य करते हैं। भवाली सैनेटोरियम के आसपास पर्यटकों के स्वास्थ्य लाभ हेतु गेठिया चिकित्सालय में 100 बिस्तरों का अस्पताल खोलने पर कार्य हो रहा है। भवाली-रामनगर-मुक्तेश्वर रोड पर स्थित 'तुलसी टेली हेल्थ क्लिनिक', जिला टीबी केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, भीमताल आदि में चिकित्सा स्वास्थ्य की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, देहरादून, मसूरी, बदीनाथ, हल्द्वानी, नैनीताल, काशीपुर, श्रीनगर, टिहरी, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, रानीखेत, किच्छा, चमोली, गोपेश्वर, देवप्रयाग, जसपुर, पौड़ी, चंपावत, कौसानी, लक्सर, गंगोत्री, केदारनाथ, रामनगर, औली, काठगोदाम, बागेश्वर, लैंसडाउन, कोटद्वार, रुद्रप्रयाग, नरेंद्र नगर, भीमताल, मंगलौर, सितारगंज, धारचूला, चकराता, द्वाराहाट, उत्तरकाशी, खटीमा, गदरपुर, पंतनगर, डोईवाला, क्लेमेंट टाउन, टनकपुर, नंदप्रयाग, सुल्तानपुर आदि भी उत्तम आयुर्वेदिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा (पंचकर्म, कायाकल्प थेरेपी, फिजियोथैरेपी) केंद्र उपलब्ध हैं।

जहाँ तक साहसिक तथा रोमांचकारी खेलों का प्रश्न है, उत्तराखंड युवाओं के लिए सर्वथा एक उचित स्थान रहा है। ऋषिकेश अपने प्राकृतिक सौंदर्य, फोटोग्राफी, तीर्थाटन के साथ रिवर राफ्टिंग जैसे खेल के लिए एक आकर्षण का केन्द्र है। इसी तरह पिंडारी ग्लेशियर, औली में ट्रैकिंग, मसूरी में पैराग्लाइडिंग, कैम्पिंग, केबल कार की सवारी, बंजी जंपिंग, पैरासेलिंग, फ्लाइंग फॉक्स, चट्टान से कूदना, कायाकिंग, माउंटेन बाइकिंग, रॉक क्लाइंबिंग, रैपलिंग, वन्यजीव सफारी आदि जोखिम भरे रोमांचकारी तथा साहसिक खेलों का आनंद लेने के लिए भी उत्तराखंड की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। अतः यह राज्य आध्यात्मिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन के साथ जोखिम भरे रोमांचकारी साहसिक पर्यटन के लिए भी जाना जाता है।

घ) उत्तराखंड में पर्यटन की चुनौतियाँ :

उत्तराखंड एक पर्वतीय राज्य है। यह हिमालय के मध्य भाग में स्थित है। इसके पश्चिम में कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश हैं। पूर्व में नेपाल तथा उत्तर में तिब्बत स्थित है। उत्तराखंड की सबसे ऊंची पर्वत मालाएँ सदैव बर्फ से ढकी रहती हैं। उनके आगे की पर्वत श्रृंखलाएँ लगभग नग्न रहती हैं। जिनमें मुश्किल से हरियाली या पेड़-पौधे दिखाई पड़ते हैं। उनसे आगे

हरे-भरे चीड़, देवदार, बाँज (ओक) के जंगल हैं। इन्हीं जंगलों के बीच लगभग 25, 50, 75 परिवारों के गांव बसे हैं। कुछ ऊपर की ओर पहाड़ों पर, कुछ सीढ़ीनुमा खेतों के पास तथा कुछ गांव नीचे पहाड़ की तलहटी (घाटी) पर बसाए गए हैं। उत्तराखंड की विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ ही यहां पर्यटन के लिए सबसे बड़ी चुनौती हैं। कुछ जिले सीमावर्ती क्षेत्र नेपाल, तिब्बत/चीन की सीमा में बसे हैं। यहां पर्यटन के लिए दोहरी चुनौतियां हैं। दुर्गम पर्वतीय इलाकों में स्थित होने के कारण सबसे बड़ी चुनौती यहां यातायात को लेकर है। देश 'आजादी का अमृत महोत्सव' मना चुका है, किंतु उत्तराखंड के दूरदराज इलाकों में आज भी सड़कें नहीं हैं। कई गांवों तक बिजली नहीं पहुंच पाई है। ऐसे में मंगेश डबराल की कविता 'पहाड़ पर लालटेन' के साथ दुष्यंत कुमार जी की गजल का यह शेर याद आता है।

"कहां तो तय था चिरागाँ हर एक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।"

उत्तराखंड की कई सड़कें बरसात में भूस्खलन की भेंट चढ़ जाती हैं। बरसात में कई अवसरों पर दो-तीन महीने तक सड़कें बंद रहती हैं। अब चूँकि हिमालय क्षेत्र में भूकंप, बाढ़ तथा अन्य प्राकृतिक आपदाएं आती ही रहती हैं। ऐसे में कई अवसरों पर केदारनाथ जैसी घटनाएं होने पर जान-माल का भारी नुकसान तो होता ही है, इसका धार्मिक तथा चिकित्सा पर्यटन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह बात सच है कि दुर्गम इलाकों में स्थानीय निवासियों ने रिसॉर्ट, होटेल, रेस्टोरेंट और कुछ 'होम स्टे' खोल लिए हैं, किंतु वहां तक पहुँचने के लिए साधनों की कमी है। ऐसे में सड़क, बिजली, पानी जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना सबसे बड़ी चुनौती है।

उत्तराखंड अपने स्वच्छ, शीतल, मिनरलयुक्त शुद्ध पानी प्रदूषण रहित वायु तथा सूर्य की गुनगुनी विटामिन डी-युक्त धूप के लिए जाना जाता रहा है। अवैध खनन से यहां के प्राकृतिक जल स्रोत-धारे, नौले तथा झरने तो अतिक्रस्त हो ही रहे हैं। इससे यहां भूस्खलन तथा भूकंप का खतरा भी बढ़ गया है। अवैध खनन के परिणामस्वरूप कृषि योग्य भूमि नष्ट होती जा रही है। साथ ही प्राकृतिक सौंदर्य के प्रमुख उपादानों पेड़, पौधों, झाड़ियों, घास को भी नुकसान पहुंचा रहा है। अवैध खनन से सड़कें क्षतिग्रस्त हो रही हैं। पर्यटन के लिए भी यह एक चुनौती है। सरकार, समाज तथा पर्यावरणविदों को चाहिए कि वे इन सभी चुनौतियों को अवसर में बदलने के लिए किसी ठोस रणनीति को अपना कर उसे प्रभावी रूप से लागू करें।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि उत्तराखंड में धार्मिक पर्यटन तथा आध्यात्मिक पर्यटन के लिए जहाँ एक ओर 'चार धाम यात्रा' बहुत सुगम एवं सुविधाजनक हो गई है, वहीं दूसरी ओर 'पंच प्रयाग' अर्थात देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नंदप्रयाग, विष्णुप्रयाग के साथ 'पंचबद्री' अर्थात् बद्रीनाथ, आदिबद्री, वृद्धबद्री, भविष्यबद्री, योगध्यानबद्री के अतिरिक्त श्री हेमकुंड साहब (चमोली) श्री नानकमत्ता (ऊधमसिंह नगर) और श्री रीठा साहब (चंपावत) भी तीर्थाटन हेतु पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। आदि गुरु शंकराचार्य जी द्वारा देश में स्थापित चार मठों में से एक 'ज्योतिर्मठ' उत्तराखंड के चमोली जिले में स्थित है। 'नन्दादेवी राष्ट्रीय उद्यान' तथा 'फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान' दोनों यूनेस्को अर्थात 'संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन' द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किए गए हैं। यहाँ स्थित जागेश्वर मंदिर, बागनाथ मंदिर, कटारमल सूर्य मंदिर, पिथौरागढ़ का लंदन फोर्ट (बाउलीकी गढ़) और नैनीताल का राजभवन आदि भी अपनी सांस्कृतिक-ऐतिहासिक विरासत को सँजोए सैलानियों को आकर्षित करते हैं।

लगभग 80 प्रतिशत साक्षरता दर वाले इस राज्य में कुमाऊं रेजिमेंट का ट्रेनिंग सेंटर 'रानीखेत' एवं गढ़वाल राइफल्स का प्रशिक्षण केंद्र 'लैंस डाउन' भी अपनी प्राकृतिक सुषमा के लिए जाने जाते हैं। कौसानी के ठीक सामने हिमालय पर्वत के दर्शन होते हैं। दोपहर में जब सूर्य की किरणें हिमालय की बर्फ के ऊपर पड़ती हैं, तब लगता है मानो – पूरा हिमालय चांदी की चादर से ढक गया हो। शाम को सूर्यास्त के समय सूर्य की 'पेलक्रीम' किरणें जब हिमालय की बर्फ पर पड़ती हैं, तब लगता है कि पूरा हिमालय पर्वत सोने की चादर से ढक दिया गया हो। सुंदर नदियों-झरनों-बुग्यालों वाले इस प्रदेश में कई ऐसे स्थल हैं, जिन्हें विदेशी सैलानियों के लिए आकर्षक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किए जाने की परम आवश्यकता है।

हिंदी विभाग प्रमुख, सेंट जेवियर्स कॉलेज, 5, महापालिका मार्ग, मुंबई-1

डॉ. रमेश मिलन

मेरी रेलयात्रा

दुनिया एक खूबसूरत सपना है तो रेल यात्रा जिंदगी का एक सुहाना सफर है। रेल के इस आनंददायी और मनमोहक सफर का कारवां मंजिल की ओर बढ़ता ही रहता है। मंजिल के शुभारंभ और मंजिल के समापन के बीच एक रंगीन और जगमगाती दुनिया बसती है। यात्री इस सपनीली और मस्तानी दुनिया का जीवंत सदस्य-कलाकार बन जाता है। मस्त चाल से झूमती, गाती, लहराती, बलखाती रेल में यात्री जिस आनंद और उल्लास का अनुभव करता है, उस रंग-बिरंगे सफर के मनोहारी दृश्य जीवन भर के लिए हृदय पटल पर अंकित हो जाते हैं।

मैं पूर्वी दिल्ली-शाहदरा से ऑटो-रिक्शा लेकर नई दिल्ली स्टेशन पहुँचा। स्टेशन के बाहर ऑटो-टैक्सियों की खासी भीड़ थी। यात्रियों का तो मानो मेला ही लगा हुआ था। ऑटो से सूटकेस आदि सामान उतारने के बाद मेरी नजरें कुली को तलाश रही थीं। इतने में ही दो-तीन कुली सामान ले जाने के लिए आग्रह करने लगे। कुली लोग यात्रियों के चेहरों के मनोभावों को पढ़ना खूब जानते हैं। वे पूरे मनोवैज्ञानिक होते हैं। बाहर से आने वाले अनजान यात्रियों से अच्छी खासी रकम वसूल करना उन्हें खूब आता है। रेल विभाग ने पर्याप्त सामान की दरें निश्चित कर रखी हैं लेकिन विवश और लाचार यात्री को समझौता करना ही पड़ता है।

एक कुली ने मेरा सामान प्लेटफार्म नं. 6 पर मुंबई जाने वाली पश्चिम एक्सप्रेस तक पहुँचाया। प्लेटफार्म का दृश्य बड़ा मनोहारी था। तरह-तरह की पोशाकों और वेशभूषा में स्त्री पुरुषों का सागर उमड़ रहा था। मानो सारा भारत ही रंग-बिरंगे परिधानों में जीवंत था। रेलवे उद्घोषिका के मधुर स्वर कानों में मिश्री-सी घोल रहे थे।

उद्घोषिका ने पश्चिम एक्सप्रेस के प्लेटफार्म पर पहुँचने की घोषणा की। यात्रियों में हलचल मच गई, सब अपना-अपना सामान लेकर गाड़ी में चढ़ने के लिए सावधान हो गए। सबसे अच्छी बात तो यह थी कि प्लेटफॉर्म के बोर्डों पर डिब्बों की स्थिति दर्शायी जा रही थी। रेल प्रशासन के इस प्रबंध से यात्री उसी क्रम से प्लेटफॉर्म पर खड़े थे।

गाड़ी जैसे ही प्लेटफॉर्म पर आकर लगी। लोगों के धैर्य का बांध टूट गया। स्थान और डिब्बे आरक्षित होने के बावजूद लोग गेट पर ऐसे मारा-मारी कर रहे थे। मानो उनकी बर्थ और सीट उन्हें छोड़कर कहीं चली जाएंगी। सामान बर्थ पर रखने के बाद चुक स्टील से मैंने कुछ पत्रिकाएं पढ़ने के लिए खरीदीं।

गाड़ी के इंजन ने जैसे ही सीटी दी, लोगों की भीड़ डिब्बे से छंटने लगी। गाड़ी चलने के बाद पता चला कि एक-एक यात्री को विदा करने कई-कई लोग आए हुए थे। अब डिब्बे में आरक्षित यात्री ही थे। मैंने भी राहत की सांस ली। तब याद आया 'छोटा परिवार सुखी परिवार'। कल्पनाओं अब मैं यात्रा के आगामी सफर की सुखद कल्पनाओं में डूब कर अपनी सीट पर समाधि लेकर स्थिर हो गया था।

अभी चैन से बैठा भी नहीं था कि पिछले कूपे में दो सज्जन सामान रखने को लेकर उलझ रहे थे। मैंने झांककर देखा तो एक यात्री के पास सारे घर का ही सामान था। चार बच्चे भी उनके साथ थे। संभवतः हम कभी यह विचार ही नहीं करते कि हम मालगाड़ी से नहीं बल्कि यात्री गाड़ी से सफर पर जा रहे हैं। गाड़ी चलने से पूर्व मैंने आरक्षण सूची में अपना नाम देख लिया था। चार्ट देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि रेल विभाग राष्ट्रभाषा हिन्दी को पर्याप्त महत्व दे रहा है, इसके लिए रेल प्रशासन बधाई का पात्र है।

गाड़ी ने पूर्ण रूप से प्लेटफॉर्म छोड़ा भी नहीं था कि

गाड़ी रुक गई। पता चला कि किसी यात्री ने जंजीर खींची थी क्यों कि उसके कुली ने उसका कुछ सामान गायब कर दिया था। दरअसल उस यात्री ने पैसों की बचत के लिए ऐसे कुली की सेवाएं प्राप्त की थी जिसके पास रेल विभाग का अधिकृत बिल्ला नहीं था। यद्यपि रेलवे पुलिस की मुस्तैदी और तुरंत कार्यवाही से वह अवांछित कुली सामान सहित पकड़ लिया गया लेकिन इससे समय की बर्बादी के साथ-साथ यात्रियों और रेल प्रशासन को परेशानी भी हुई।

गाड़ी चलने के कुछ समय बाद टिकट निरीक्षक महोदय पधारे। एक सज्जन वरिष्ठ नागरिक के रूप में किराये में छूट प्राप्त करके यात्रा कर रहे थे लेकिन न तो उनके पास कोई पहचान-पत्र था और न ही कोई अन्य प्रमाणपत्र। टिकट निरीक्षक उनसे जुर्माने सहित रकम वसूल करना चाह रहे थे। यात्रियों के समझाने पर विवाद सुलझा। सच्चाई तो यह थी कि यात्री ने टिकट खिड़की से स्वयं आरक्षण नहीं कराया था बल्कि किसी कमीशन एजेंट की सेवाएं प्राप्त की थी जो रेलवे से पंजीकृत भी नहीं था।

द्वितीय श्रेणी के हमारे आरक्षित डिब्बे के दो पंखों ने मौन धारण किया हुआ था जब कि टॉयलेट का नल कुछ ज्यादा ही सक्रिय था। टिकट निरीक्षक का ध्यान आकर्षित करने पर ठीक कराने का आश्वासन तो मिला लेकिन मुंबई तक यथास्थिति ही रही।

गाड़ी फरीदाबाद स्टेशन पार कर रही थी। मेरा ध्यान खिड़की से बाहर दृश्यावलोकन में था कि मेरे सिर के पास तालियों की कर्कश ध्वनि से मेरा ध्यान भंग हुआ। मुड़ कर देखा तो कुछ 'किन्नर' तालियाँ पीट कर टैक्स वसूल रहे थे। यात्रा में उनको आनन्दित तत्व मानकर मैंने तो मौन समाधि लेकर अपनी जान बचाई लेकिन पास बैठे परिवार से येन-केन-प्रकारेण उन्होंने टैक्स वसूल ही लिया। उस परिवार के चेहरों की खुशी तिरोहित हो गई थी जो रेलवे की नाकामी और बदइंतजामी का संकेत दे रही थी। सुरक्षा पुलिस के जवान भी मुस्करा कर दूसरे डिब्बे की तरफ बढ़ गए।

यात्रा में मैंने देखा कि गा बजाकर भीख माँगने, अपाहिज बने तथा सामान बेचनेवालों की तो रेल विभाग ने फौज ही खड़ी कर रखी है ताकि यात्री सफर में सावधान और जागरूक रहें। हाँ, एक दस-बारह वर्ष के बच्चे द्वारा अपनी कमीज उतार कर सफाई करते देख यात्रियों ने उसे सहर्ष पैसे दिए। रेल विभाग का एक भी सफाई कर्मचारी बड़ौदा स्टेशन को छोड़कर पूरी यात्रा में डिब्बे के अंदर नहीं आया। इसे रेल का खेल कहें या यह काम रहा है ढकेल कहें।

रेलगाड़ी सरपट दौड़ लगा रही थी। ऐसा अनुभव हो रहा था मानो दूर खुले आकाश में पक्षियों की मानिंद मैं उड़ान भर रहा हूँ। प्रकृति के साथ कहकहे लगा रहा हूँ। रास्ते की नदी-नालों को अठखेलियां करते देख रहा हूँ। मेरे डिब्बे के पास की चीजें पीछे छूटती जा रही थीं, मैं खुशी के साथ पल-पल उदास हो जाता था। पेड़, नदी, पहाड़ी, चरते हुए पशु, हल जोतता किसान, सिर पर रंग-बिरंगी चुनरियां ओढ़े गीत गातीं युवतियां पल-पल सब साथ छोड़ रहे थे। एक क्षण के लिए हृदय उदास हो जाता कि अब फिर से ये दृश्य कभी नहीं मिल पायेंगे लेकिन तभी खुशियाँ बिखेर देता। एक दृश्य पीछे जाता तो नया दृश्य साथ आ जाता।

खिड़की से बाहर झांकते हुए मैं दृश्य और परिदृश्य की दुनिया में खोया हुआ था। तभी साथ बैठे परिवार के एक सदस्य ने कहा, 'आप कुछ लेंगे?' मेरा ध्यान भंग हुआ, मैं बाहर की दुनिया से अंदर की दुनिया में आ गया। मैंने पलट कर देखा, मेरे सह यात्री नाश्ता ले रहे थे। मैंने 'ना' कहते हुए शिष्टाचार वश धन्यवाद किया। सामने वाली बर्थ पर एक परिवार और उनके बच्चे थे। मेरी बर्थ के दूसरे सिरे पर एक नवयुवती थी। उसके और मेरे बीच में एक लम्बी और सफेद दाढ़ीवाले मियाँ जी थे। मेरे मन में विचार आया कि रेलवे वाले भी बिना सोचे समझे बर्थ दे देते हैं। अगर दाढ़ी वाले मियाँ जी की जगह युवती की सीट होती तो कितना अच्छा होता? एक कवि और लेखक को कुछ नया सृजन करने का वातावरण तो मिलता। लेकिन उन्हें समझाए कौन? उन्होंने तो लिया और मन माफिक सीट रिजर्व कर दी। उन्हें सोचना चाहिए कि लम्बे सफर में यात्री सुकून से यात्रा करे। लेकिन इस दुनिया में किसी का सुख किसी से कहाँ देखा जाता है? रेलवे भी अपनी खलनायकी निभाने में पीछे क्यों रहे?

दाढ़ीवाले मियाँजी की तरफ जैसे ही मैंने दृष्टिपात किया, उन्होंने चेहरा मेरी ओर घुमाते हुए कहा कि अभी ये कौन-सा स्टेशन गया है? उनकी लम्बी दाढ़ी ने मेरे कंधे को छू लिए था, मैं सिमट कर पीछे होते हुए बोला, "बड़े मियाँ

आप मेरी खिड़की वाली सीट पर आजाइये और फिर इत्मीनान से स्टेशनों को देखते रहिएगा। मिर्ज़ा जी ने कुछ सोच समझकर मना करके मेरा दिल ही तोड़ दिया।"

गाड़ी तेजी से दौड़ी चली जा रही थी। उतनी ही तेजी से मैं कभी बाहर देखता तो कभी अंदर साथ बैठे यात्रियों को तथा विशेष रूप से उस युवती को जो एक लेखिका की तरह कुछ लिखने में व्यस्त थी। सपनों की नगरी मुंबई और पत्नी से मिलन का सुखद रोमांच तन-मन में था। नई दिल्ली स्टेशन से पश्चिम एक्सप्रेस (डीलक्स) शाम पाँच बजे चली थी और उसे दूसरे दिन अपराह्न दो बजे बोरीवली (मुंबई) स्टेशन पहुँचना था।

दूर क्षितिज से सूरज अलविदा कह रहा था, धीरे-धीरे प्रकाश कम हो गया। समय तेजी से बीत रहा था। साथ वाले सह यात्रियों ने खाना शुरु कर दिया। मुझे अकेला देखकर सभी ने मुझसे खाना खाने का अनुरोध किया। मैंने हाथ जोड़कर सभी का धन्यवाद किया। उनके अनुरोध में जो आत्मीयता थी, उस से लग रहा था कि रेलवे के यात्री यात्रा के समय एक परिवार का रुप ले लेते हैं। यही तो है भारतीय संस्कृति। मुझे मिर्ज़ाजी का खिड़की वाली सीट पर बैठने से मना करना भी समझ आ गया था क्योंकि अब मिर्ज़ाजी और वह युवती साथ ही खाना खा रहे थे।

मैंने रेलवे (पेंट्रीकार) का खाना खाया जो ठीक ही था लेकिन माँ के दुलार और पत्नी को मनुहार के भोजन की बात ही कुछ और होती है। लेकिन भला हो रेलवेवालों का जो भूखे-प्यासे यात्रियों को समय पर नाश्ता और भोजन तो उपलब्ध करा ही देते हैं।

रात-रानी ने अपनी काली चादर पूरी तरह फैला दी थी। बाहर का दृश्य अब कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। केवल रेल के पहियों की खट-खट और इंजन की रुक-रुक बजनेवाली सीटी की आवाज गंतव्य की ओर बढ़ने का संकेत दे रही थी। अपना बिस्तर लगा कर सब सो गए। चाय-कॉफी वालों का आवागमन भी रुक गया। अभी नींद लगी ही थी कि डिब्बे के गेट पर शोर-शराबे की आवाज से नींद उचट गई। जाकर देखनेपर पता चला कि कुछ लोग दरवाजे के पास खड़े थे। जिनके शोर और शरारतों से पास में सोए हुए यात्रियों को परेशानी हो रही थी। रिजर्व डिब्बे की बात कहने पर वे झगड़े पर आमादा थे। टिकट निरीक्षक महोदय का कहीं पता नहीं था।

निरीक्षक महोदय को खोज कर लाया गया तो पता चला कि उनमें कुछ तो रेलवे के ही कर्मचारी थे और कुछ बिना टिकटवाले अवांछित लोग। निरीक्षक महोदय ने उन्हें शांत तो कर दिया किंतु उनके खिलाफ कोई कार्रवाई करने से बच रहे थे। सुरक्षा कर्मचारियों का आस-पास नामोनिशान नहीं था। मैं सोचने को विवश था कि रात्रि के समय सोते हुए मुसाफिरों के जान-माल की सुरक्षा की जिम्मेदारी तो आखिर रेल विभाग की ही है?

बर्थ पर वापिस आकर पुनः निंदा देवी की आगोश में गए कुछ समय बीता ही था कि मेरे पेट में पीड़ा शुरु हो गई। कुछ देर तो किसी तरह सहन किया लेकिन दर्द बढ़ता ही जा रहा था और रेल के पहियों की आवाज अब कानों को चुभ रही थी। दर्द असहनीय हो गया तो कराहने लगा। सह यात्रियों की नींद भी खुल गई। उन्होंने लाईट जलाकर पूछा तो मैंने सकुचाते हुए अपनी पीड़ा के विषय में बताया तो किसी ने कुछ देने की बात कही तो किसी ने कुछ। क्योंकि हम भारतीयों के विषय में कहा जाता है कि हर व्यक्ति यहां डॉक्टर है। किसी को पीड़ा देखकर वह तुरंत उपचार बताता है। वैसे तो यह सही भी है क्यों कि कहा भी गया है कि 'पर हित सरस धर्म नहिं भाई'। दुख में इंसान ही इंसान के काम आता है। फिर यात्रा में तो सब एक परिवार के समान हो जाते हैं। ऊँच-नीच, जात-पात, धर्म, प्रांत सभी का भेद मिट जाता है। रेल विविधता में एकता का प्रत्यक्ष दिग्दर्शन कराती है।

मेरा दर्द बढ़ता ही जा रहा था। कभी मुझे माँ याद आती तो कभी पत्नी। बड़े मियाँ ने पोदीने का अर्क जैसा कुछ पानी में डाल कर दिया जिसे मैं पीना नहीं चाह रहा था। युवती के आत्मीय अनुरोध और सह यात्रियों की सलाह पर आखिर मैंने वह तरल पदार्थ पी ही लिया। यद्यपि रेलवे की चेतावनी बार-बार स्मरण हो रही थी कि अनजान यात्रियों से सावधान रहें और खाने-पीने की कोई चीज न लें। पर मरता क्या न करता। थोड़ी देर में मेरा दर्द कम हो गया।

बड़े मियाँ मेरे सिरपर हाथ फिराते हुए मुझे सांत्वना दे रहे थे। दर्द कम होने के साथ बड़े मियाँ खलनायक से अब मुझे फरिश्ते जैसे नजर आ रहे थे। यही तो है रेलवे का परिवार

सुख-दुख का साथी। मैं चैन की नींद सो गया। चाय कॉफी के स्वरों ने सुबह होने का एहसास करा दिया। दैनिक कार्य से निवृत्त हो कर चाय की चुस्की ले ही रहा था कि कुछ लोगों की इधर उधर आने जाने की हलचल ने ध्यान भंग किया। पता चला कि पास वाले डिब्बे में एक महिला को प्रेगनेंसी का तेज दर्द हो रहा था। कौतूहल वश मैं वहाँ गया तो उसके चारों तरफ भीड़ जमा थी। भगवान का शुक्र था कि एक यात्री डॉक्टर उस महिला को संभाल रही थी।

गाड़ी बड़ौदा स्टेशन पहुँचने ही वाली थी। रेलवे स्टाफ द्वारा बड़ौदा स्टेशन मास्टर को स्थिति से पहले ही अवगत करा दिया गया था। मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि गाड़ी के बड़ौदा स्टेशन पर रुकते ही स्टेशन अधिकारी लेडी डॉक्टर के साथ स्ट्रेचर लेकर वहाँ मौजूद थे। तुरंत महिला को सपरिवार उतार कर पास के हॉस्पीटल ले जाया गया। मैं रेल विभाग की इस तरह सेवा से अभिभूत हो गया। मैंने मनही मन रेल विभाग का आभार माना, अधिकारियों और कर्मचारियों की इस सेवा भावना और कर्तव्य परायणता से दो प्राणियों की जीवन रक्षा हो सकी। बाद में मुंबई पहुँचते-पहुँचते शुभ सूचना मिली कि उस महिला को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। उस महिला से कोई व्यक्तिगत संबंध न होते हुए भी इस खुशखबरी से मेरी आखों में हर्ष के आँसू थे।

यहाँ यह भी बताना चाहूँगा कि मेरे साथ वाले बड़े मियाँ और उस युवती ने दर्द से बेचैन उस महिला की बहुत मदद की थी क्यों कि उनके साथवाली युवती जिसे मैं लेखिका समझ रहा था, वह मास्टर ऑफ सर्जरी की अंतिम वर्ष की छात्रा थी।

बड़ौदा स्टेशन पर मेरा सारा गिला शिकवा दूर हो गया जो सफाई व्यवस्था को लेकर था। वहां पर डिब्बों तथा शौचालयों की जो सफाई हुई, उसे देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। पाइपों द्वारा गाड़ी में पानी भरा गया। स्टेशन पर यात्री यहाँ के प्रसिद्ध दूध का आनंद ले रहे थे। सफाई कर्मियों का व्यवहार भी बहुत सराहनीय था। जब गाड़ी चलने लगी तो वे यात्रियों को हाथ हिला कर अलविदा कह रहे थे।

भारत में रेलवे के सात हजार से अधिक स्टेशन हैं जहाँ से बारह हजार रेलगाडियाँ प्रतिदिन गुजरती हैं। इन रेलगाडियों में लगभग दो करोड़ यात्री रोज सफर करते हैं। जिनको ये रेलगाडियाँ अपनी मंजिल तक पहुँचाती हैं। न तो इनके 16 लाख कर्मचारी थकते है और न रेलें। अहर्निश भारतीय जनता की सेवा में तत्पर रहती हैं। विचारणीय और हैरतंगेज विषय हैं कि 65,000 (पैंसठ हजार) वर्ग किलोमीटर के नेटवर्क को बड़े सुचारु ढंग से संचालित किया जाता है। घड़ी की-सुइयों के साथ रेलें घूमती हैं। प्रायः रेलों के लेट होने की शिकायत भी रहती है लेकिन रेलवे व्यवस्था के साथ-साथ जनता भी इसके लिए दोषी है, प्रतिदिन देश में आवश्यक और अनावश्यक रूप से जंजीर खींची जाती हैं। बसों, ट्रॉली ट्रैक्टरों का बिना परवाह किए रेलवे क्रासिंग को पार करना जिसका परिणाम होता हैं दुर्घटनाएं और रेलों का लेट होना । एक रेल का लेट होना कई गाड़ियों को प्रभावित करता हैं। रेलों के लेट होने में कुछ हद तक रेलवे कर्मचारियों की लापरवाही और कार्य के प्रति निष्ठा की कमी भी है।

यात्री रेल गाड़ियों के साथ-साथ मालगाड़ियाँ भी अपना दायित्व निभाने में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। देश का आधा माल रेलवे द्वारा ही ढोया जाता है। तभी सारे देश में आवश्यक वस्तुओं की पहुँच संभव होती है।

रेल अब बड़ौदा स्टेशन छोड़ रही थी। स्टेशन का प्लेटफार्म बहुत ही साफ-सुथरा था। मैं गेट पर खड़ा स्टेशन का दृष्यावलोकन कर रहा था। गेट से अंदर जैसे ही सीट की तरफ मुड़ा एक सज्जन वाश बेसिन को गुटखा की पीक थूक थूक कर गंदा कर रहे थे। यही नहीं उन्होंने ट्रेन में इधर-उधर पीक से से डिजाइन भी बना दी थी। मैंने उन्हें टोकने का साहस किया तो मुझसे ही उलझ पड़े। साथ खड़े यात्रियों ने कोई प्रतिवाद नहीं किया। शायद तभी तो ऐसे लोगों का साहस बढ़ता है। कई लोगों ने तो यात्रा के दौरान खा-पीकर शेष बचे कचरे और अखबार आदि के टुकड़ों को बर्थ के आसपास ही गिरा रखा था।

मैं सोच रहा था जहाँ हम लेट-बैठ कर 15-20 घंटे रेल में बिताते हैं उसे स्वच्छ रखना भी हमारी जिम्मेदारी है आखिर हम कब सुधरेंगे? रेलवे भी क्या करे? हमें अपनी जिम्मेदारी का ख्याल आखिर क्यों नहीं है? दोष रेल विभाग को देते है। यात्रा के समय लोगों को रेलवे की बड़ी बड़ी जिम्मेदारियों की बात कहते और उपदेश देते तो सुना लेकिन यात्री की अपनी जिम्मेदारी? इस पर विचार क्यों नहीं? अगर

हम साफ-सफाई में रेल विभाग का सहयोग करें तो रेलें और प्लेटफार्म सभी स्वच्छ रहेंगे।

मैं टॉयलेट गया तो वहाँ का नल खुला हुआ था। मेरे से पूर्व जाने वाले यात्री ने उसे खुला ही छोड़ दिया था। पानी इस प्रकार बर्बाद होने से आखिर खत्म तो होगा ही एक की या कुछ लोगों की लापरवाही सब यात्रियों को भुगतनी पड़ती है।

टॉयलेट में तो कुछ मनचलों ने खुरचकर कुछ प्रेम संदेश भी लिख रखे थे। अगले से पिछले डिब्बे में तो झगड़ा भी हो गया था क्योंकि कुछ यात्री गुट बनाकर ताश खेल रहे थे और जोर-जोर से चीख पुकार कर भद्दे-भद्दे गाने भी गा रहे थे। सोते हुए यात्रियों ने विरोध किया तो वे मरने मारने पर उतारू थे। सुरक्षाकर्मियों ने आकर मामला सुलझाया। यात्रा में हमें सभ्यता और सलीके का व्यवहार करना आना ही चाहिए।

गाड़ी अब मुंबई की ओर सरपट दौड़ रही थी। डिब्बे में हँसी-मजाक, चुटकुले, राजनीति और साहित्य पर चर्चाएं यात्रा को आनंददायी बना रहे थे। खुशनुमा और अपनत्व की भावना से परिपूर्ण सफर अब समाप्ति की ओर था। यात्रियों में परस्पर इतनी घनिष्ठता हो गई थी कि विदा का समय पास आने से बिछुड़ने की सोच ने वातावरण को गंभीर बना दिया था।

आखिर मेरा गंतव्य स्टेशन बोरीवली आ ही गया। मैंने भारी दिल से सभी से विदा ली।

बड़े मियाँ और युवती को इंसानियत का धर्म निभाने के लिए विशेष रूप से आभार प्रकट किया। बड़े मियाँ ने भी सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देकर आत्मीयता और बड़प्पन का परिचय दिया। रेलवे की वह हमसफर युवती आज मुंबई की बहुत बड़ी डॉक्टर है। मेरा संबंध रेल जैसा ही उस परिवार से आज भी है।

यह कहना सर्वथा उपयुक्त ही है कि भारतीय रेलें भाईचारा, दया, करुणा और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को सार्थक करने वाली राष्ट्र की जीवंत रेखाएं हैं।

16 अप्रैल 1853 को मुंबई से थाने के बीच प्रारंभ रेलवे का सफर पूरे देश में अपना नेटवर्क स्थापित किए हुए है।

'चरैवेति-चरैवेति' का संदेश अपनी भारतीय रेल से ग्रहण कर मैंने अपनी रेल यात्रा सुखद एवं अविस्मरणीय यादों के साथ समाप्त की।

Email : dr.rmilan@gmail.com

प्रथम आलोक भट्टाचार्य साहित्य सम्मान

(आशय मुक्तांगन के पूर्व संपादक)

प्रसिद्ध कवि और मंच संचालक आलोक भट्टाचार्यजी की स्मृति में गौतम प्रतिष्ठान, मुंबई द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली हस्तियों को माटुंगा रेल अधिकारी क्लब में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया गया। इस सम्मान समारोह में प्रथम आलोक भट्टाचार्य साहित्य सम्मान से प्रसिद्ध कवि, अभिनेता और मोटिवेशनल स्पीकर श्री शैलेश लोढ़ा को सम्मानित किया गया। साथ ही प्रथम गूफी पेंटल बेस्ट कॉमेडियन अवार्ड, हास्य कलाकार सुनील पाल को दिया गया। कथा सम्मान से कथाकार श्री पाठक, पत्रकार सम्मान से श्री अभय मिश्रा, मंच सारथी सम्मान से श्री सुभाष काबरा जी, भाषा सेतु सम्मान से कवयित्री और लेखिका डॉ. सुलभा कोरे, राजभाषा सेवा सम्मान- श्री सलीम खान, खेल सम्मान से श्री अशोक शांडिल्य, विश्व बिलियर्ड्स चैंपियन तथा पर्यावरण संरक्षण सम्मान से सुश्री संगीता वाजपेई को सम्मानित किया गया।

इस सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष तथा वरिष्ठ साहित्यकार, श्री नंदलाल शर्मा उपस्थित थे। उनके कर कमलों से इन सभी हस्तियों को सम्मानित किया गया।

अन्य गणमान्य हस्तियों में उपस्थित थे, संस्कृति कर्मी श्री अशोक बिंदल, गीतकार अरविंद शर्मा राही, वरिष्ठ लेखक, डॉ. अमरेश सिन्हा।

समारोह की जानकारी गौतम प्रतिष्ठान के ट्रस्टी डॉ. मुकेश गौतम द्वारा दी गई तथा कार्यक्रम का संचालन, डॉ. रमेश यादव ने किया।

- आ.मु. डेस्क

डॉ. रमेश यादव

लोकग्राम से आनंदवन

यात्राओं का जीवन में अनन्य महत्व होता है जो हमेशा आल्हादित करती हैं। इससे नई ऊर्जा, नए प्रदेशों की जानकारी, आत्मिक शांति और जन जीवन का परिचय होता है। यात्राएं अक्सर हमारी सोच, हमारे नजरिए, उम्मीद, लक्ष्य, संवेदनाओं और कल्पनाओं को नया आयाम देती हैं। महानगरों के प्रदूषित जीवन से बाहर निकलकर खुली हवा में सांस लेने और किताबों को आँखों के कमरे में कैद करने का अनुभव कुछ अलहदा होता है।

यात्रा के साथ यदि कुछ जरुरी काम भी जुड़ जाए तो सोने पे सुहागा हो जाता है, जिसकी अक्सर मुझे तलाश रहती है। देशाटन के तहत कई रमणीय जगहों पर घूमने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है। कुछ वर्ष पहले की गई नागपुर-विदर्भ, वर्धा, भामरागढ़, गढ़चिरोली की यात्रा से जो आत्मिक संतुष्टि और सुखद अनुभूति मुझे प्राप्त हुई वह गजब की थी। अब भी अंतर्मन यादों के उस समंदर में जब गोते लगाता तो इस यात्रा से जुड़े कई संस्मरण मस्तिष्क में तैरने लगते हैं।

अवसर था नागपुर के पास स्थित 'कन्हान' में विदर्भ शाहीर परिषद द्वारा आयोजित 'लोक महोत्सव' में बतौर प्रमुख अतिथि उपस्थित होने का। महाराष्ट्र की लोक कलाओं पर मैं काम कर रहा था, अतः मेरे लिए यह किसी धाम की यात्रा से कम ना थी। मेरे साथ कला संस्कृति के प्रेमी मित्र अरविंद लेखराज और कलामिकल के गायक दिव्यांग (अंध) कलाकार मित्र पांडुरंग जी थे। यात्रा में जब गीत-संगीत और कविताओं का सुहाना साथ जुड़ जाए तो फिर क्या कहने।

महाराष्ट्र में तमाशा, शाहिरी और लावणी की बड़ी ही समृद्ध और लोकप्रिय परंपरा है। इसके समांतर विदर्भ में 'खड़ी गम्मत' नामक लोककला काफी लोकप्रिय है और वहाँ के लोग इस कला को आम तमाशा से भिन्न मानते हैं। इसकी

खास विशेषता यह है कि आज भी विदर्भ में महिला नृत्यांगनाओं की बजाय पुरुष ही स्त्री का साज-शृंगार करके मंच पर नृत्य करते हैं। इन्हें 'नाच्या पोरगा' कहा जाता है। इस कड़ी में 51 वीं खड़ी गम्मत महोत्सव का आयोजन लोककला के उपासक धरमदास भिवगड़े और डॉ. हरिश्चंद्र बोरकर के नेतृत्व में कन्हान में किया गया था। नागपुर शहर से लाल परी बस में सफर करते हुए ग्रामीण जीवन और खेतों के दृश्य मन को लुभा रहे थे। उस महोत्सव में आस-पास के परिसर से

कुल 51 पार्टियों को 'खड़ी गम्मत' कला प्रदर्शन के लिए आमंत्रित किया गया था, जिसे 'लोकग्राम' नाम दिया गया था। बड़ा ही भव्य, मनोरंजन और लोक जागृति का यह अनूठा आयोजन था। पांच हजार से अधिक श्रोतागण इसके साक्षी बने थे जो इसे मेले का स्वरूप प्रदान कर रहे थे। विदर्भ में दंडार, डहाका, दंडिया नृत्य, दंडीगाण, झुमड़ी, गंगासागर इत्यादि लोककलाओं का और रंगभूमि पर झाड़ीपट्टी बोली के नाटक भी बड़े लोकप्रिय हैं। विदर्भ को एक ओर वर्षा के अभाव में सूखाग्रस्त खेतों तो दूसरी ओर जंगल का अनमोल खजाना प्राप्त है। नागपुर जो कि महाराष्ट्र की उपराजधानी है और 'संतरे का शहर' के रूप में भी प्रसिद्ध है। मेरे लिए यह बड़ा ही सुखद और प्रेरणादायी अनुभव रहा। वहां की माटी, भाषा, संस्कृति, जन-जीवन, खान-पान, पैदावार, परिधान, देवस्थान, जंगल सफारी, सामाजिक- ऐतिहासिक, भौगोलिक स्थिति और कुछ प्रमुख पर्यटन स्थल देखने का भरपूर लाभ हमने इस यात्रा के दौरान उठाया जो कि यात्राओं का उद्देश्य होता है।

खड़ी गम्मत महोत्सव का आयोजन एक बड़े मैदान में किया गया था जो मुझ जैसे शहरी के लिए किसी आश्चर्य से कम ना था। वैसे सुनकर और पढ़कर विदर्भ की लोककलाओं की जानकारी थी मगर वास्तव में प्रत्यक्षदर्शी के रूप में इसका अनुभव बड़ा ही विस्मयपूर्ण था। इतनी बड़ी संख्या में दर्शकों का आना ही अद्भुत अनुभव था। स्त्री पात्र की भूमिका निभाने वाले 'नाच्या पोर्‍या' को देखकर एक पल के लिए यह यकीन करना मुश्किल था कि वे पुरुष हैं। ये कलाकार लगभग 15–16 साल की उम्र से ही स्त्रियों जैसे अपने आपको सुगठित रखते हैं। साज-शृंगार करके मंच पर जब अपनी कमसीन अदायगी से लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं तो लोग चकित हो जाते हैं। उनके साथी कलाकार शाहीर के रूप में उनके साथ गायन पेश करते हैं। इन कलाकारों को सैकड़ों गीत कंठस्थ होते हैं और श्रोताओं का मन मोह लेते हैं।

दो दिन के महोत्सव के बाद अब बारी थी परिसर घूमने की। विदर्भ में जाएं और वर्धा स्थित गांधीजी का सेवाग्राम आश्रम, भू-दान आंदोलन के प्रणेता विनोबा भावेजी का पवनार स्थित तपोवन आश्रम, वरोरा स्थित बाबा आमटे का आनंदवन, भामरागढ़-हेमलकसा स्थित डॉ. प्रकाश आमटे का लोकबिरादरी प्रकल्प, अभय और रानी बंग के 'सर्च' संस्थान जैसे धाम ना जाएं तो यात्रा अपूरी रह जाती है। प्रत्येक प्रोजेक्ट का वर्णन एक किताब का विषय है इसलिए यहाँ सिर्फ संकेत ही काफी है, ऐसा मुझे लगता है।

चंद्रपुर स्थित 'ताड़ोबा' की जंगल सफारी अद्भुत यात्रा कही जा सकती है। हम लोग दिन में यात्रा और देर शाम को स्थानीय लोगों तथा मित्रों के साथ गीत-संगीत तथा कविताओं की महफिल सजाना वास्तव में गजब का अनुभव था। इसे हम संयोग कह सकते हैं। विदर्भ का झुर-भाकरी, सावजी खाना, मिसल-पाव, सिंघाड़ा, गंडेरी (ईख के कटे टुकड़े) तर्रीदार पोहे, पान की बजाय खर्रा, मीठे पानी की मछलियों का आस्वाद हमने खूब उठाया। सावजी का तीखा खाना खाने के बाद तो नानी याद आ जाती है।

नागपुर से एक घंटे के सफर बाद बस द्वारा वरोरा जाया जा सकता है, यहां ऋषितुल्य बाबा आमटे द्वारा स्थापित 'आनंदवन' मौजूद है। पूर्व सूचना के बगैर आनंदवन में ठहरना संभव नहीं हो पाता है पर ठाकरे जी की मौजूदगी से हमारी समस्या हल हो गई क्योंकि वे आनंदवन के विद्यार्थी रह चुके हैं। दो दिनों तक उस पवित्र आश्रम में ठहरने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ जो नागपुर से लगभग दो घंटे की दूरी पर है। आनंदवन में बाबा आमटे ने कुष्ठरोगियों के लिए शून्य से स्वर्ग का निर्माण किया है। वह भी ऐसे दौर में जब इसे संसर्गजन्य महारोग माना जाता था और दवाइयां उपलब्ध नहीं थीं। ऐसे रोगियों को अंधविश्वास के तहत घर-परिवार और समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता था। पर अब ऐसा नहीं है। समय के साथ विज्ञान ने इस बात को सिद्ध कर दिया है। यहां आमटे जी ने कुष्ठरोगियों का एक बड़ा गाँव बसाया है जिसे अब ग्राम पंचायत का दर्जा प्राप्त है। यहां के कुष्ठरोगी स्वयंपूर्ण हैं वे किसी पर आश्रित नहीं हैं। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, खेती, बागवानी, लघु उद्योग, रोजगार के साधन, हाट-बाजार, कला, संस्कृति, विज्ञान, गौशाला, पुस्तकालय, डैम, बिक्री केंद्र इत्यादि सब कुछ है जो सिर्फ और सिर्फ कुष्ठरोगियों द्वारा संचालित है। पास में ही छोटा सा अभयारण्य भी है। इसी परिसर में आमटेजी की समाधी भी है जहां जाकर श्रद्धासुमन अर्पित करने मात्र से ही आत्मीय तृप्ति का बोध होता है।

कुष्ठरोगियों की सेवा और पुनर्वसन रूपी यज्ञ में कर्मयोगी आमटेजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन की आहुति दी है। उनकी अर्धांगिनी साधनाताई आमटे ने भी बड़े ही समर्पण भाव से उनका साथ निभाया। हमारा सौभग्य था कि साधनाताई आमटे के साथ हमें जलपान करने का मौका मिला। उनके पुत्र डॉ. विकास आमटे, बहू डॉ. भारती और उनके बच्चे तथा कई स्टाफ से भी मिलने एवं जानकारी प्राप्त करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अपने इस महान कार्य के लिए आमटे परिवार की ख्याति न केवल देश बल्कि विदेशों में भी है। कई राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर के पुरस्कारों एवं सम्मानों से उन्हें नवाजा गया है। आज उनके परिवार की तीसरी पीढ़ी इस सेवा में समर्पित है। इन उपेक्षितों के संरक्षण, विकास और सामाजिक न्याय का जो ज्वलंत एवं संघर्षकारी इतिहास बाबा आमटे ने लिखा, वह अमिट है। इस प्रोजेक्ट के अलावा उसी क्षेत्र में छोटे-बड़े कुल 28 प्रोजेक्ट विविध उद्देश्यों के साथ उन्होंने शुरू किए। इनमें सोमनाथ, अशोकवन, नागेपल्ली, भामरागड़ इत्यादि प्रमुख हैं।

आनंदवन में हमने स्वस्थ कुष्ठरोगियों को उत्पादन का काम करते देखा। अलग-अलग प्रकार की चीजें यहां बनाई जाती हैं और फिर उन्हें हाट बाजारों में भेजा जाता है। इनमें दुग्ध पदार्थ, चर्म से निर्मित सामान, कपड़े, फर्नीचर, कृषि, कंस्ट्रक्शन, लेखन सामग्री इत्यादि का समावेश। संधि निकेतन, उत्तरायण, युवाग्राम, श्रद्धावन, मुक्ति सदन, साईबाबा दवाखाना, कुष्ठरोगी अस्पताल इत्यादि उपक्रमों को देखकर आमटेजी की दूरदर्शिता, कल्पकता और समर्पण का अनुभव होता है। मूक, बधिर और अंध बच्चों के लिए अलग-अलग स्कूल हैं, जहां उन्हें मुफ्त में निवासी शिक्षा दी जाती है। जो लोग विकलांग हैं उन्हें तीन पहिया साइकिलें मिली हुई हैं। जो रोगी पूर्णत: स्वस्थ हो चुके हैं और सामाजिक कारणवश अपने परिवार को लौटने में असमर्थ हैं, ऐसे लोगों के लिए अलग से बस्ती बनाई गई है, जिसकी जनसंख्या तीस हजार के आस-पास है। उनकी पसंदानुसार आपस में शादियां भी कराई जाती हैं ताकि जीवन की संध्या-छाया में वे तन्हा ना रहें। कुष्ठरोगियों के अलावा अन्य विकलांगों के भी पुनर्वसन की यहां व्यवस्था है। विकलांग बच्चों का 'स्वरानंद' ऑर्केस्ट्रा अपने आप में बड़ा ही सुरीला और अनुपम अनुभव है। प्रोफेशनल कलाकारों के

टक्कर का यह स्वरानंद, स्वर्गानंद की अनुभूति देता है।

यहां के उपेक्षितों को जीवनोपयोगी प्रशिक्षण मान्यवर शिक्षकों द्वारा दिया जाता है। कई तरह के मेडिकल कैम्प प्रति वर्ष लगाये जाते हैं, जिनमें देश के जाने-माने डॉक्टर अपनी सेवाएं ऋणानुबंध के तहत प्रदान करते हैं। इसका लाभ आस-पास के क्षेत्र, आन्ध्र प्रदेश और मध्यप्रदेश के लाखों लोग उठाते हैं। इसमें प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक तात्याराव लहाने का विशेष उल्लेख किया जा सकता है जो प्रति वर्ष शिविर के दौरान आंखों की हजारों शल्य चिकित्सा मुफ्त में करते हैं। आनंदवन में रहने और सात्विक भोजन की उत्तम व्यवस्था है। बशर्ते आप वहां पूर्व सूचना देकर जाएं। वर्धा स्टेशन से यह नजदीक है।

वर्धा में महात्मा गांधीजी का सेवाग्राम आश्रम भी है। गांधीजी स्वयं कुष्ठ रोगियों की सुश्रुषा किया करते थे, इससे हम परिचित हैं। सेवाग्राम में जाने पर गांधीजी की स्मृतियां ताजी हो जाती हैं। इस आश्रम की शांति और स्वच्छता देखते ही बनती है। बापूजी की जीवनी पर आधारित प्रदर्शिनी छोटी-छोटी कुटियों में बखूबी सजाई गई है जिसे देखते हुए मन भर आता है। विनोबा भावे का तपोवन आश्रम भी यहीं पास में है। इसे देखना भी एक प्यारा अनुभव है। वर्धा में पंच टेकरी की पहाड़ियों पर बना अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की शान भी कुछ और ही है। यहाँ का अनुभव भी हर भारतीय को लेना चाहिए।

आमटेजी के बेटे डॉ. प्रकाश अपनी पत्नी डॉ. मंदाकिनी के साथ भामरागड़ में 'हेमलकसा' नामक जगह पर 'लोक बिरादरी' प्रोजेक्ट की जिम्मेदारी को बखूबी संभाल रहे हैं। उनके दो बेटे और बहुएं भी इस गोवल कार्य में कंधे से कंधा लगाकर काम कर रहे हैं। बल्कि उनके नाती-पोते भी अब इस काम में रुचि लेने लगे हैं। लोकबिरादरी प्रोजेक्ट पूरी तरह से आदिवासियों के स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और उनके उत्थान तथा रोजगार के लिए हर तरह से समर्पित है। यह स्थान आनंदवन से 130 कि.मी. की दूरी पर है। वहां जाने के लिए बड़े ही दुर्गम जंगल के रास्ते से गुजरना पड़ता है। प्रकाश आमटे स्वयं और उनका परिवार टेक्नोलॉजी के इस आधुनिक दौर में भी बनियान एवं हाफ पैंट-नुमा चड्डी पहनकर आदिवासियों की सेवा में समर्पित हैं। इस परिधान को लेकर उनका मानना यह है कि आदिवासी जंगली पशुओं से नहीं डरते पर कपड़े पहनने वाले इंसानों से काफी डरते हैं। इंसान उन्हें पशुओं से ज्यादा खतरनाक लगते हैं। वहां पर उनके द्वारा पाले गए विविध पशु-पक्षी लोगों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है। विशेषतः चीता, अजगर जैसे सांप, बंदर, भालू, मगरमच्छ, हिरणों की टोली, छोटा-सा तालाब, उनमें तैरने वाली मछलियां, कछुए, विविध पक्षी, चारों ओर की हरियाली, जंगल-नदी आदि स्वर्गानंद की अनुभूति कराते हैं। चीता, बाघ, सर्प आदि जैसे हिंसक पशुओं के साथ प्रकाश जी का खेलना, उन्हें खाना खिलाना, बच्चों की तरह सहलाना आदि बड़ा रोमांचकारी एवं अद्भुत है। प्रकाश जी अपना हाथ बाघ और चीते के जबड़े में डाल देते हैं। हिंसा करने को बजाय वे पशु उन्हें स्नेहवत चाटने लगते हैं। क्या इस संस्मरण को कोई कभी भूल सकता है?

प्रकाश जी के कार्य और सादगी को देखकर किसी महात्मा का आत्मानुबोध होता है। दूसरे शब्दों में कहें तो पृथ्वी पर जीवित भगवान की अनुभूति उनके रूप में की जा सकती है, इतना विशाल और महान उनका कार्य है। यहां आवास और भोजन की उत्तम व्यवस्था है जिसके लिए कोई शुल्क नहीं है, बशर्ते आप पूर्व सूचनानुसार वहां जाएं। और हां इसका ख्याल रहे कि ये सब पिकनिक स्पॉट नहीं हैं बल्कि जीवन दर्शन, त्याग और समर्पण की अनुभूति करने वाले लोग ही इसका महत्व समझ सकते हैं।

गढ़चिरोली में ही अभय बंग और रानी बंग का 'सर्च' नामक प्रोजेक्ट है जिसे देखना भी एक अद्भुत अनुभव है। चन्द्रपुर स्थित कोपले को खदान जिसे 'ब्लॉक डायमंड यूनिट' कहा जाता है वहां से 50 कि.मी. की दूरी पर है। महालक्ष्मी का प्राचीन मंदिर भी इसी क्षेत्र में है। पूरा परिसर चारों ओर से जंगल और पहाड़ियों से घिरा है। कलकल करती नर्मदा नदी इस भूमि को पावन बनाती है। प्रसिद्ध रामटेक मंदिर भी यहीं है, जहां की पहाड़ी पर बैठकर महाकवि कालीदास जी ने 'मेघदूतम' नामक कालजयी महाकाव्य की रचना की थी। आदिवासियों और अपने पिछड़ेपन के लिए जाना जाने वाला यह क्षेत्र नक्सलवादियों के आंदोलन के लिए भी जाना जाता है। इसी क्षेत्र में प्रसिद्ध 'ताडोबा' है जहां जंगल सफारी की जा सकती है। 'पेंच' जंगल सफारी का आनंद भी यहां से लिया जा सकता है। नागपुर जाने के बाद अपनी सुविधा और पसंद के अनुसार यात्रा की बनाई जा सकती है। नागपुर शहर के आस-पास गणपति मंदिर, प्रसिद्ध दीक्षाभूमि, झील आदि देखे जा सकते हैं।

इस पूरी यात्रा में अंध मित्र पांडुरंग हमें पर बोझ नहीं बल्कि हमारे सारथी रहे। अपने क्लासिकल गीतों से हमें, आनंदवन एवं हेमलकसा की बातियों के वर्णन से हमें सराबोर करते रहे और हमारी आंखों से प्रकृति का लुत्फ उठाते रहे। मनोरंजन, रोचक, अध्ययन और रोमांच भरी यह यात्रा मेरे लिए आज भी यादगार बनी हुई है। सामाजिक ऋणानुबंध का एक श्रेष्ठ पाठ पढ़ने और जीवित भगवान से मिलने का सुनहरा अवसर हमें मिला जिसे हम ताउम्र भुला नहीं सकते।

डॉ. रमेश चव्हाण, मुंबई

डॉ. रेखा जैन

भागदौड़ भरी जिंदगी में पर्यटन से सुकून

आज की इस भागदौड़ भरी जिंदगी मे पर्यटन एक गतिशील और बहुआयामी वैश्विक बात है जहां लोग अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी से परे शांति सुकून का अनुभव करते हैं जिसे शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है। पर्यटन कई देशों की अर्थव्यवस्थाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, रोजगार, राजस्वसृजन और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में योगदान देता है। पर्यटन उद्योग में परिवहन, आवास, आकर्षण और सेवाओं सहित गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जो सभी एक जटिल पारिस्थितिकि तंत्र बनाते हैं। समाज में हर एक व्यक्ति के अंदर पर्यटन अथवा यात्रा करने की धुन सवार रहती है। लेकिन पर्यटन अथवा यात्रा का महत्व क्या है? जिंदगी का असली मजा तो घूमने फिरने में है, अपने आसपास और हर उस प्रसिद्ध जगह का कोना कोना देखना कई लोगों का सपना होता है।

भारत एक विशाल देश है। जहां जगह जगह पर प्राकृतिक और मानव निर्मित स्थल है। जो हमें अपनी ओर आकर्षित करते है। किसी भी स्थान पर यात्रा के उद्देश्य से जाना पर्यटन कहलाता है, किसी भी क्षेत्र का वह भाग जो देखने लायक होता है। तथा उसे देखने लोग आते है उसे पर्यटन स्थल कहते है। भारत में अनेक पर्यटन स्थल है। देश में हर साल लाखों की संख्या में पर्यटक आते है।

पर्यटन वह होता है जो आपके दैनिक चिंताओं से दूर करता हो, जहां आप अपने अंतर्मन को पूर्ण रूप से आजाद तथा सुकून भरा पाते हैं। यही कारण है कि हर कोई अपना समय निकालकर पर्यटन के लिए निकल पड़ता है। काफी लोगों के जीवन में पर्यटन शौक की तरह होता है। पर्यटन स्थल पर जाकर हम वहां के अलग अलग इलाकों, लोगों, परिवेश

के बारे में वहां रहकर जान सकते है। वहां का रहन-सहन, बोलियां, वेशभूषा तथा संस्कृति के बारे में जानने का अवसर हमें मिलता है।

पुस्तकीय ज्ञान उतना प्रभावी नहीं होता जितना कि प्रत्यक्ष ज्ञान। ऐसे में पर्यटन से हमें देश-विदेश के खान-पान, रहन-सहन तथा सभ्यता-संस्कृति की जानकारी मिलती है। पर्यटन के जरिए पूरा देश और विश्व अपना-सा प्रतीत होता है। राष्ट्रीय एकता बढ़ा ने में पर्यटन का बहुत बड़ा योगदान है। इतना ही नहीं किसी भी प्रकार की जिज्ञासा को शांत करने में पर्यटन लाभकारी है। वह हमारे मन को ही शांत नहीं करता बल्कि यह देश को आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक जानकारी भी प्रदान करता हैं, हमारा तनाव दूर हो जाता है और जीवन में आनंद झलकने लगता है। पर्यटन से

भारत के सभी राज्यों के ऐतिहासिक स्थलों, नदियों, महलों, भौगोलिक स्थिति तथा महत्वपूर्ण स्थलों के बारे में जानकारी मिलती है। तथा स्थलों की सारे जीवन की पर्यटन के सफर को याद दिलाती है।

पर्यटन-स्थल अनेक प्रकार के हैं। जिसके अन्तर्गत कुछ प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विख्यात हैं, जैसे- प्रसिद्ध पर्वत-चोटियाँ, समुद्र-तल, वन-उपवन। वहीं कुछ पर्यटन-स्थल धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे हरिद्वार, वैष्णो देवी, काबा, कर्बला आदि। इसके साथ ही कुछ पर्यटन-स्थल ऐतिहासिक महत्व के हैं, जैसे लाल किला, ताजमहल आदि। इसके साथ ही कुछ पर्यटन-स्थल वैज्ञानिक, सांस्कृतिक या अन्य महत्व रखते हैं। इनमें से प्राकृतिक सौंदर्य तथा धार्मिक महत्व के पर्यटन-स्थलों पर सर्वाधिक भीड़ रहती है।

जब हम एक पर्यटन यात्रा करते हैं, तो हमारे मन में और यात्राएँ करने की जिज्ञासाएं बढ़ जाती है।

इसके अलावा पर्यटन स्थल आज के समय का एक व्यवसाय है, जो यात्रियों द्वारा चलाया जाता है। पर्यटन स्थल पर अनेक लोग ऐसे होते हैं, जो पर्यटन करवाने के लिए होते है। तथा कई लोग सुरक्षा के लिए होते हैं।

कुछ गाईड वहां आने वाले यात्रियों से टिकट वसूल करते है। जिससे पर्यटन स्थल की सुरक्षा की जा सकें। कुछ गाईड वहा की व्यवस्था के लिए होते है। और कुछ गाईड सुरक्षा के लिए तैनात रहते है।

आज कुछ लोग ऐसे भी है, जो पर्यटन स्थलों पर जाकर शूटिंग करते है, तथा अपना व्यवसाय चलाते है। कुछ लोग यहाँ के वातावरण का आनंद लेते है।

पर्यटन स्थलों के खूबसूरत नजारे जैसे कि कहीं वृक्षों के घने वन तो कहीं पहाड़ी इलाके कहीं समुद्र तो कहीं किले और स्मारक तो कहीं विशाल मंदिर बने होते है।

देश के कई राज्यों में जहां प्रकृति के खूबसूरत नजारे और पर्वत है, वहां ज्यादातर पर्यटन व्यवसाय ने अपनी जगह बना ली है। पर्यटन उद्योग का कारोबार बेहद अच्छा चल रहा है।

आधुनिक समय में पर्यटन का एक और लाभ यह है कि यह रोजगार का अच्छा साधन बन चुका है। भारत में भी यह एक बड़े सेवा उद्योग का रूप ले चुका है। पर्यटक को उनके मुताबिक आरामदायक यात्रा प्रदान करवाने के लिए उन्हें (पर्यटन एजेंसियां, दुकानों इत्यादि) काफी पैसे मिलते है।

भारत की एक अपनी पहचान है, ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक इसलिए पर्यटन से अनगिनत फायदे है। विदेशों से कई लोग हमारे देश की सुंदरता को निहारने आते है। इससे पर्यटन व्यवसाय को बहुत लाभ होता है। पर्यटन कई तरह के होते हैं। कुछ स्थान पर्वतों के लिए प्रसिद्ध हैं तो कुछ कभी ना खत्म होने वाले, कुछ अपने वनों के लिए।

विदेशों से आने वाले पर्यटकों तथा पर्यटन व्यापार से हमारे देश को विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है जो कि देश के लिए बेहद फायदेमंद होती है। हर वर्ष विदेशों से कई लोग हमारे देश की खूबसूरती और संस्कृति को देखने आते है।

पर्यटन से न सिर्फ मनोरंजन होता है बल्कि यह शिक्षा एवं अनुभव प्राप्त करने का भी एक अच्छा साधन है। इसलिए स्कूल कॉलेजों में हर वर्ष छात्रों को पर्यटन के लिए किसी न किसी स्थान पर ले जाया जाता है। पर्यटन से व्यक्ति में नवजीवन का संचार होता है।

वर्तमान में तनावपूर्ण जीवन की वजह तथा भागदौड़ में पर्यटन का महत्व बढ़ गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यस्ततम जीवन में से समय निकालकर किसी न किसी स्थान पर घूमने के लिए जाते रहता है। इससे उस व्यक्ति के जीवन के वातावरण में भी बदलाव आता है।

पर्यटन से जीवन में उदारता व सहिष्णुता की भावना आती है। साधु-संत जो सामान्य मानव से ऊपर स्थान प्राप्त करते हैं, उसका कारण उनकी घुमक्कड़ी ही है, जिसके चलते वह हर प्रकार का ज्ञान हासिल करने में सक्षम होते हैं।

पर्यटन के वजह से हमें कई संस्कृतियों के बारे में जानकारी मिलती है। यात्रा के समय कई स्थानीय लोगों से रूबरू होने के मौका मिलता है। पर्यटन के कारण लोगों में हिम्मत, रोमांच और मनोरंजन का संचार होता है।

भारत में प्राय: हर राज्य पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं। आंकड़े बताते हैं कि आगरा का ताजमहल देखने

प्रतिवर्ष लाखों देशी विदेशी पर्यटक आते हैं।

दुनियाभर के पर्यटकों के समक्ष भारत को एक उत्कृष्ट पर्यटन स्थल के रूप में पेश करने वाले 'अतुल्य भारत' विज्ञापन अभियान को ब्रिटेन द्वारा सर्वाधिक सृजनात्मक मीडिया अभियान के रूप में सम्मानित किया गया है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय ने पुरानी हवेलियों, किलों, दुर्गों के अलावा 1950 से पूर्व निर्मित आवासीय भवनों में चल रहे होटलों के लिए हेरिटेज होटल नाम से प्रचलित किया है।

इसके अलावा भारत सरकार ने 2002 में नई राष्ट्रीय पर्यटन नीति घोषित की है, जिसमें देश को इस क्षेत्र में एक ग्लोबल ब्रांड बनाने की बात कही गई है।

फिलहाल भारत मनमोहक दृश्यों, ऐतिहासिक महत्व के स्थानों तथा शानदार शहरों, सुनहरे तटों, धुंध वाले पर्वतों, रंग बिरंगे लोगों, समृद्ध संस्कृति और त्योहारों का देश है। यह विदेशी यात्रियों के लिए लोकप्रिय गन्तव्य के रूप में अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर अपनी पहचान बना रहा है।

पर्यटन से हम भागदौड़ भरी जीवन की परेशानियों को भूलकर एक रचनात्मक प्रवृत्ति जागृत होती है, जिस से जीवन में अनेक रास्ते खुल जाते है और हम कुछ समय तक शांति और सुकून का अनुभव करते हैं। भारत में कई ऐसे ऐतिहासिक पर्यटक स्थल हैं, जो हमें हमारे गौरवशाली इतिहास को संजोये हुए हैं, उनमें अनेक दुर्ग, स्मारक और छतरियां शामिल हैं। इसलिए पर्यटन के रूप में अनेक संभावनाओं वाला भारत वर्तमान में अच्छे पर्यटन स्थल के रूप में विश्व में सभी को आकृष्ट कर रहा है।

डॉ. रेखा जैन (सेवानिवृत्त प्रोफेसर)
बी-17, तीसरी मंजिल सामने
पार्क नगर, तिलक नगर, नई दिल्ली-110018

हृषिकेश शरण

किसका जीवन श्रेष्ठ है? संकिच्च सामनेर की कथा

एक बार तीस भिक्षु शास्ता से ध्यान-विपश्यना की साधना लेकर श्रावस्ती से एक सौ बीस योजन दूर एक गांव में रहने लगे। उस गांव के पास ही एक घना जंगल था। उसमें कुछ लुटेरे ठहरे हुए थे। वे देवताओं को खुश करने के लिए एक नर-बलि देना चाहते थे। अतः वे विहार में गए और भिक्षुओं से कहा कि कोई एक भिक्षु नर-बलि के लिए चले। अधिकांश भिक्षु डरे हुए थे पर एक ने हिम्मत जुटाकर जाने की इच्छा व्यक्त की। वह सात वर्ष का ही था पर उसने अर्हत्व प्राप्त कर लिया था। उन्होंने संकिच्च से कहा था कि अगर ऐसी बात है तो वह डाकुओं के साथ चला जाए। अतः वह उन लुटेरों के साथ चल गया। उसके जाने से भिक्षु बहुत दुःखी हुए।

उधर जंगल में लुटेरों ने बलि की तैयारी शुरू कर दी। जब सारी तैयारी हो गई तो लुटेरों के नेता ने मारने के प्रयोजन से तलवार उठाई। उस समय सामनेर ध्यान-विपश्यना में लीन था। उसने तलवार से वार किया, तलवार मुड़ गई और सामनेर का कुछ भी नहीं बिगड़ा। मुखिया ने तलवार की धार तेज की और इस बार फिर वार किया पर इस बार भी तलवार मुड़ गई। लुटेरे आश्चर्यचकित और भयभीत थे। वे सभी सामनेर के पैरों पर गिर पड़े और प्रव्रज्या की अनुमति मांगी। उन्हें प्रव्रज्या दे दी गई। सामनेर उनके साथ तीस भिक्षुओं के पास वापस आ गया। वे उसे देख बहुत खुश हुए। तब वे सभी शास्ता और सारिपुत्त के पास जेतवन पहुंचे।

तथागत को सारी बात की जानकारी दी गई। तब उन्होंने समझाया, 'जो दुराचारी और असंयमी है उसका सौ वर्ष जीना भी बेकार है पर सदाचारी और संयमित होकर एक दिन भी जीना श्रेयस्कर है।

पुष्पेश कुमार पुष्प

झंझावतों से जूझती वह लड़की

आज काफी वर्षों बाद कॉलेज में साथ पढ़ने वाली मोना अचानक शहर के बीच चौराहे पर मिल गयी। आज भी वही मुस्कान और आँखों में वही सम्मोहन। संकोची और शर्मीली स्वभाव की मोना मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी। मुस्कुराकर बोली- "पहचाना।"

मैं मुस्कुराकर बोला- "मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूं। तुम तो मेरी मुंहबोली बहन हो।"

बातों ही बातों में पूछ लिया- "आजकल कहां रहती हो और तुम्हारे कितने बाल- बच्चे हैं? कभी फोन भी नहीं किया।"

"जीवन तो एक दुखांत नाटक है, परिमल! दुखों को झेलते-झेलते अब अपने आपको दुखों से एकाकार कर लिया है।" वह बनावटी मुस्कान के साथ बोली।

"मैं तुम्हारे कहने का मतलब नहीं समझा, मोना।"

उसने कहना शुरु किया- "परिमल! जब मैं पैदा हुई, तो पिता का साया उठ गया। मां ने काफी कष्ट उठाकर मेरा पालन-पोषण किया और मेरी पढ़ाई-लिखाई करवाई। कॉलेज से निकलते ही मेरी शादी हो गई, लेकिन मेरे पति और सास-ससुर दहेज के लालची थे। दहेज न मिलने के कारण उन लोगों ने मेरे जीवन को नरक बना दिया। मेरे पति दूसरी शादी करना चाहते थे। वे तलाक के लिए मेरे ऊपर दबाव बना रहे थे और मैंने भी उन्हें सारे बंधनों से मुक्त कर दिया।"

मेरी उत्सुकता जागी- "उसके बाद तुम कहां गयी?"

"मैं अपनी मां के पास चली आयी। मां तो पहले से ही आर्थिक तंगी के कारण चाचा पर बोझ बनी हुई थी। मेरे वहां जाने के बाद मां पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। मां मेरी चिंता में घुलती हुई स्वर्ग सिधार गयी। चाचा ने उसी दिन मुझे घर से निकाल दिया। मैं घर के एक कोने में रहने के लिए आरजू मिन्नत करती रही, लेकिन उनका कठोर दिल नहीं पिघला। मैं पटना आ गयी। यहीं एक स्कूल में पढ़ाकर और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर जीवन गुजार रही हूं।" वह सिर झुकाये बोली जा रही थी।

उसकी करुण कथा सुनकर मैं बोला- "इस प्रकार कष्ट झेलने से अच्छा है कि तुम भी दूसरी शादी कर अपना घर बसा लो। खुशियां तुम्हारे कदम चूमेंगी।"

मेरी बातें सुनकर वह मुस्कुराते हुए बोली- "परिमल! खुशी पाने के लिए उसकी कीमत चुकानी पड़ती है और उस खुशी की कीमत चुकाने के लिए मेरे पास है ही क्या? जीवन की कुर्बानी हमेशा मरकर ही नहीं, जीते-जी हंसकर भी दी जाती है।"

"तुमने अकेले इतना कष्ट सहा। एक बार भी मुझसे नहीं मिली। शायद मैं तुम्हारे किसी काम आ जाता। यदि अब भी रुपये-पैसों की जरुरत हो, तो मुझसे कहो। आखिर मैं तुम्हारा भाई हूं। एक भाई का भी तो कुछ कर्तव्य बनता है।" मैं उसकी ओर देखते हुए बोला।

"मुझे यह सुनकर अच्छा लगा कि मेरा एक भाई भी है। यह आश्वासन ही बहुत है। मुझे किसी से कुछ पाने की कोई कामना नहीं है। तुम मुझे यही आशीर्वाद दो कि तुम्हारी बहन झंझावतों को झेलते हुए संघर्ष के पथ पर अग्रसर रहे।" इतना कहकर वह आगे बढ़ने लगी।

तभी मैंने उसे रोककर कहा- "तुम अपना मोबाइल नं. नहीं दोगी।"

वह मुस्कुराकर बोली- "मेरे पास मोबाइल नहीं है। हां, स्कूल का फोन नंबर देती हूं। उस पर बात हो जाएगी।"

मैंने भी उसे अपना मोबाइल नंबर दे दिया। अक्सर मैं अपनी मुंह बोली बहन से बात करता रहता था। लेकिन काम

अधिक होने के कारण मैं उसे काफी दिनों से फोन नहीं कर पा रहा था और उसे लगभग भूल सा गया।

अचानक एक दिन उसके प्रिंसिपल का फोन आया। प्रिंसिपल ने बताया कि मोना अस्पताल में भर्ती है। उसकी स्थिति नाजुक बनी हुई है। वह अंतिम सांसें गिन रही है। आपको देखने की इच्छा है। उसे ब्लड कैंसर है। उसका बचना मुश्किल ही है। आप शीघ्र आइए।

यह सुनते ही मैं सोचने पर विवश हो गया कि अब मोना का इस संसार में है ही कौन? न जाने कितना कष्ट सह रही होगी। मैंने दराज से रुपयों की गड्डी निकाल अपनी जेब में रख ली, लेकिन मुझे इस बात का एहसास हो रहा था कि ये रुपये सही-सलामत वापस आ जाएंगे। शायद मेरे अस्पताल पहुंचने से पहले ही वह मौत के आगोश में समा न जाए। रास्ते में चलते हुए यही प्रश्न मेरे मन-मस्तिष्क में कौंध रहा था- "जीवन भर तो किसी का एहसान नहीं लिया। सदैव अकेली दुख झेलती रही, कभी उसे किसी से कुछ पाने की इच्छा न रही, तो अब अंतिम समय में किसी से क्या लेगी? जीवन भर दुखों को झेलने वाली मोना कभी सुख का मर्म समझ न पायी। मरते समय उसे कितना कष्ट होगा?"

यहि सोचकर मैं भागा-भागा अस्पताल पहुंचा। अस्पताल के गेट पर ही स्कूल की प्रिंसपल मिल गयी। मुझे देखते ही वह बोली- "आप कितने खुशनसीब हैं। वह आपकी ही प्रतीक्षा कर रही है। अन्यथा डॉक्टर का मानना है कि वह कब की इस दुनिया से विदा हो गयी होती।"

मैं शीघ्र ही उसके बेड के पास गया। वह अपनी आंखें मूंदे थी। मेरे आने की आहट से वह धीरे-धीरे अपनी पलकें खोलने लगी। उसी मुस्कुराहट से मेरा अभिवादन किया। मेरा हाथ अनायास उसके माथे पर चला गया। मैं झुका और उसके बालों पर हाथ फेरने लगा। उसकी आंखों में आंसुओं के समंदर उमड़-घुमड़ रहे थे। उसने मेरे हाथों को चूम लिया। उसकी आंखों से आंसुओं की मोटी-मोटी धार बह निकली।

अब उसका इस संसार से विदा होने का समय आ गया था। यह देखकर मेरा धैर्य जवाब दे दिया। मैं फफककर रोने लगा। मैं पागलों की तरह आंसू बहाये जा रहा था। तभी उसने टूटती सांसों के बीच पानी मांगी। पानी के दो घूंट पीते ही उसके प्राण पखेरू उड़ गये। मैं विक्षिप्त सा उसे झकझोरने

लगा, लेकिन वह तो सदा-सदा के लिए इस संसार से विदा हो गयी थी। अपने जीवन के कष्टों से मुक्ति उसने पा ली थी। झंझावतों से जूझने वाली वह लड़की सदा-सदा के लिए सो गयी थी।

अस्पताल से उसकी लाश को विद्यालय लाया गया, जहां स्कूल की प्रिंसपल और बच्चियां अपनी दीदी को रो-रोकर विदा कर रही थी। रोती-बिलखती बच्चियां मोना के शव पर फूल-मालाओं से श्रद्धा-सुमन अर्पित कर रही थी।

उसके शरीर के पंचतत्व में विलीन होते ही उसकी अस्थियों के अवशेष को मैंने अपने मस्तक से लगा लिया। उसकी अस्थियों के अवशेष को गंगा में प्रवाहित करते हुए मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह निकली। मैं यह सोचने पर विवश हो गया कि मेरी मुंह बोली बहन, जो सदा दुखों को झेलती रही; अब हमेशा-हमेशा के लिए मुझसे दूर, बहुत दूर चली गयी है, जहां से वह कभी लौटकर नहीं आ सकती। अब शेष बची थी, तो उसकी स्मृतियां। उसकी अस्थियां गंगा की तेज धारा में बहती दूर चली जा रही थी और मैं उसे देखता शून्य में खो गया था।

विनीता भवन, निकट- बैंक ऑफ इंडिया
काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक
बाढ़-803213 (बिहार)

गोवर्धन दास बिन्नाणी 'राजा बाबू'

सबका रखते ध्यान प्रभु श्रीरामजी

यदि आपकी सर्वशक्तिमान प्रभु के प्रति अटूट आस्था है और आप समर्पित हैं तो आप यह मान कर चलें कि आपको मनोवांछित फल वे अवश्यमेव प्रदान करेंगे। इस तरह की अनेक सत्य घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है। यह अलग बात है कि बीते सालों में कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों ने आम सनातनी को भ्रमित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जिसके परिणाम स्वरूप एक बड़ा भाग असमंजस में आ गया लेकिन अनेक ऐसे भी हैं जो अडिग रहे, सर्वशक्तिमान प्रभु पर अटूट भरोसा रखा तो उन्हें मनोवांछित लाभ भी मिला है। मैं स्वयं इसका साक्षी हूँ। आज तक, अभी तक मुझे सर्वशक्तिमान प्रभु सभी तरह की विपदाओं से अपने आप निजात दिलवा रहे हैं। इसी कड़ी में मैं परमश्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदासजी महाराज के एक कथन का उल्लेख करना चाहूँगा जिसमें उन्होंने बताया था कि 'वस्तु से, व्यक्ति से, परिस्थिति से, घटना से, अवस्था से, जो सुख चाहता है, आराम चाहता है, लाभ चाहता है, उसको पराधीन होना ही पड़ेगा, बच नहीं सकता, चाहे ब्रह्मा हो, इन्द्र हो, कोई भी हो। मैं तो यहाँ तक कहता हूँ कि भगवान् भी बच नहीं सकते। जो दूसरे से कुछ भी चाहता है, वह पराधीन होगा ही।' इसीलिए यही समझना है कि यदि हम सर्वशक्तिमान प्रभु पर भरोसा रख, सब कुछ उन पर छोड़ देंगे तो सारी व्यवस्था को उन्हें सम्भालना पड़ेगा।

अब जैसा ऊपर बताया, इतिहास में उपरोक्त वर्णित तथ्यों को साबित करती अनेक घटनाओं, जैसे- 'कैसे सन्त नामदेव जी की जिद के आगे प्रभु विट्ठल वाला वाकया हो या शबरी की श्रद्धा आगे प्रभु श्रीराम जी वाला वाकया या फिर भक्त नरसी वाला सुप्रसिद्ध नानीबाई का मायरा वाला वाकया', सभी इस बात की पुष्टि करते हैं कि प्रभु के प्रति समर्पित होकर सच्चे मन से याद करें तो वे हमारी व्यथा का समुचित निराकरण करेंगे ही। एक बात और यदि कोई समर्पित हो उनकी परीक्षा भी लेना चाहें तो प्रभु निराश भी नहीं करते और अन्यथा भी नहीं लेते।

आज परीक्षा वाले वाकये से जुड़ी, कर्मयोगी सन्त मलूकदास जी से सम्बन्धित एक ऐतिहासिक सच्ची घटना आप सभी के ध्यानार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ लेकिन इस घटना को जानने से पहले यह जान लें कि शुरू में संत मलूकदासजी नास्तिक थे। उनके जीवन में एक ऐसी अत्यंत रोचक घटना घटी, जिसने उनके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन ही नहीं कर दिया बल्कि उन्हें नास्तिक से आस्तिक बना दिया और उस घटना का उन पर इतना असर हुआ कि इन्होंने निम्न दोहा गढ़ा जो कालान्तर में इतना ज्यादा लोकप्रिय हो चुका है कि दूर दूर तक जिनका पढ़ाई लिखाई से नाता नहीं उन किसान-मजदूरों से भी यह आज आसानी से सुना जा सकता है-

'अजगर करे न चाकरी, पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गए, सबके दाता राम॥'

उपरोक्त दोहे के कारण हम सभी न केवल कर्मयोगी संत मलूकदासजी को याद करते हैं बल्कि यों मानिये की उनकी याद अपने आप आ ही जाती है। हालाँकि इस दोहे के साथ साथ उनकी अन्य रचनायें आज भी काफी प्रसिद्ध हैं और उन रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि इनकी परमात्मा के अस्तित्व में प्रबल आस्था थी। साथ ही साथ वे सतत नाम स्मरण को विशेष महत्त्व देते थे।

उपरोक्त दोहे का विश्लेषण भी अनेक साहित्यकारों ने समय समय पर अपने अपने हिसाब से किया है और सभी

के विचारों में अनेक विभिन्नतायें स्पष्ट परिलक्षित होती हैं। आइये, अब कर्मयोगी संत मलूकदासजी से संबंधित उस अत्यन्त रोचक घटना को जान लें जिसके चलते ही उन्होंने इस दोहे को गढ़ा।

कहा जाता है कि कर्मयोगी संत मलूकदासजी आस्तिक नहीं थे। लेकिन एक बार गाँव में होने वाली एक राम कथा में, गाँव की परिपाटी के अनुसार कम से कम एक दिन वाली उपस्थिति देने वह पहुँच गये और उस समय मंच से उपस्थित श्रोताओं को प्रभु श्रीरामजी की महिमा बताते हुए कहा गया कि **'प्रभु ही संसार में एक मात्र ऐसे दाता हैं जो भूखों को तो अन्न देते हैं और नंगों को वस्त्र एवं आश्रयहीनों को आश्रय भी।'** इतना सुन कर्मयोगी संत मलूकदासजी विचलित हो गए और बिना समय गंवाये उन्होंने मंच पर विराजमान महात्मा से क्षमा माँगते हुए अपनी बात रखते हुए कहा कि महात्मन! यदि मैं बिना कोई काम किए चुपचाप बैठकर प्रभु रामजी का नाम लूं, तब भी क्या प्रभु रामजी भोजन दे देंगे?'

मंच पर विराजमान महात्मा ने उन्हें आश्वस्त किया कि निःसंकोच देंगे।

उसके बाद उन्होंने पूछा कि यदि मैं घनघोर जंगल में एकदम अकेला बैठ जाऊं, तब भी?

वापस मंच पर विराजमान महात्मा ने दृढ़तापूर्वक उन्हें समझा दिया की **हर हालत में प्रभु रामजी भोजन देंगे, चाहे कैसे भी दें।**

इतना सुनने के बाद उन्होंने निश्चय किया कि प्रभु रामजी की सामर्थ्यता की परीक्षा ले लेनी चाहिये। यह सोच वह दूसरे दिन सवेरे सवेरे ही घनघोर जंगल के भीतर एक घने पेड़ के ऊपर चढ़ उन्होंने अपना डेरा जमा लिया। दिन ढला और सूर्य भगवान पश्चिम की पहाड़ियों के ओट में चले गये। इसके बाद धीरे धीरे वहाँ ऐसा अंधेरा छाया जिसके कारण जो थोड़ा बहुत दिखायी दे रहा था वह भी लुप्त हो गया। हाँ, जानवरों कि आवाज सुनायी दे रही थी। इस तरह भूखे-प्यासे सारी रात निकल गयी। सुबह होते ही फिर आशा जगी और दूसरे पहर सन्नाटे में अनेक घोड़ों की टापों की आवाजें जब उनके कानों में पड़ी तब सतर्क होकर सावधानी बरतते हुए वे बैठ गये। कुछ देर में ही उनकी तरफ ही कुछ राजकीय अधिकारी घोड़ों पर बैठे धीरे धीरे आ रहे थे। उन्होंने उस पेड़ की छाँव में घोड़ों से उतर, वहीं भोजन कर लेने की सोची। इसलिये ज्यों ही उनमें से एक अधिकारी ने थैले से भोजन का डिब्बा निकाल जमीन पर रखा, शेर की जबर्दस्त दहाड़ सुनाई पड़ी। जिसके चलते घोड़े बिदककर भाग गए। इस घटना से सारे अधिकारी स्तब्ध हो गये और बिना कोई आवाज किये एक दूसरे से आँखों के माध्यम से ही सलाह कर उन्होंने उस जगह को छोड़ना ही उचित समझा और वे वहाँ से भाग गये। इस पूरी घटना को कर्मयोगी संत मलूकदासजी पेड़ पर बैठे बैठे देख रहे थे। अब मलूकदासजी की आँखें शेर को खोज ही रहीं थीं तभी उन्होंने देखा शेर तो दहाड़ता हुआ दूसरी तरफ जा रहा है। अब वो आश्चर्यचकित हो नीचे पड़े भोजन को देखते हुये सोचने लगे कि प्रभु श्रीरामजी ने उनकी सुन ली है अन्यथा भोजन यहाँ कैसे पहुँचता? अब वो सोचने लगे इस भोजन को प्रभु मेरे मुँह में कैसे डालेंगे?

थोड़ी देर बाद जैसे ही तीसरा पहर शुरू हुआ फिर उन्होंने घोड़ों की टापों की आवाज सुनी और पाया की डाकुओं का एक बड़ा दल उस पेड़ की तरफ तेजी से चला आ रहा है। जैसे ही डाकुओं का दल पेड़ के पास पहुँचा तब वे लोग वहाँ रखे चांदी के बर्तनों में विभिन्न व्यंजनों के रूप में पड़े हुए भोजन को देख ठिठक गए। चूँकि वे भूखे तो थे ही, इसलिए डाकुओं के सरदार ने अपने साथियों से कहा- "देखो भगवान की लीला, हमें भूखा पा इस निर्जन वन में सुंदर डिब्बों में भोजन भेज दिया। इसलिये सबसे पहले प्रभु के भेजे इस प्रसाद को खाकर फिर आगे बढ़ेंगे।" तभी एक शक्की स्वभाव वाले साथी ने सरदार को आगाह करते हुये निवेदन किया कि इस सुनसान जंगल में इतने सजे-धजे तरीके से सुंदर बर्तनों में भोजन का मिलना मुझे सोचने पर मजबूर करता है कि भोजन को जाँच लेना चाहिये यानि कहीं इसमें विष तो मिला हुआ नहीं है। तभी एक अन्य साथी ने कहा, "यदि यह बात है तब तो भोजन लाने वाला आसपास ही कहीं छिपा होगा।" यह सब सुन सरदार ने सभी को सब तरफ तलाश करने को कहा। तलाशी अभियान के दौरान एक डाकू की नजर पेड़ पर शान्त बैठे मलूकदासजी पर पड़ी और उसने तुरन्त सरदार

को सूचना दे दी। सरदार ने सिर उठाकर उन्हें देखा तो उसकी आँखों में खून उतर आया। उसने कड़कती आवाज में उनसे कहा- "दुष्ट! भोजन में विष मिलाकर तू ऊपर जा कर बैठ गया है। चल तुरन्त ही नीचे उतर।"

सरदार की कड़कती आवाज सुनते ही मलूकदासजी डर तो अवश्य गये फिर भी उतरे नहीं बल्कि पेड़ पर बैठे बैठे धैर्य के साथ बोले, "व्यर्थ दोष क्यों मढ़ते हो? विश्वास करो। भोजन में विष नहीं है।" इतना सुनते ही सरदार ने आदेश दिया- "पहले तीन-चार साथी पेड़ पर चढ़ इसके मुँह में भोजन ठूँसो। तभी झूठ-सच का पता चल पायेगा।" इसके बाद तुरन्त तीन-चार डाकू भोजन का डिब्बा उठा पेड़ पर चढ़ गये और अपने हथियारों के जोर से मलूकदासजी को खाने के लिए विवश कर दिया यानि एक कौर उनके मुँह में ठूँस दिया। मलूकदासजी को भूख तो लगी हुयी थी इसलिये आराम से भोजन करने के बाद ही वे पेड़ से नीचे उतरे और सभी डाकुओं को सारी बात सही सही बयाँ कर दी। डाकुओं ने उनकी बात ध्यानपूर्वक सुनने के बाद आपसी सलाह कर उन्हें छोड़ दिया।

इस तरह उन्होंने सर्वशक्तिमान प्रभु की माया का अनुभव कर सोचा कि मंच पर विराजमान महात्मा ने एकदम ठीक ही कहा था कि **'हर हालत में प्रभु रामजी भोजन देंगे, चाहे कैसे भी दें'** क्योंकि उन्हें बलात भोजन कराया गया, भूखा मरने के लिये नहीं छोड़ा गया। इस घटना से उनके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन हो गया और वे सर्वशक्तिमान ईश्वर के पक्के भक्त बन गये। गाँव पहुँचने के बाद सभी को उन्होंने पूरी घटना से अवगत कराया ही, साथ ही साथ उसी समय उपरोक्त दोहा भी गढ़ सबको सुना दिया।

उपरोक्त घटना से एक बात तो स्पष्ट हो रही है कि शुद्ध कर्म, वचन व मन से यदि हम सबके साथ व्यवहार करते हैं तो सर्वशक्तिमान प्रभु निश्चित ही हमारे साथ सबसे ज्यादा प्रेमपूर्ण भाव रखते हुये सब कष्टों से उबार लेंगे। कुल मिलाकर हमें अपने मन में कभी भी किसी का अहित करने की मंशा नहीं रखनी है। यदि ऐसा हम कर पाते हैं तो हम भी मलूकदास जी की तरह प्रभु की परीक्षा ले सकते हैं और प्रभु भी इसका बुरा नहीं मानेंगे बल्कि वे सत्कर्मों का सम्मान करते हुये स्वयं परीक्षा देने अवश्य उपस्थित होंगे क्योंकि वे छोटे-बड़े की भावना ही नहीं रखते हैं।

पढ़ने में आया है कि औरंगजेब जैसा पशुवत मनुष्य भी उनको बहुत मानता था, सम्मान देता था, क्योंकि मलूकदासजी ने स्वाध्याय, सत्संग व भ्रमण से व्यावहारिक ज्ञान अर्जित किया। उनके उपदेश हृदय में समा जाते थे। यही कारण है कि उपरोक्त दोहे के साथ साथ उनकी अन्य रचनायें आज भी प्रसिद्ध हैं।

सर्वशक्तिमान प्रभु की कृपा होगी तो आगे आने वाले हर अंक में इसी तरह एक एक कर सन्त नामदेव जी की जिद के आगे प्रभु विट्ठल वाला वाकया, शबरी की श्रद्धा आगे प्रभु श्रीराम जी वाला वाकया, भक्त नरसी वाला सुप्रसिद्ध नानीबाई का मायरा वाला वाकया भी आप सभी प्रबुद्ध पाठकों के ध्यानार्थ प्रस्तुत करूँगा।

कोशलेन्द्र कुमार त्रिपाठी 'राजा बाबू'
बीकानेर / मुम्बई

क्या आप 'आसरा मुक्तांगन' के परिवार में शामिल होना चाहते हैं?

'आसरा मुक्तांगन' की सदस्यता स्वीकार कर आप इस परिवार के सदस्य बन सकते हैं। भारत और नेपाल हेतु सदस्यता दरें-

एक प्रति:	30/-	वार्षिक सदस्यता:	350/-
त्रैवार्षिक सदस्यता:	1000/-	आजीवन सदस्यता:	6000/-

मानद संरक्षण: 1,00,000/-

(डाक/कूरियर 'आसरा मुक्तांगन' द्वारा वहन किया जाएगा)
(चेक ड्राफ्ट 'आसरा मुक्तांगन' के नाम से ही देय होंगे)
बैंक का नाम- Bank of India (Mumbai)
A/c No.: 030120110000055
IFSC: BKID0000301

'आसरा मुक्तांगन'

पोस्ट बैग नं.-1, कलवा ठाणे-400605 (महाराष्ट्र)
Email : aasaramuktangan@gmail.com
Mobile : 8108400605/9029784346

संजय भारद्वाज

या घट अंतर बाग-बगीचे

चरन्मार्गान्विजानाति (महाभारत, आदिपर्व 133-23)

पथिक को मार्ग का ज्ञान स्वतः हो जाता है।

जीवन यात्रा है, सनातन यात्रा। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है। सूर्य-चंद्र यात्रा कर रहे हैं। सौरमंडल में हर ग्रह अपनी-अपनी यात्रा पर है। सार में कहें तो चराचर यात्रा पर है। इस लघु लेख में हम चर सृष्टि के एक जीव मनुष्य की एक स्थान विशेष की यात्रा और उसके पर्यटन पर चर्चा करेंगे।

प्राचीन काल से ही मनुष्य पर्यटन प्रेमी रहा है। नया देखने, नया जानने की इच्छा, कौतूहल, जिज्ञासा उसके स्वाभाविक गुण हैं। किसी बच्चे की आँखों में देखिए कि कैसे जगत को टुकुर-टुकुर निहारता है। उसके संज्ञान में आई हर वस्तु को जिज्ञासा से देखता है। मनुष्य का यही कौतूहल और जिज्ञासा उसे आगे पर्यटन के लिए आकर्षित करते हैं। बुद्धि तत्व की प्रधानता इस आकर्षण को प्रबल करती है।

वस्तुतः मनुष्य शाश्वत पथिक है। एक जीवन में सारी जिज्ञासाओं का शमन नहीं हो सकता। फलतः वह लौट-लौट कर आता है। 84 लाख योनियों में जगत का भ्रमण करता है, पर्यटन करता है।

यात्रा पर्यटन नहीं है पर यात्रा का पर्यटन से गहरा संबंध है। पर्यटन के लिए यात्रा अनिवार्य है। पर्यटन निर्धारित स्थान की सायास घुमक्कड़ी है। तथापि हर यात्रा अपने आप में अनायास पर्यटन है।

पर्यटन शब्द का संधि विच्छेद परि + अटन है। 'परि' का अर्थ चारों ओर तथा 'अटन' का अर्थ भ्रमण है।

भ्रमण में मनुष्य की यह रुचि उसे कभी विश्व के सबसे ऊँचे तो कभी सबसे गहरे पर्यटन स्थल पर ले जाती है। लेकिन जाना कहीं भी हो, पर्यटन महँगा सौदा है। यात्रा से आरंभ कर गंतव्य पर कुछ दिन ठहरना, भ्रमण करना आदि हरेक की जेब को अच्छा-खासा हल्का कर देते हैं।

हम आपको एक ऐसे स्थान के पर्यटन पर ले जाना चाहते हैं जो विश्व में सबसे ऊँचाई पर स्थित है तो सबसे गहरा भी वही है। वहाँ जाने के लिए किसी प्रकार की भौतिक यात्रा नहीं करनी पड़ती। कोई टिकट नहीं खरीदना पड़ता। किसी वीसा या पासपोर्ट की भी आवश्यकता नहीं है। न कोई होटल बुक करनी है, न अन्य किसी सुविधा के लिए भुगतान करना है। यह यात्रा बाह्य जगत की नहीं अंतर्जगत की है।

स्कंदपुराण के काशीखण्ड में तीन प्रकार के तीर्थों का उल्लेख मिलता है- जंगम तीर्थ, स्थावर तीर्थ और मानस तीर्थ।

हम मानस तीर्थ की यात्रा पर चर्चा करेंगे। दुनिया का भ्रमण कर चुके पर्यटक भी इस अनन्य पर्यटन से वंचित रह जाते हैं। सच तो यह है कि हममें से अधिकांश इस पर्यटन स्थल तक कभी पहुँचे ही नहीं।

एक दृष्टांत द्वारा इसे स्पष्ट करता हूँ। एक भिक्षुक था। भिक्षुक बिरादरी में भी पोर भिक्षुक। जीवन भर आधा पेट रहा। एक कच्ची झोपड़ी में पड़ा रहता। एक दिन आधा पेट मर गया। बाद में उस स्थान पर किसी इमारत का काम आरंभ हुआ। झोपड़ी वाले हिस्से की खुदाई हुई तो वहाँ बेशकीमती खजाना निकला। जिस खजाने की खोज में वह जीवन भर रहा, वह तो ठीक उसके नीचे ही गड़ा था। हम सब की स्थिति भी यही है। हम सब एक अद्भुत कोष भीतर लिए जन्मे हैं लेकिन उसे बाहर खोज रहे हैं।

भीतर के इस मानसतीर्थ का संदर्भ महाभारत के अनुशासन पर्व में मिलता है। दान-धर्म की चर्चा करते हुए अध्याय 108 में युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से सब तीर्थों में

श्रेष्ठ तीर्थ की जानकारी चाही है। अपने उत्तर में मानस तीर्थ का वर्णन करते हुए पितामह कहते हैं, "जिसमें धैर्यरूप कुण्ड और सत्यरूप जल भरा हुआ है तथा जो अगाध, निर्मल एवं अत्यन्त शुद्ध है, उस मानस तीर्थ में सदा परमात्मा का आश्रय लेकर स्नान करना चाहिए। कामना और याचना का अभाव, सरलता, सत्य, मृदु भाव, अहिंसा, प्राणियों के प्रति कृपा का अभाव- दया, इन्द्रियसंयम और मनोनिग्रह- ये ही इस मानस तीर्थ के सेवन से प्राप्त होने वाली पवित्रता के लक्षण हैं। जो ममता, अहंकार, राग-द्वेषादि द्वन्द्व और परिग्रह से रहित हैं, वे विशुद्ध अन्तःकरण वाले साधु पुरुष तीर्थस्वरूप हैं, किंतु जिसकी बुद्धि में अहंकार का नाम भी नहीं है, वह तत्त्वज्ञानी पुरुष श्रेष्ठ तीर्थ कहलाता है।"

भारत के संदर्भ में अधिकांश पर्यटन स्थल तीर्थ हो जाते हैं। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा था, "To other countries I may go as a tourist, but to India I come as a pilgrim."

वास्तव में स्थूल शरीर के माध्यम से यात्रा करते हुए हम स्वयं को शरीर भर मान बैठते हैं। जबकि सच यह है कि हम शरीर नहीं अपितु शरीर में हैं। इस सत्य को भूलकर हम भीतर से बाहर की यात्रा में जुट जाते हैं जबकि अभीष्ट बाहर से भीतर की यात्रा होती है, अपने प्रकाशलोक में अपने दिव्य पुंज का दर्शन होता है।

अपनी लौ से अपरिचित ऐसा ही एक प्रकाश, संत के पास गया और प्रकाशप्राप्ति का मार्ग जानना चाहा। संत ने उसे पास के तालाब में रहनेवाली एक मछली के पास भेज दिया। मछली ने कहा, "अभी सोकर उठी हूँ, प्यास लगी है। कहीं से थोड़ा जल लाकर पिला दो तो शांति से तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकूँगी।"

प्रकाश हतप्रभ रह गया। बोला, "जल में रहकर भी जल को खोजें?"

मछली ने कहा, "यही तुम्हारी जिज्ञासा का समाधान है। खोज सके तो खोजो।"

इस खोज पर जो निकला, वह मालामाल हो गया। सारी सृष्टि के बाग-बगीचे भी फीके हैं इस भीतरी पर्यटन के आगे। संत कबीर लिखते हैं,

या घट अंतर बाग-बगीचे, या ही में सिरजनहारा।
या घट अंतर सात समुंदर, या हों में नौ लख तारा।
या घट अंतर पारस मोती, या ही में परखनहारा।
या घट अंतर अनहद गरजै, या हों में उठत फुहारा।
कहत कबीर सुनो भई साधो, या हो में साँई हमारा।

भीतर का पर्यटन सायास और अनायास दोनों होते है। इस पर्यटन में सतत अनुसंधान भी है।

यह एक ऐसा पर्यटनलोक है, जिसके एक खंड की रजिस्ट्री हर मनुष्य के नाम है। हरेक के पास स्वतंत्र हिस्सा है। ऐसा पर्यटनलोक जो सबके लिए सुलभ है, निःशुल्क है, बारहमासी है, 24/7 है।

जितनी यात्रा भीतर होगी वह जगत को देखने की दृष्टि बदलती चली जाएगी। लगेगा कि अनंत ही आनंद बरस रहा है। रसपान है, छमाछम वर्षा हो रही है, भीग रहे हो, सब कुछ नेत्रसुखद, सारे भारों से मुक्त होकर नृत्य करने लगोगे। पर्यटन से अभिप्रेत परमानंद यही है।

आइए अपने भीतर का भ्रमण करें, पर्यटक बनकर अपने ही भीतर छिपे अनगिनत आयामों को जानें।

चरैवेति, चरैवेति...!

writersanjay@gmail.com

ऐसा काम किये जा बन्दे...

दाता से जो जुड़ा हुआ है कर्म बुरा न करता है।
नेकी और भलाई वाले रस्ते पर पग धरता है।

सत्य प्रभु से जुड़ने वाला सत्यता अपनायेगा।
कभी नहीं वो भूलकर भी संग झूठ के जायेगा।

निरंकार को याद है रखना इसको न बिसराना है।
तूने झूठे अहंकार को मन में नहीं बसाना है।

ऐसा काम किये जा बन्दे जो सबको सुखदाई हो।
कहे 'हरदेव' ऐसा मत कर जो आगे दुखदाई हो।

आभा दवे

नन्हे दीपक

नन्हे-नन्हे दीपक है बच्चे सारे
घर के आँगन के हैं ये उजियारे
चहका करते हैं ये गम से अनजान
माता-पिता के हैं ये सुंदर सहारे।

भोला बचपन इनका सबको लुभाता
तोतली भाषा का स्वर सबको भाता
गीली मिट्टी हैं, भरना है संस्कारों के रंग
भविष्य के हैं ये तो भाग्य विधाता।

ज्ञान की ज्योत इनमें सदा जलती रहे
अज्ञान की रेखा हरदम हाथ मलती रहे
छुपा हुआ है सूरज-चाँद का तेज अनोखा
सत्य की किरणें इनके संग-संग चलती रहे।

बी-7/103 साकेत कॉम्प्लेक्स
ठाणे पश्चिम, मुंबई

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

नवसंवत्सर

नवसंवत्सर मंगलमय हो।
जग भर में भारत की जय हो।

पूरे हों संकल्प सुपावन
जनगणमन उन्नत-निर्भय हो।

पंचतत्व को रखें सुरक्षित
ऊर्जा हरित विपुल संचय हो।

फूलें-फलें विटप, पशु-पक्षी
भू पर हरियाली अक्षय हो।

बढ़े ज्ञान-विज्ञान निरंतर
निज संस्कृति की मोहक लय हो।

रहे न कोई भूखा-नंगा
जन-जन से स्नेहिल परिचय हो।

संघर्षों से क्या घबराना
कितना ही प्रतिकूल समय हो।

पुष्पों-सी मुस्कान बिखेरें
जीवनकाल भले कतिपय हो।

117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022

केशव शरण

नाटक

एक लड़का पतंग उड़ा रहा है
कभी डोर खींच रहा है
कभी डोर ढील रहा है
एक के बाद एक काट रहा है पतंग
दूसरा लड़का- उसका साथ दे रहा है
डोर और परेती सँभालने में
तीसरी, लड़की है जो उनका उत्साह बढ़ा रही है
उन्हें निर्देश दे रही है
देखकर मुझे बहुत आनंद आ रहा है
और खयाल कि किस तरह नाटक भरता
अभाव में भाव का रंग है
कि न होते हुए भी डोर है,
परेती है और पतंग है

keshavsharan564@gmail.com

सोनल मंजू श्री ओमर

कमाल करते हैं

सुना है जो लोग कुछ नहीं करते वो कमाल करते हैं।
चुप रहने से बेहतर है कि चलो कुछ सवाल करते हैं॥

सत्ता हासिल होने पर भी सरकारें करती नहीं कुछ,
वही विपक्ष में जब तक रहते हैं तो बवाल करते हैं॥

राजनीतिक दलें मुफ्त की रेवड़ियाँ बाँट-बाँट कर,
महँगाई की मार से आम जनता का बुरा हाल करते हैं॥

सरकारें बड़े-बड़े काम तो बस कागजों पर करती हैं,
असलियत में तो वे साड़ी फाड़कर रुमाल करते हैं॥

जब तक उल्लू सीधा न हो आगे-पीछे चौड़ते रहेंगे,
खिला-पिला के फिर एक दिन बकरे को हलाल करते हैं॥

अत्यधिक चतुर जब लगाते है बहुत ज्यादा दिमाग,
अक्सर सोने देने वाली मुर्गी खोकर मलाल करते हैं॥

जो दशकों से भ्रम फैलाकर सबको गुमराह करते रहे,
अफसोस! लोग उन्हें अपना समझ इस्तकबाल करते हैं॥

ताउम्र सबकुछ लुटाकर कमाते रहे रिश्तों की पूंजी,
वही रिश्ते आस्तीन में खंजर लेके हमें कंगाल करते हैं॥

जो व्यक्ति ठोकर खाकर भी कोई सबक नहीं सीखते,
ऐसे लोग अपनी जिंदगी को पल-पल बदहाल करते हैं॥

जिंदगी के सफर में मिलते है सैकड़ों लोग 'सोनल'।
कुछ हमें गमगीन, और कुछ खुशहाल करते हैं॥

202 बी विंग, श्रीजी अपार्टमेंट
शांति नगर, एयरपोर्ट, गुजरात-360007

टीकेश्वर सिन्हा

मुझे अच्छा नहीं लगा

मैंने अपने निष्प्राण देह को
लिटायी जाने वाली जगह से अनुमति माँगी;
उसने कहा- 'मैंने कब मना किया है?'
मुझे अच्छा नहीं लगा।

चिता की लकड़ियों से मैंने पूछा- 'कोई ऐतराज?'
बोले- 'मैंने कभी ऐतराज किया है?'
मुझे अच्छा नहीं लगा।

आग की लपटों को
आँखियाया मैंने- 'ठीक से जलनी चाहिए मेरी काया?'
मुस्कुराए- 'निश्चिंत शांत।'
मुझे अच्छा नहीं लगा।

'गब्दीवाला', घोटिया-बालोद (छत्तीसगढ़)

राम विलास शास्त्री

कुर्बानी

इंसान को इंसानियत
मानव-सभ्यता की बेहतरी का जज्बा
निस्वार्थ मन को है भूला देता
भूख-प्यास
आँसुओं में डूबे परिजन
चाहे देश हो या परिवार
जान न्यौछावर करने वाला मन
दांव पर लगा देता है अपना तन।
भूख और गरीबी से लड़ते नौजवान ने
देशभक्ति की झोली फैलाई
कूद पड़ा जंग में।

पर,
इलाका डूब गया मातमी सन्नाटे में
जब, नौजवान का शव
विमान से लाया गया बहादुर सपूत को
सलाम करने के लिए
लोग अपने घरों से बाहर निकले
आँसुओं में डूबे परिजन
देशभक्ति और दिलेरी पर नाज था सबको।
पर,
कितने दिन और कब तक
उसके फटेहाल परिवार,
बीमार माँ और विधवा बीवी को
है इंतजार
सरकारी वायदों के
सच होने का
अपनी गरीबी के युद्ध में
औरों के साथ होने को कुर्बान।

बल्लबगढ़, फरीदाबाद (हरियाणा)

एकता के सूत्र में पिरोता- मानव एकता दिवस

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी संत निरंकारी मिशन की ओर से 24 अप्रैल को 'मानव एकता दिवस' का आयोजन किया जा रहा है। यह दिन युग प्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी के परोपकारी जीवन एवं उनकी लोक कल्याण की भावना को समर्पित है। 'मानव एकता दिवस' का मुख्य कार्यक्रम दिल्ली में सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता जी के पावन सान्निध्य में आयोजित किया जा रहा है जबकि मुंबई, नवीमुंबई, ठाणे, कल्याण, डोंबिवली, वसई-विरार आदि इलाकों में 50 से भी अधिक स्थानों पर इस उपलक्ष्य में विशेष सत्संग समारोहों का आयोजन किया जा रहा है।

इन कार्यक्रमों में स्थानीय श्रद्धालु भक्त सम्मिलित होकर बाबा गुरबचन सिंह जी एवं मिशन के अनन्य भक्त चाचा प्रताप सिंह जी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करेंगे और उनके महान जीवन से प्रेरणास्रोत प्राप्त करेंगे।

युग प्रवर्तक बाबा गुरबचन सिंह जी ने अपना संपूर्ण जीवन मानवता के कल्याणार्थ समर्पित किया; उन्होंने ब्रह्मज्ञान की दिव्य देन द्वारा मानव को मानव से जोड़कर प्रेम और मिठास की सदा बहने वाली निर्मल धारा को प्रवाहित कर हर हृदय में अपना स्थान बनाया। प्रत्येक भक्त के जीवन को वास्तविक रूप में एक व्यावहारिक दिशा प्रदान की, जिसके लिए मानवता उनकी सदैव ऋणी रहेगी। उनकी इन्हीं दिव्य शिक्षाओं को वर्तमान में सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज, सत्य के प्रकाश पुंज रूप में प्रवाहित कर रहे हैं, जिसकी रोशनी से हर मानव अपने जीवन का सकारात्मक रूप से कल्याण कर रहा है।

रक्तदान महादान- मानव सेवा का लक्ष्य महान

संत निरंकारी मण्डल के सचिव एवं समाज कल्याण

विभाग के प्रभारी आदरणीय श्री जोगिन्दर सुखीजा ने जानकारी देते हुए बताया कि सद्गुरु की असीम कृपा से हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न स्थानों पर संत निरंकारी मिशन की समाज कल्याण शाखा संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में व्यापक स्तर पर रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जायेगा, जिसमें मानवता की भलाई हेतु रक्तदान करते हुए रक्तदाता निःस्वार्थ सेवा का उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

इसी व्यापक रक्तदान अभियान के अंतर्गत संत निरंकारी सत्संग भवन, माहुलरोड, चेंबूर, मुंबई में एवं संत निरंकारी सत्संग भवन, मोठागांव, डोंबिवली में भव्य रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया है।

उल्लेखनीय है कि युगदृष्टा बाबा हरदेव सिंह द्वारा सन 1985 से आरंभ हुई रक्तदान की यह मुहिम, आज एक महाअभियान के रूप में अपने चरमोत्कर्ष पर है। इस रक्तदान अभियान के अंतर्गत अब तक 13,31,906 यूनिट रक्त मानव की भलाई हेतु दिया जा चुका है और ये सेवाएं निरंतर जारी है।

– श्री स. वि. सलकटे, नवी मुंबई

राहुल तिवारी जी के साथ साक्षात्कार

श्रीमद् रामायण, शिव शक्ति, महाभारत, चंद्रगुप्त मौर्य, बालकृष्ण, पोरस–माँ और मातृभूमि, पेशवा बाजीराव, महाराणा प्रताप, देवों आदि परशक्ति, सिकंदर, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर, त्रिपुरा सुंदरी, वंशज, राधा कृष्ण, चांद जलने लगा, रजिया सुल्तान, राम सिया के लव कुश और अन्य कितने ही विभिन्न ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों को समेट कर टीवी चैनलों पर अपना परचम लहराने वाली स्वस्तिक प्रोडक्शन यह संस्था भारतीय संस्कृति, परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों को अपने टीवी सीरियल्स के द्वारा पुनःस्थापित करने हेतु वचनबद्ध है। इस प्रोडक्शन हाउस ने वर्ष 2012 से इस क्षेत्र में अपना कदम रखा है और तब से अब तक सिर्फ 12 सालों के समय में इस कंपनी ने अनेक टीवी सीरियल्स एवं वेब सीरीज का निर्माण किया है और वे भी भारतीय संस्कृति, पुराण और इतिहास को जोड़कर। सिद्धार्थ तिवारी और राहुल तिवारी, इन दो भाईयों का यह प्रोडक्शन हाउस आज मनोरंजन जगत में अपनी एक अलग और सार्थक पहचान बनाकर बड़े ठोस रूप से खड़ा है। इस प्रोडक्शन हाउस के कार्यरत सिद्धार्थ तिवारी और उनका साथ देने वाले उनके भाई राहुल तिवारी इस जोड़ी में से राहुल तिवारी जी से 'आसरा मुक्तांगन' के फर्स्टन विशेषांक की अतिथि संपादक डॉ. सुलभा कोरे के साथ हुई बातचीत, हम आसरा मुक्तांगन के सुधी पाठकों के लिए यहां प्रस्तुत कर रहे हैं:

राहुल जी, नमस्कार! स्वस्तिक प्रोडक्शन अपने विभिन्न अर्थात् टीवी सीरियल्स, वेब सीरीज आदि को लेकर जाना जाता है। हम जानना चाहते हैं कि स्वास्तिक प्रोडक्शन की शुरुआत कब और कैसे हुई?

नमस्कार! वैसे इस काम की शुरुआत वर्ष 2007 में, मेरे भाई सिद्धार्थ तिवारी ने जब सोनी टीवी के साथ काम करना शुरु किया तब हुई। तब एक धारावाहिक की कल्पना उसके दिमाग में आ गई, जो सत्य घटना पर आधारित थी। जिसे सिद्धार्थ ने सोनी टीवी को सुनाया और फिर शुरुआत हुई 'अंबरधरा' इस सीरियल की। यह धारावाहिक ऐसी दो

लड़कियों की कहानी बयां करती है जो जन्म से एक दूसरे के साथ कूल्हों से जुड़ी हुई पैदा हुई थीं। यह कहानी उन दोनों की थी और फिर उस कहानी के साथ 'अंबरधरा' धारावाहिक की शुरुआत हुई। इस धारावाहिक को लोगों ने बेहद पसंद किया और इस धारावाहिक के साथ सिद्धार्थ की यात्रा शुरू हुई और हमारी गाड़ी चल पड़ी।

वैसे आप मूल रूप से कहां से हो और मुंबई में कब आना हुआ? अपने बचपन के बारे में कुछ बताइए।

वैसे हम कोलकाता से हैं। हमारे पूर्वज पता नहीं कब लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से कोलकाता गए थे। हम मध्य वर्ग के माहौल में पल बढ़ रहे थे। मेरे पिताजी वहां कोलकाता में सेंट जेवियर कॉलेज में अकाउंट्स एंड इन्कम टैक्स कॉस्टिंग के प्रोफेसर थे। एक प्रोफेसर के घर में जो माहौल होता है वही माहौल हमारे घर में भी था। हम चार भाई थे और पारिवारिक आवश्यकता कह सकते हैं या फिर नसीब की बात कहिए, हम घूमते-फिरते मुंबई आ गए। जिस तरह से 80-90 के दशक के बच्चे बड़े होते थे, उसी तरह और वैसे ही हम बड़े हुए। मोबाइल हमारे साथ नहीं था, लेकिन खेल-कूद का साथ हमेशा था। दोस्तों का साथ रहता था। हालांकि सिद्धार्थ पहले मुंबई में आए। वह सिंबोयसिस, पुणे में पढ़ रहा था। पढ़ाई के पश्चात् उसे मुंबई में एडवरटाइजिंग एजेंसी में नौकरी मिली और वहां से उसे मुंबई आना पड़ा। वहां से फिर वह सोनी टीवी में क्रिएटिव के रूप में काम करने लगा।

हालांकि हमारे घर में टीवी, अभिनय, जर्नलिज्म या फिर मास कम्युनिकेशन का कोई माहौल नहीं था और हम इतने इंटेलिजेंट भी नहीं थे की साइंस खाइंस या अन्य किसी क्षेत्र में कुछ करें लेकिन यार-दोस्तों के साथ कैरियर को लेकर चर्चा चलती थी और फिर वहीं से ये सब चीजें हमारे पास आ गई थीं। मैंने बेंगलुरु में बैचलर आफ बिजनेस मैनेजमेंट किया था और मैं ऑस्ट्रेलिया में मास्टर आफ बिजनेस सिस्टम करने के लिए गया था। वहां पढ़ाई के साथ नौकरी व्यवसाय भी कर रहा था। ऑस्ट्रेलिया जाने से पूर्व वर्ष 2002 में मेरी शादी हुई थी, बेटा भी हुआ था और हमारी यानी मेरी पत्नी और मेरी यह प्लानिंग थी कि बेटा स्कूल जाने से पूर्व मैं मुझे भारत आना है। अतः वर्ष 1999 में ऑस्ट्रेलिया जाकर वहां से अपना पोस्ट ग्रेजुएशन करके मैं वापस आ गया और वर्ष 2000 में, मैं मुंबई आया। हालांकि उसके पहले भी यानी वर्ष 2007 में सिद्धार्थ ने इस यात्रा की शुरुआत की थी। 'अंबरधरा' आया था और उसके बाद 'माता की चौकी' भी 'सहारा' पर शुरू हुआ था फिर हमने साथ मिलकर प्रोडक्शन हाउस शुरू किया जिसका नाम रखा, स्वास्तिक प्रोडक्शन।

आपने आसानी से यह सब कह दिया लेकिन फिल्म हो, सीरीज या सीरियल, इतना आसान नहीं होता। वित्त का मामला होता है। निर्माताओं के नखरें होते हैं या फिर वे उतनी तवज्जो नहीं देते, ऐसे में यह सब इतनी आसानी से कैसे हुआ?

सच कह रही है आप। वैसे यह इतना आसान नहीं था। लेकिन हमने शुरुआत की थी, निभाना था। जब यह मौका मिला तब हम अनेक निर्माताओं के पास गये, मदद के लिए लेकिन बात नहीं बन पाई। लेकिन सोनी टीवी ने हमारी यात्रा को बहुत आसान किया। नये निर्माता के रूप में वे हमारे समर्थनकर्ता बन गए। उनका पेमेंट पैटर्न, समर्थन आदि अनेक बातें थीं, जो बहुत अच्छी थी। फिर और भी अच्छे लोग मिलें। इसके बावजूद सिद्धार्थ के कुछ अच्छे दोस्त भी थे, जिन्होंने आर्थिक सहायता की। और एक भला मानुष मिला जिसने हमारे साथ खड़ा होना मुनासिब समझा। उसने हमारी बहुत मदद की और मेरे ख्याल से वह हमारी यात्रा की एक बेहतरीन शुरुआत थी।

वैसे-वैसे देखा जाए तो यह क्षेत्र बहुत ही जोखिम भरा, वक्त हरदम बदलने वाला होता है। हालांकि आपकी शादी हुई थी, इसलिए ठीक है। अन्यथा लड़की देने से पहले भी लोग दस बार सोचते हैं। ऐसे में आपके पास निराशा भरे ऐसे कोई क्षण नहीं आए?

हालांकि आज जब मैं उस समय के बारे में बहुत गहराई से सोचता हूं तो ज्ञात होता है कि वह बहुत हिलने वाला, जोखिम भरा समय था लेकिन यदि आपकी किस्मत हो आपको इस क्षेत्र में बुलाती है तो हर चीज आसान हो जाती है। फिर अच्छे लोग मिलते गए, कारवां बढ़ता गया। मेरे ख्याल से हमारे पापा बहुत धार्मिक थे और उनका काम और उनका आशीर्वाद हमारे साथ हरदम रहा। जब हम बुरे वक्त से गुजर रहे थे तब उनका आशीर्वाद ही हमारे सभी कामों को आसान करता गया। जब भी तकलीफ, समस्या आई तब कोई ना कोई

आया और उसने हमारी मदद की। शायद पिता की अच्छाई हरदम हमारे साथ रही और साथ में बजरंगी की कृपा। 'अंबरधारा' के बाद फिर हमारे दूसरे शो के लिए हमें अग्रिम रकम भी मिली। वह शो लॉन्च तो हुआ लेकिन हिट नहीं हुआ लाखों की बात थी। लग रहा था कि यह व्यवसाय भरोसे वाला नहीं है लेकिन 2009 में हमारा तीसरा शो 'अगले जन्म' आ गया। बीच बीच में रुकावटें भी आयीं और इसके बाद स्टार प्लस पर हमारा सबसे बेहतरीन और सफल शो 'महाभारत' आ गया और फिर हमारी यात्रा धड़ल्ले से चलने लगी। हालांकि इससे पहले हमने कभी ऐतिहासिक, पौराणिक शो बनाया नहीं था। हमें लग रहा था कि अब 'महाभारत' बनाने के लिए हमें बुलाया गया है, तीन-चार महीनों में इस शो को बनाकर हम इस शो को बंद कर देंगे। हम इस शो के प्रति उतने गंभीर भी नहीं थे लेकिन सोनी पर यह शो चार सालों तक चला और ईश्वर ने इस शो के जरिए हमारी पूरी यात्रा को एक नया आयाम दिया। हमारे लिए यह सबसे ज्यादा सीख देने वाली बात थी। इस शो की सफलता का श्रेय मैं ज्यादातर हमारे साथियों को देना चाहूंगा, जिसमें उदय शंकर सर हैं... यदि वह नहीं होते तो यह शो भी नहीं होता। फिर विवेक बैनर्जी हैं, गौरव बैनर्जी हैं, यामिनी जी हैं। हालांकि अभी मैं सोचता हूं तो पता नहीं चलता कि यह शो कैसे, किस तरह से बना लेकिन यह शो बना। किसने, कैसे, कहां तक सहायता की, ये सब बातें चमत्कार जैसी लगती हैं। लेकिन इस शो को लेकर इसलिए ज्यादा खुशी होती है कि लोगों ने इसे बेहद पसंद किया।

आपके सीरियल की सूची जब मैं देखती हूं तो पाती हूं कि आपने अधिकतर धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक सीरियल्स बनाए हैं। 'महाभारत', 'रामायण' बहुत पहले आई थीं, बहुत हिट थीं ऐसे में फिर से महाभारत बनाने का यह आइडिया कैसे आया?

आप सही कह रही हैं। हमने अधिकतर धार्मिक, पौराणिक और ऐतिहासिक सीरियल्स ही बनाए हैं। 'महाभारत' की उस सफलता ने हमारा हौसला बढ़ाया। हमने देखा, धार्मिक-पौराणिक और ऐतिहासिक बातों को लेकर मार्केट में एक खाली जगह है, जो दर्शकों को अभी तक मिली नहीं है और उस खाली जगह को अब तक भरा भी नहीं गया है। रामायण, महाभारत तो पहले भी आई थीं, लोगों ने उसे बहुत ज्यादा पसंद भी किया था लेकिन उनके आने के बाद काफी समय बीत गया था। नई पीढ़ी यानी आज की पीढ़ी ने उसे देखा नहीं है, फिर तकनीक में भी काफी कुछ परिवर्तन आए हैं, नई बातें आई हैं, वीएफएक्स तकनीक आई है। नयी तकनीक के साथ जब हमने 'महाभारत' को और बेहतरीन तरीके से दिखाया तब सही मायने में स्वास्तिक की यात्रा की शुरुआत हो गई और उसके बाद यह सिलसिला जारी रहा। हमने अच्छे ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक विषयों को चुनने का साहस किया और फिर अच्छे-अच्छे विषयों पर सीरियल्स बनाए। और सबसे बेहतरीन बात यह थी कि दर्शकों ने उन्हें बेहद पसंद किया।

हालांकि ऐतिहासिक, पौराणिक या धार्मिक सीरियल्स को लेकर काफी कुछ जोखिम भी होती है, अनुसंधान की भी बात होती है। आप कुछ गलत दिखाएं तो उसके परिणाम बड़े भयंकर होते हैं आप झूठ नहीं दिखा सकते और आपको पूरी तरह से अध्ययन करके इन सब चीजों को दिखाना पड़ता है। बहुत बड़ा काम है यह।

सही कहा आपने। यहां आप वास्तविकता से खिलवाड़ नहीं कर सकते। जो भी कुछ है, आपको सही दिखाना है और सही मायने में दिखाना होता है। और मैं सच कहूं तो इसका पूरा श्रेय सिद्धार्थ को जाता है, हमारे लेखकों, अनुसंधान कर्ताओं की टीम को जाता है। हम तो कहीं कुछ पढ़कर आते हैं, लेकिन लोग उस विषय पर डबल पीएचडी, एम फिल, अनुसंधान करके आते हैं और जब उनके साथ हम चर्चा करते हैं तो बात का सही मतलब हमारे सामने खुलता जाता है। बातों को किस तरह से स्क्रीन पर दिखाना है, यह बात भी हमारे सामने खुलती जाती है और फिर चीजें आसान हो जाती हैं। हमारे यहां लिखने के बड़े काम में सिद्धार्थ का योगदान बहुत बड़ा होता है। वह उसका पूरा कार्यान्वयन देखता है और बहुत से प्रतिभाशाली और शिक्षित लोग हमारे साथ जुड़े हुए हैं। इस मामले में हम बहुत ही नसीब वाले लोग हैं क्योंकि इन लोगों ने हमारा मार्गदर्शन किया और हमारी सहायता भी की। हम इन सब लोगों के शुक्रगुजार हैं।

स्वास्तिक प्रोडक्शन का वेब सीरीज, सीरियल्स और अब फिल्मों की दिशा में भी अपना काम चल रहा है। ये

तीनों चीजें बहुत ही अलग हैं, ऐसे में तीनों को एक साथ लेकर आप कैसे चलते हैं?

यह तो अवसर की बात है। इन तीनों चीजों दर्शक भी अलग–अलग होते हैं। टीवी सीरियल्स के जो ज्यादातर दर्शक हैं, वे घरेलू गृहिणियां हैं जो शाम को 8:00 बजे के बाद अपना काम निपटा कर इन सीरियलों के लिए समय देती हैं। जबकि घर में जो युवा पीढ़ी है, वह कहती है कि मैं इस समय क्यों बैठा रहूं? मैं कुछ अपना काम करूंगा और फिर जब समय मिलेगा तो डिजिटल पर जाकर वेब सीरीज/सीरियल्स देखूंगा। फिल्मों की बात करेंगे तो फिल्म के लिए स्टारडम की बहुत आवश्यकता होती है। यदि स्टार होगा तो वह दर्शकों को बांध के रखेगा। हम निर्माताओं को ऐसी टीमों का निर्माण करना पड़ेगा, जो लोगों की विभिन्न श्रेणियों के साथ बात करते हैं। दर्शकों की भावनाओं, आवश्यकताओं को समझते हैं। अभी देखा जाए तो मेरी 14 साल की बेटी कोरियन सीरीज देखती है या कोरियन गाने देखती-गाती है, तब मैं सोचता हूं कि उसमें ऐसा क्या होता है।

जो इस पीढ़ी को आकृष्ट करता है? मुझे जवाब मिलता है, आज की बात, तकनीकी हैंडलिंग, प्यार ट्रैंगल, वास्तविक लोकेशन आदि आदि। आज के बच्चे इन सब चीजों को नई तकनीक के साथ जोड़कर देखना चाहते हैं। ये वेब सीरीज उन्हें ये सब कुछ देता है और इसलिए ओटीटी प्लेटफॉर्म उन्हें ज्यादा पसंद हैं जो कि कम समय में छोटी फिल्में बनाता है और महत्वपूर्ण कंटेंट देता है। क्षेत्रीय स्तर पर भी फिल्में बनाओ, तो वहां भी स्टार की आवश्यकता होती है। हम सिर्फ एक बात ख्याल रखते हैं कि सही लोगों को ढूंढकर उन्हें अपने साथ जोड़ लो, उन्हें उनकी प्रतिभा के अनुसार उनके क्षेत्र का काम दो, उनकी प्रतिभा को सम्मान दो, सही व्यक्ति को सही जगह पर रखो और यही हमारी सफलता का मंत्र है।

राहुल जी, आजकल बायोपिक, डार्क कॉमेडी, मर्डर मिस्ट्री आदि का जमाना है। इसमें घोस्ट स्टोरी भी चलती है। लेकिन आप जो दे रहे हैं वह अलग, अतीत की बात है। आपको नहीं लगता कि आप पीछे जा रहे हैं?

सच कहूं, इतने बड़े देश में बहुत तरह के लोग हैं और उनकी दिलचस्पियां भी अलग–अलग होती हैं। हर एक बात के अलग–अलग दर्शक होते हैं। आपके पास यदि विषय वस्तु है, आप यदि सही कंटेंट दे रहे हो तो सबके लिए आपके पास दर्शक होते हैं। लोग पुरानी कथाओं, कहानियों को देखना चाहते हैं क्योंकि उन्हें उनके बारे में ज्यादातर जानकारी नहीं होती है। इसलिए अपनी संस्कृति से अवगत होने के लिए, उसे जानने के लिए ऐतिहासिक, पौराणिक और धार्मिक सीरियल्स लोग देखते हैं। सबकी दिलचस्पी अलग–अलग है लेकिन यदि करेक्ट और सही और सच्चा कंटेंट दे दो, तो उसके दर्शक होते हैं, जो आपके काम को देखते हैं और उसका समर्थन भी करते हैं। हालांकि वर्तमान में 10 सालों में पीढ़ी बदल रही है। हमारे बच्चों ने वह पुराना महाभारत नहीं देखा है, इसलिए उनके लिए यह नया महाभारत उन्हें अपना लगता है। आप सही और सच्ची कहानी बता दो, तो आपको हर जगह मार्केट मिलता है। 'हनुमान' ने लगभग 500 करोड़ कमाए जबकि 'एनिमल' ने 8000 करोड़ कमाए। अर्थात् लोग सब कुछ देखते हैं। 'पंचायत' की सादी ग्रामीण राजनीति भी देखते हैं। मैं भारत का, अपने देश का आभार

हूं। यहां हमने अनेक तरह से अपनी प्रस्तुतियां दी है और लोगों ने उन्हें पसंद किया है।

आपको क्या पसंद है इन तीनों में से?

मुझे पूछेंगे तो मुझे टेलीविजन ज्यादा पसंद है जो कि लंबे समय तक चलता है। यहां टेलीविजन का बहुत बड़ा मार्केट है। टेलीविजन के चार बड़े चैनल्स हैं और वे बड़े ही रहेंगे। अन्य चैनल्स आनेवाले दस सालों में रहेंगे या नहीं, कह नहीं सकते और अब पूरी दुनिया डिजिटल की ओर जा रही है और हम भी डिजिटल की ओर भी मुड़ रहे हैं। सैटेलाइट इसमें बहुत बड़ी भूमिका निभाएगा।

नयी तकनीक के बारे में क्या बताना चाहेंगे? क्या इस नयी तकनीक ने सब कुछ आसान तो नहीं बना दिया?

सही कहा आपने। वीएफएक्स ने चीजों को बहुत आसान बना दिया है। हम जब हनुमान द्वारा पर्वत उठाने की बात करते हैं तब पर्वत उठाकर कोई नहीं चल सकता। पुराने जमाने में इन सब बातों को दिखाने के लिए कोई स्पेशल इफेक्ट्स ना होने की वजह से इन फिल्मों को या फिर इन बातों को सही ढंग से या फिर असरदार तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया था। लेकिन आज कहानी बताने वालों के लिए यह बहुत आसान हो गया है। पुराने जमाने में जो बातें नहीं बनाई गई थी वे सभी चीजें आज इफेक्ट की वजह से आसानी से बनाई जा रही है और यह जो आभासी दुनिया हम वीएफएक्स से बनाते है, वह आपको किसी अलग दुनिया में ले जाती है।

आपने 'आभासी दुनिया' की बात की। क्या आपको नहीं लगता कि आभासी दुनिया को सही मानकर बच्चे उसका अनुसरण करते हैं? डिस्क्लेमर तो होते हैं लेकिन उसके बावजूद भी अपघात होते हैं। ट्रेन से चढ़ना, उतरना हो या इमारत से कूदना-फांदना हो, हमारा हीरो कुछ भी कर सकता है जबकि सही मायने में कोई बच्चा ऐसा यह कुछ करेगा तो उसे या तो अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा या अपनी जान गंवानी पड़ेगी।

आपने सही कहा। यह 'आभासी दुनिया' होती है लेकिन मेरे ख्याल से यह दुनिया बनाना, गलत नहीं है। जब कहानीकार द्वारा कोई कहानी बतायी जाती है तो वह कहीं ना कहीं घटी हुई होती है। आप इसका दूसरा पक्ष भी देखिए।।। यहां यह भी दिखाया जाता है कि इस तरह से नहीं करना चाहिए कि जिससे आप अस्पताल जा सकते हैं या फिर आपकी जान भी जा सकती है। एक तरह से यह सीख भी हो सकती है। देखिए, पक्ष बदलते रहते हैं। आपको जिस तरह से देखना है, आप उसे देख सकते हैं...सकारात्मक या नकारात्मक।

हमने देखा, बायोपिक, सेना, खेल, सच्ची घटनाओं पर फिल्में बनाई जा रही हैं, जो लोगों द्वारा बहुत अधिक पसंद भी की जा रही हैं। आपको नहीं लगता कि आपको भी ऐसा कुछ करना चाहिए?

सच कहा जाए तो हम पौराणिक और ऐतिहासिक बातों को पेश कर रहे हैं। लेकिन हमारी सेना को लेकर भी बहुत अच्छी बातें हैं जो हम पेश करना चाहते हैं। हम बायोपिक भी करना चाहते हैं और हमने वैसे कोशिश भी की और कर भी रहे हैं लेकिन बायोपिक करने में बहुत सारी समस्याएं भी आती हैं। सबसे ज्यादा समस्याएं जिस व्यक्ति पर आप यह फिल्म बना रहे हो, उस व्यक्ति के रिश्तेदारों द्वारा उन चीजों को उतने सही परिप्रेक्ष्य में नहीं लिया जाता। उन्हें लगता है कि यह पैसे कमाने के लिए आए हैं, इसलिए व्यक्तित्व के साथ खिलवाड़ करेंगे और उनका मानना पूरी तरह से गलत भी नहीं है क्योंकि काफी कुछ लोग ऐसा करते हैं। कलात्मक स्वतंत्रता को लेकर फिल्म में कुछ भी ठूंस देते हैं और फिर वह व्यक्तित्व एक मजाक बन जाता है। बायोपिक बनाते समय इन सब बातों का ख्याल रखना पड़ता है। और जिसे हम फिल्मों या कलात्मक स्वतंत्रता कहते हैं, वह फिल्म में दर्शकों की दिलचस्पी कायम रखने में बहुत अहम् भूमिका अदा करती है लेकिन वास्तव को तोड़ मरोड़कर यह स्वतंत्रता हम ले नहीं सकते। हम भी एक बायोपिक करने जा रहे हैं। वहां भी यह समस्या हमारे साथ आ रही है लेकिन हमारी कोशिश जारी है और जब उनके रिश्तेदार इन सब चीजों को मानेंगे तब हम जरूर उस बायोपिक को तैयार करेंगे और लोगों के सामने एक नया 'सच्चा नायक' प्रस्तुत करेंगे, जिसने अपनी जिंदगी बड़ी जोखिम के साथ जीकर लोगों को बहुत कुछ देने का प्रयास किया है।

राहुल जी, इस व्यवसाय से आप क्या पाना चाहते हैं? क्या आप समाज को कुछ देना चाहते हैं या फिर आप खुद एक सम्मान्य बनना चाहते हैं या फिर पैसा कमाना चाहते हैं?

पैसा कमाना तो उद्देश्य रहता ही है लेकिन वह मुख्य उद्देश्य नहीं है। पैसा बाय प्रोडक्ट है। परिवार, व्यवसाय चलाना है तो पैसे की आवश्यकता होती है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम कहां से आए हैं, हमारी समृद्ध परंपरा क्या है और हमारे मूल्य क्या है, इन सब चीजों को मेरी पीढ़ी या फिर आने वाली पीढ़ी के लोगों को बताना और उसके बाद की संतुष्टि को पाना, हमारा उद्देश्य है। मुख्य उद्देश्य यह है कि वर्ष 2000 में या उसके बाद जन्मी पीढ़ी के बच्चों के लिए हमें अपने मुख्य मूल्यों से संबंधित कुछ सत्य बताने हैं, सीखाने हैं। और इसी तरह से हम अपने समाज और लोगों का ऋण चुकाना चाहते हैं। सच कहता हूं, मेरे बच्चे जिस तरह से कोरियन कंटेंट देखते हैं, उस तरह से मेरे सीरियल्स भी देखते हैं और यदि मेरे बच्चे देखते हैं तो अन्य बच्चे भी इसे अवश्य देखते होंगे।

आप कोरियन, स्पैनिश कला संस्कृति की बात कर रहे हैं। बच्चे ये सब क्यों देखते हैं?

आज के बच्चे अधिकतर समय मोबाइल पर या गैजेट्स के साथ रहते हैं। वे इसी परिवेश में पले-बढ़े हैं जबकि हमारा परिवेश अलग था। हमें पहले हर बात याद रखनी पड़ती थी। आज मोबाइल के जरिए उन्हें हर चीज आसानी से मिलती है, दिखाई देती है। उनके सामने दुनिया खुली है। वे कहीं भी कुछ भी देख सकते हैं। लोगों के बारे में उनके मन में ज्यादा कुतूहल होता है। अपने लोगों के साथ वे दूसरे लोगों को भी देखते हैं और उन लोगों के साथ खुद को जोड़ना चाहते हैं। क्योंकि ये बच्चे विश्व संस्कृति में पले बढ़े हैं। नई दुनिया में पले-बढ़े हैं, उनके लिए ऐप चलाना और उनके जो कौतूहल हैं उन्हें संतुष्ट करना बहुत आसान बात है।

क्या आपको नहीं लगता कि ये बच्चे अपने दिमाग का बहुत कम इस्तेमाल करते हैं या फिर इस्तेमाल ही नहीं करते?

आज के बच्चे अपने दिमाग का बहुत कम इस्तेमाल करते हैं। पढ़ते हैं, लेकिन जिस तरह से पढ़ना चाहिए वैसा नहीं पढ़ते हैं। आज के बच्चे परीक्षा केंद्र पर कैलकुलेटर लेकर जा सकते हैं जबकि यह स्थिति हमारे समय या उसके पहले वाली पीढ़ी के साथ नहीं थी। हमारे लिए हर चीज को जोड़ना-तोड़ना सब कुछ करना पड़ता था। दिमाग का ज्यादा इस्तेमाल करना पड़ता था। यहां सिर्फ जांच होती है, जवाब

मिलना चाहिए। उनका यह कहना है कि जिस चीज में हमें दिमाग इस्तेमाल नहीं करना है, वहां हम दिमाग क्यों इस्तेमाल करें? जो चीज हमें आराम से मिल जाती है, हमें उसे उसीतरह से लेना चाहिए। गेजेट्स और तकनीक ने पिछले 20 सालों में गजब की क्रांति की है और पूरी दुनिया को बदल दिया है। ऐसे में, क्या सही है; क्या गलत है, यह समय ही बताएगा।

आपको लगता है आप सफल हैं?

मुझे नहीं लगता कि मैं सफल हूं। बहुत लंबा रास्ता तय करना है। लेकिन मुझे लगता है कि मुझे यह मौका मिला है, मुझे यह आशीर्वाद मिला है कि मैं इस क्षेत्र में काम करूं। मेरे पिताजी के अच्छे कर्म और आशीर्वाद ने मुझे इस जगह लाकर छोड़ा है और मैं सच कहता हूं कि मैं ज्यादातर पिताजी के साथ रहा और उनकी बातें, उनकी सीख आज भी मेरा मार्गदर्शन करती है। उनका एक ही कहना होता था कि संघर्ष है, तो करो। झिझकना मत। काम करो, बहुत परिश्रम करो, आपका समय कभी ना कभी आ ही जाएगा। हालांकि अब भी बहुत कुछ करना है लेकिन हम भी पिछले 10 सालों में काफी बदल गए हैं। पहले से ज्यादा अब थोड़ा सोचने लगे हैं।

यह सपनों की दुनिया है, ऐसे में आपका भी कोई सपना जरूर होगा?

बिल्कुल। मेरा भी एक सपना है, मेरी जो वीएफएक्स कंपनी है, जो विजुअल इफेक्ट्स देती है। वह बहुत बड़ी, पब्लिक लिस्टेड कंपनी हो जाए और भारत की नंबर वन वीएफएक्स कंपनी हो जाए। वैसे यह मेरा आज का सपना है। वैसे सपने बदलते रहते हैं लेकिन आज के दिन में यदि आप पूछेंगे तो मेरी यह कंपनी दुनिया में जानी पहचानी जाएं और भारत में नंबर वन की कंपनी बन जाए, यह मेरी मेरा सपना है।

राहुल जी, जो लोग इस क्षेत्र में आना चाहते हैं, उनके लिए आप कुछ कहेंगे?

मैं इतना तो बड़ा नहीं हूं कि मैं कुछ मार्गदर्शन दूं। लेकिन इस क्षेत्र में जो भी व्यक्ति आना चाहता है, हर एक को संघर्ष करना ही पड़ता है और सबसे महत्वपूर्ण बात होती है, परिश्रम करना। यदि आप परिश्रम नहीं करेंगे तो आपके पास कुछ भी नहीं आएगा। प्रतिभा के साथ परिश्रम यदि हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं तो सफलता निश्चित रूप से प्राप्त होती है और यदि आपके पास प्रतिभा नहीं है फिर भी आप परिश्रम करते हैं तो आप में हुनर आ ही जाता है और साथ में सफलता भी। प्रतिभा को निर्माण करना पड़ता है लेकिन हार्ड वर्क आपको स्वयं को करना पड़ता है। आपने देखा होगा जो अभिनेता पहली बार कैमरे के सामने आता है, बाद में जैसे-जैसे वह स्वयं को तैयार करता है उसमें निखार अवश्य आता है। तो मेरे ख्याल से हार्ड वर्क या कठोर परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, किसी भी क्षेत्र में। धन्यवाद।

धन्यवाद और शुभकामनाएं राहुल जी।

हैदराबाद में संपन्न हुआ वैश्विक अध्यात्मिकता महोत्सव

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा तीन दिवसीय अर्थात, दिनांक 14 से 17 मार्च 2024 तक चलने वाले विश्व अध्यात्मिक महोत्सव का उद्घाटन हैदराबाद शहर के बाहरी हिस्से में एक आश्रम में किया गया। इस महोत्सव में विश्व भर के 75000 प्रतिनिधियों तथा 300 से अधिक योग संगठनों ने हिस्सा लिया।

इस अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने कहा- भारतभूमि लोकतंत्र की जननी है, भारतभूमि अध्यात्म पथ की भी जननी है। अलग-अलग संतों के अनुयायी एक-दूसरे का सम्मान करें और परस्पर सहयोग करें। विश्व में शांति के लिए सहयोग आवश्यक है।

एक ही सत्य सर्वत्र व्याप्त है। यह चेतना ही अध्यात्मिक चेतना है। इस चेतना में किसी प्रकार के भेदभाव और विभाजन के लिए लेशमात्र भी स्थान नहीं है इसीलिए यह कहा जा सकता है कि अध्यात्मिक चेतना का यह महोत्सव पूरी मानवता की एकता का महोत्सव है।

भगवान महावीर, भगवान बुद्ध, जगद्गुरू शंकराचार्य, संत कबीर, संत रविदास और गुरू नानक से लेकर स्वामी विवेकानंद तक भारत के अध्यात्मिक विभूतियों ने विश्व समुदाय को अध्यात्मिक संजीवनी प्रदान की है। राजनीति में भी अध्यात्मिक मूल्यों को आधार बनाने के कारण ही राष्ट्रपिता महात्मा गांधी साबरमती के संत कहलाए हैं।

केंद्रीय पर्यटन मंत्री, श्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद अब विकसित देशों द्वारा भारत की आध्यात्मिक शक्ति को पहचाना जा रहा है। यही वजह है कि शांति और अध्यात्मिक अनुभव लेने की

चाह में भारत में आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या पर्याप्त रूप में बढ़ती जा रही है।

इस स्थिति का लाभ उठाने तथा वर्ष 2047 तक भारत को विश्व गुरू बनाने के उद्देश्य से संस्कृति मंत्रालय, श्री रामचंद्र मिशन के हार्टफुलनेस इंस्टीट्यूट तथा अन्य 300 अध्यात्मिक संगठनों के सहयोग से यह वैश्विक आध्यात्मिक महोत्सव का कान्हा शांति वनम में आयोजन किया गया।

श्री किशन रेड्डी जी ने कहा कि अनेक देशों के लोगों ने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भारतीय योग और ध्यान धारणा को स्वीकार किया है। योग की इस बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा एक ही मंच पर विभिन्न विश्वासों, मान्यताओं के अध्यात्मिक गुरुओं को आमंत्रित कर इस वैश्विक परिषद का आयोजन किया गया। उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड़ जी भी अपनी सहभागिता रहे। इस वैश्विक परिषद का आयोजन श्री रामचंद्र मिशन के कमलेश पटेल की अगुवाई में किया गया।

!!हरि ओम!!

वसुंधरा फाउंडेशन, ठाणे

(पंजीकरण संख्या-ई / 2824 / ठाणे / दिनांक 11/10/2002)

ब्रह्मविद्या श्वसन और विचार का अभ्यास है

शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने की कुंजी

- **ब्रह्मविद्या क्या है?**

'ब्रह्मविद्या' योग और दर्शन का एक प्राचीन विज्ञान है। सर्वोच्च परमात्मा को 'ब्रह्म' कहा जाता है। अर्थात् जिसे हम ईश्वर, परमेश्वर, भगवान कहते हैं, उसका ज्ञान 'ब्रह्मविद्या' के नाम से जाना जाता है। 'ब्रह्मविद्या' हमें सिखाती है कि हर इंसान भगवान का अंश है, यानी उसके भीतर दिव्यता छिपी हुई है और यही कारण है कि हर इंसान में सभी कठिनाइयों और समस्याओं पर काबू पाने की शक्ति होती है। 'ब्रह्मविद्या' इस दिव्यता, इस शक्ति को कैसे जागृत किया जाए इसकी निश्चित विधियाँ सिखाती है।

- **ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम में क्या पढ़ाया जाता है?**

ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम सही श्वसन और सही सोच पर जोर देता है। वैकल्पिक रूप से, यह सांस और विचार का अभ्यास है, जिस पर संपूर्ण मानव जीवन आधारित है। सांस और विचार के बिना, जीवन का विचार ही असंभव है। क्योंकि इन दोनों चीजों का इस्तेमाल हम जन्म से ही अनजाने में करते आ रहे हैं। लेकिन किसी ने हमें यह नहीं सिखाया कि इसका उपयोग कैसे किया जाए। कोई भी स्कूल सही साँस लेना और सही सोच नहीं सिखाता। हैरानी की बात यह है कि औसत व्यक्ति अपने फेफड़ों की क्षमता का केवल 10% ही उपयोग करता है। परिणामस्वरूप, परिवेशी वायु से थोड़ी मात्रा में श्वसन-वायु अंदर ली जाती है। फेफड़ों की क्षमता का कम उपयोग फेफड़ों की परत को मोटा करने का कारण बनता है। शरीर में प्राणवायु की आपूर्ति कम होने के कारण चलते समय साँस फूलना, सीढ़ियाँ चढ़ते समय साँस फूलना महसूस होता है। अम्लता, श्वसन रोग, रक्त शुद्धि न होना आदि अनेक रोगों के लोग शिकार होते हैं।

- **ब्रह्मविद्या सीखने के क्या फायदे हैं?**

उन अभ्यासकर्ताओं के अनुभव के आधार पर जिन्होंने इस अनुशासन को सीखा है और पिछले कुछ वर्षों में नियमित अभ्यास बनाए रखा है, और अपने स्वयं के शिक्षण अनुभव से, मैं निम्नलिखित लाभों के बारे में कह सकता हूँ।

1. ब्रह्मविद्या अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य की नींव रखती है।
2. इसमें सिखाए गए उचित साँस, प्राणायाम और ध्यान अभ्यास के माध्यम से कई लोगों ने अम्लता, जोड़ों के दर्द, उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), मधुमेह, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी और अवसाद जैसी कई बीमारियों पर काबू पाया है।

उपरोक्त फायदों को ध्यान में रखते हुए ब्रह्मविद्या पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने का निर्णय लें। आपका जीवन निश्चित रूप से एक नया आनंदमय मोड़ लेगा। आपका जीवन खुशियों से भर जाएगा। जो कोई भी साँस लेता है, पुरुष या महिला, कक्षा में शामिल हो सकता है।

प.पू. साठे गुरुजी उर्फ बालयोगी मुकुंद- संस्थापक वसुंधरा प्रतिष्ठान

हमारे सफल महाशिवरात्रि ध्यान सत्र में शामिल होने के लिए आपका आपकी उपस्थिति और भागीदारी ने सभी को अनुभव की गई शांत और उत्थानशील ऊर्जा में योगदान दिया। भगवान शिव की शांति और आशीर्वाद आपके भीतर गूंजते रहें, जिससे आपके आध्यात्मिक पथ पर शांति और ज्ञान आए।

RNI NO. MAHHIN/2012/45032

सृजन स्मरण

आज़ाद देश की नई परीक्षा हुई शुरू
कुरबानी का फिर नया ज़माना आया है,
फिर नई चुनौती वहशी हूणों की आई
फिर नये राष्ट्र ने भैरव राग गुँजाया है।

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(1915-2002)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक महानंदा एम. शिरकर द्वारा साई ऑफसेट, डी-39, अमरज्ञान इंडस्ट्रियल इस्टेट, एस.टी. डेपो के सामने खोपट, ठाणे (महाराष्ट्र) से मुद्रित एवं मंगल प्रभात, सूर्य नगर, विटावा, ठाणे-400605 से प्रकाशित
ईमेल- aasaramuktangan@gmail.com मोबाइल- 09029784346, 08108400605